सूचना.

इस राम वर्षा के द्वितीय भाग में भजनों के अतिरिक्त स्वामी राम तीर्थ जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित भी है जो उन के परम शिष्य श्रीमान स्वामी नारायण जी की अपनी लेखनी से निरूपण हुआ है, और जिस का मूल्य भी ०॥) है ॥ यह दोनों भाग निम्न लिखित पतों पर मिल सक्ते हैं:—

(१) नागजी नथू भाई प्लीडर व मालिक
गणात्रा यन्त्रालय, राजकोट
(काठियावार)

(२) गोविन्द जी डाया भाई लाखानी
वकील पोरबंदर
(काठियावार)

(३) लाला अमीर चंद साहिब
प्रेम धाम, बड़ा दरीबा
देहिली
(पंजाब)

विज्ञापन.

विदित हो कि स्वामी राम तीर्थ जी महाराज की अन्य पुस्तकें और उन के परम शिष्य स्वामी नारायण जी के अन्य संशोधित तथा रचित ग्रन्थ भी निम्न लिखित पते पर मिल सक्ते हैं:—

(१) अंग्रेज़ी भाषा में स्वामी राम तीर्थ जी के कुल उपदेश सहित संक्षिप्त जीवन चरितके ॥ पृष्ट १६०० के लगभग। तीन भागों (जिल्दों) में विभक्त ॥

मूल्य प्रति भाग विना जिल्द के १॥)	१—८—०
,, सहित जिल्द के २)	२—०—०

(२) श्री वेदानुवचन (उर्दू भाषा में) बावा नगीना सिंह जी कृत और स्वामी नारायण जी से संशोधित ॥ इस में उपनिषदो के गूढ़ रहस्य अति उत्तम तथा विचित्र रीति से स्पष्ट खोल कर वर्णित हैं

मूल्य विना जिल्द के १)........................	१—०—०
,, सहित ,, १॥)........................	१—८—०

(३) राम वर्षा उर्दू भाषा में भी छप रही है और स्वामी जी के कुल उपदेश अन्य भाषाओं में भी छपने वाले हैं। यह सब निम्न लिखित पते पर ही मिलेंगे ॥

अमीरचंद
प्रेम धाम, बड़ा दरीबा—देहिली

भुमिका.

अ त्मा के केवल परोऽक्ष ज्ञान से हृदय में शान्ति और निजानन्द की प्राप्ति नहीं होती बल्कि: उस के अपरोक्ष ज्ञान अर्थात आत्म साक्षात्कार से ही सर्व प्रकार के दुःख निवृत होते हैं॥ और यह आत्म साक्षात्कार केवल युक्ति अथवा शब्द ज्ञान पर बस करने से प्राप्त नहीं होता बल्कि: परोऽक्ष ज्ञान के लगातार श्रवण, मनन और निदिध्यासन का नतीजा होता है। इसीलिये पूर्व काल के ऋषी श्रुति द्वारा अपना अनुभव यूं प्रगट करते भये:—

" आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः" यानी आत्मा देखने अर्थात साक्षात्कार करने योग्य, सुनने योग्य, मनन करने काबल और निदिध्यासन कीये जाने लायक है, केवल युक्ति अथवा शब्द प्रमाण पर बस कीये जाने के योग्य नहीं॥ (बृ० ४, ५, ६).

इस आत्मज्ञान के मनन और निदिध्यासन का सुगम और सुलभ

तरीका सर्व जनों के लिये आत्म विचार के भजनों का नित्य सुनना और गाना है ॥ प्रथम तो भजन की मधुर ध्वनि ही पुरुष के चित्तको वाह्य वृत्तियों से हटा कर एक ओर अर्थात एकाग्र कर देती है, और द्वितीय अगर स्वर यानी राग के साथ भजन के अर्थ भी ख़ूब समझ कर स्मरण होते रहें तो चित्त वृत्ति आत्मध्यान में लीन अर्थात परमानन्द से युक्त हो जाती है ॥ विना भजन के अन्य तरीका अति सुगम या स्वतः आत्मध्यान में लीन करने व कराने का नज़र नहीं आता। बल्किः कहना पड़ता है कि पैहले महात्माओं को प्रायः इसी तरीके से शीघ्र आत्मानुभव हुवा है ॥ यही सबब है कि गीता, वेद, रामायण, ग्रन्थ साहिब, अन्य मस्त पुरुषों के उपदेश, यह सब के सब स्वरों, रागों अर्थात भजनों की सूरत में कहे, और लिखे गये हैं ॥

मस्त पुरुषों के उपदेशों और आत्मचिन्तन की पुस्तकों का स्वरों, गीतों, छंदों और मंत्रों में लिखे जाने का। दूसरा सबब यह भी है, कि कविता या मंत्र में बड़ा फैला हुवा ख्याल थोड़ी जगह घेरता है, मानो मंत्र द्वारा समुद्र एक कूजे में कैद हो जाता है। इसी सबब

से सरल इबारत की निसबत भजन अथवा कविता से वज्र वत चोट दिल पर लगती है ॥

चूंकि आत्म चिन्तन के भजनों, स्वरों भरे छंदों और रागों से चित्त की वृत्ति शीघ्र आत्म ध्यान में युक्त तथा लीन होजाती है, और भजनों का असर चित्त पर वज्र वत स्पष्ट है, इसलिये ऐसी (आत्म ज्ञान के भजनों की) पुस्तकों की ज़रूरत समझ कर प्रथम एक पुस्तक "राम वर्षा" के नाम से उर्दू भाषा में तरतीब दी गयी थी, जिस को श्री स्वामी राम तीर्थजी महराज की आज्ञा से राय बहादुर लाला बैज नाथ साहिब बी. ए. ऐफ. ए. यू वर्तमान पैनशनर जज ने सन् १९०२ में प्रकाशित कीया था। उस प्रति (जिल्द) में स्वामी राम तीर्थ जी के सर्व भजन जो सन् १९०२ तक उन के आनन्द-समुद्र दिल से मस्ती भरी लैहरों में उठे थे वह सब के सब दर्ज थे ॥ उन के अतिरिक्त अन्य मस्त पुरुषों के भजन भी जो स्वामी जी ने पसन्द कीये हुए थे उस जिल्द में छपे थे ॥ मगर वह पुस्तक उर्दु भाषा में छपने के कारण हिन्दी के पाठकों को कुछ लाभ नहीं

देती थी । इस लिये उन सब भजनों का हिन्दी में उल्था कीया गया, जिस से हिन्दी के पाठक जन भी राम महाराज के मस्ती भरे उपदेशों तथा वाक्यों से लाभ उठासकें ॥

इस हिन्दी राम वर्षा में परमहंस स्वामी राम तीर्थ जी के कुल भजन तथा उपदेश जो सन् १९०२ के पश्चात् भी उन के निजानन्द से प्रफुल्लित हृदय से आनन्द की धारा में शरीर छोड़ने तक बहे थे वह सब के सब सिलसले वार दर्ज कीये गये हैं । इन से अतिरिक्त बीसीयों और भजन भी जो स्वामी जी ने उत्तम समझ कर अपने लिखित उपदेशों में अथवा अपनी निज की नोटबुकों में दर्ज कर रक्खे थे वह भी सब चुन कर इस प्रति में शामल कर दीये गये हैं, जिस से पाठक जन आनन्द स्रोवर से बहती हुई नाना धारों के प्रयाग में एक ही जगह पर स्नान कर सकें, और इस में दिल खोल कर डुबकियें (गोता) लगाते हुए शान्त और प्रसन्न चित्त शीघ्र हों ॥

इस हिंदी जिल्द के कुल भजन नव (९) अध्यायों में सिलसलेवार बांटे गये हैं, और जिन भजनों को इन नव अध्यायों में

से किसी एक के भी अन्दर लाना वाजब नहीं समझा गया, वह सबके सब अन्तम् भाग में " राम की विविध लीला " के अध्याय (यानी मुतफ़र्रक़ चैपटर) में दर्ज कर दीये गये हैं । इसी लीये इस पुस्तक को दो भागों (हिस्सों) में बांट दीया गया है, और एक भाग के शुरु में भजनों की विषय सूची दी गयी है जिस से कि पाठकों को हर एक भाग के भजन पुस्तक के पढ़ने से पूर्व मालूम हो सकें ॥ दूसरे भाग के आखर कुल भजनों की वर्णानुक्रमणिका भी दर्ज कर दी गयी है जिस से हर एक भजन के ढूंडने में पाठक को आसानी (सैहल) हो जाये ॥

पाठकों को विदित हो कि स्वामी राम महाराज से कुल भजन उर्दू भाषा में रहे थे और इस हिंदी जिल्द में भजनों की ज़ुबान को नहीं बदला गया, सिर्फ़ हिन्दी टिप्पनी में उनका उल्था कीया गया है । और जो शब्द या भजन हिन्दी पाठकों की समझ से बाहर ख्याल कीये गये उन सब का सरल अर्थ हर एक भजन के नीचे नम्बरवार दर्ज कर दीया गया है ताकि पाठक जन इस

पुस्तक से पूरा २ लाभ उठा सकें। इस के .अलावा कठन भजनों के सरल भावार्थ भी उन के तले खोलकर दे दीये गये हैं जिस से भजन का पूरा २ मतलब समझ में बैठ जाये ॥ काठियावार देश में जहां हिन्दी भाषा का अधिक परिचय नहीं वहां के प्रेस में पुस्तक छपने से कुछ ग़लतियां भी छप गयी हैं, उन का शुद्धिः पत्र भी हर एक भाग के शुरु में दीया गया है ताकिः भूल (ग़लत फ़ैहमी) भजन के पढने में न होने पाये ॥

अपनी ओर से जहां तक हो सका है इस हिन्दी प्रति (जिल्द) को साफ़, सरल और लाभ दायक बनाने की कोशश की गयी है, तथापि अगर कोई त्रुटि किसी पाठक की नज़र में पड़े तो कृपा पूर्वक वह .इतला दें ताकि दूसरी प्रति में वह नुक़्स या त्रुटियें भी दूर की जायें ॥

बहुत रामभक्तों की दरख्वास्त पर इस जिल्द में स्वामी राम तीर्थ जी का संक्षेप जीवन चरित भी दे दीया गया है जो दूसरे भाग के प्रस्ताव में दर्ज है। यदि अवकाश मिला तो विस्तार पूर्वक

जीवन चरित एक अलग जिल्द (पुस्तक) में छापा जायगा ॥ इस संक्षेप जीवन चरित्र में .ज्यादा तर वह हाल दीये गये हैं जो नारायण ने अपनी आंखो से खुद देखे या स्वामी जी से खुद सुने और या स्वामी जी की अपनी लेखनी से लिखे गये हैं। पंडित हरि शर्मा के रामचरित्रामृत की तरह अन्य लोगों से सुने सुनाये बहुत से झूठ गपौड़े और मुबालगे नहीं.

अन्त में लेखक अन्तः हृदय से आशीर्वाद देता है कि यह पुस्तक सर्व जनों को लाभकारी हो। सब पुरुष इस के भजनों के श्रवण मनन से निज स्वरूप के ध्यान में लीन (मैह्व) हों, और इस की मदद से जन्म मरण रूप संसार (बंधनो) से मुक्त हों। तथास्तु॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

आर. एस. नारायण.

विषय सूची.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
४	रफ़ीक़ों में गर है मुरव्वत तो हुझं से	७
५	क्या क्या रक्खे हैं राम सामान तेरी .कुद्रत	९
६	तूं ही बातन में पिनहां है तू .ज़ाहर हर मकां पर है	१०
७	तूंहीं हैं मैं नाहीं वे सज्जना! तूंही हैं मैं नाहीं	१२
८	पास खड़ा नज़रों में न आवे ऐसा राम हमारा रे	१२

३ उपदेश.

नम्बर	विषयवार भजन	पृष्ठ
८	मरे न टरे न जरे हरे तम । परमानन्द सो पायो ॥	२३
९	हर लैहज़ा अपने चशम के नक़शो नगार देख	२५
१०	गंजें निहां के .क़ुफल पर सिर ही तो मोहरे शाह है	२८
११	दिलबर पास वसदा ढूंडन किथे जावना	३१
१२	तनहा न उसे अपने दिले तंग में पैहचान	३२
१३	साधो दूर दुई जब होवे	३३
१४	आये नाम भी अपना न कुच्छ बाक़ी नशां रखना	३४
१५	तू को इतना मिटा कि तू न रहे	३५
१६	नहीं अब वक्त सोने का सोये दिल को जगा देना	३६
१७	कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे अरु रात ले	३८
१८	कुछ देर नहीं अंधेर नहीं इन्साफ और .अदल परस्ती है	४२
१९	जिन्दः रहो रे जीया! जिन्द: रहो रे	४६
२०	काहे शोक करे नर मन में वह तेरा रखवारा रे	४७
२१	बात चलन दी कर हो, ऐथे रहना नाहिं	४८

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

४ वैराग्य.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

५ भक्ति अथवा .इशक़.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ट

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
३३	.इश्क़ होवे तो हक़ीक़ी .इश्क़ होना चाहिये	१४४
३४	प्रीत न की स्वरूप से, तो क्या कीया कुच्छ भी नहीं	१४५
३५	आवूंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीवूंगा	१४६
३६	हर गुल में रंग हर का जल्वः दिखा रहा है	१४७
३७	खेडन दे दिन चार नी! वतन तुसाडे मुड़ नहीं औं आना	१४८
३८	कासां में सोई शृंगार नी, जिस विच्च पिया मेरे वश आवे	१५०
३९	जिधर देखता हूं उधर तू ही तूं है	१५२
४०	जो तू है सो मैं हूं जो मैं हूं सो तू है	१५६
४१	हुसने गुल की नाओ अब वैहरे खज़ां में वैह गयी	१५७
४२	जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं	१५८

---

६ आतम ज्ञान.

१	चक्षू जिन्हें देखें नहीं चक्षू की अख मान।	१६१
२	दरया से हुबाब की है यह सदा।	१६१

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
३	है दैरो हरम में वह जल्वा: कुनां।	१६४
४	अगर है शौक़ मिलने का अपस की रमज़ पाता जा	१६५
५	क्या खुदा को ढूंडता है यह बड़ी कुच्छ बात है! तू	१६७
६	जहां देखन वहां रूप हमारो	१६७
७	आत्म चेतन चमक रह्यो, कर निधड़क दीदार	१६८
८	अब मोहे फिर फिर आवत हांसी	१६९
९	तूं ही सच्चिदानन्द प्यारे! तूं ही सच्चिदानन्द॥	१७०
१०	ठीकर खा खा ठाकर डिट्ठा, ठाकर ठीकर माहिं	१७०
११	जिस को हैं कहते खुदा हम ही तो हैं	१७१
१२	खुदाई कहता है जिस को .आलम। सो यह........	१७३
१३	मैं न बन्दा: न खुदा था मुझे मालूम न था	१७५
१४	शमा रू जल्वा: कुना था मुझे मालूम न था	१७७
१५	मुझ को देखो मैं क्या हूं तन तन्हा आया हूं	१७८
१६	कहां जाऊं? किसे छोड़ूं किसे ले लूं? करूं क्य	
१७	मैं हूं वह .जात ना पैदा किनारो मुतलक़ो बेहद।	१८१

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

७ ज्ञानी.

८ साग (फ़क़ीरी)

---

९ निजानन्द (खुद मस्ती)

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
२	कोइ हाल मस्त कोई माल मस्त....	३०७
३	आ दे मुक़ाम उत्ते आ मेरे प्यारया !	३०९
४	गर हम ने दिल सनम को दीया फिर किसी को क्या	३११
५	भला हुवा हर बिसरो सिर से टरी बला	३१२
६	आप में यार देख कर आयीना पुर सफा कि यूं	३१३
७	हस्ती-ओ-इल्म हूं मस्ती हूं नहीं नाम मेरा	३१५
८	क्या पेशवाई बाजा है अनाहद शब्द है आज	३१६
९	बाज़ीचा:-ए .इतफाल है दुन्या मेरे आगे	३२०
१०	दुन्या की छत पर चढ़ ललकार	३२१
११	गुल को शमीम आब गोहर और ज़र को मैं	३२४
१२	यह डर से मिहर आचमका अहाहाहा, अहाहाहा	३२५
१३	पीता हूं नूर हर दम जामे सरूर पै हम	३२६
१४	हबावे जिस्म लाखों मर मिटे पैदा हुए मुझमें	३२९
१५	मुझ में, मुझ में, मुझ में, मुझ में,	३३२
१६	.झिम ! झिम ! ! झिम ! ! !	३३६

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	१	मंगळाचरण	मंगलाचरण
८	१६	अर्पन	अर्पण
११	१	जलसा	जल्वाः
१३	४	रो करा	रोकना
१५	१६	कढ़हा	गढ़हा
२०	१४	स्त्री वैगराः	स्त्री वग़ैरह
२२	१	अफ लासो	अफ़लासो
२५	९	ज़लफे दराज़	.ज़ुलफे दराज़
२५	१२	५ ईश्वर	७ ईश्वर
२७	६	तेर	तेरे
२८	८	मूरते मिहर	सूरते मिहर
३१	११	वटना	वटावना
३५	६	फानी से	फानी में
३५	७	ठाकाना	ठिकाना
३७	२	वैहमी	वैहमी
३७	८	वही	वुही

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४५	११	करता हे	करता है
४७	९	धरो	भरो
४८	१६	कहै हुसैन फकी	कहे हुसैन फकीर
५४	५	लगाना	लगाता
५७	१३	मारने की लीये	मारने के लिये
६०	१०	वेद वानी	वेद वाणी
६१	८	गुरुकी वानी	गुरु की वाणी
६५	११	पुन्य	पुण्य
६६	३	स्वप्ने	स्वप्ने
६८	२	ऐता	ऐसा
७७	४	ज वफत	ज़रवफत
७८	५	अमींर	अमीर
८८	५	ऐ मन ! मेरे	ऐ मन मेरे !
९०	३	मस्तर	मत्सर
९९	५	जम	जब
१०२	४	वाहशाह	वादशाह
१०५	१६	पागली	पगली
१०९	६	जगह	निगाह

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०९	९	सु	से
१२६	१०	आत्मानुभव] कर लेना हैं तो	आत्मानुभव कर लेना है] तो
,,	१५	अठ़ाड़ा धम	अड़ा ड़ा धम
,,	१८	(अन्तःकर्ण) गुम हो	(अन्तःकरण) में दफ-तर गुम हो
१२७	१	वलकि...यह तमाम .गलत है	दुन्या के कुल झगड़े क्या अच्छी तरह से मिट गये
१३०	१३	ए अग्निरूपी पहाड़ ...	ऐ अग्नि के पहाड़ रूपी दीपक (आत्मदेव)
,,	,,	चानी	वाणी
,,	८	ओर	और (इस कविता में जहां ओर है वहां और समझें)
१३३	११-१२	ओर...जैस	और...जैसे
१३६	८	मर्दे खामें	१५ मर्दे खाम
१३७	७	मुझ कुच्छ	मुझ पै कुछ

पृष्ठ.	पंक्तिं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१२	तपड़ने	तड़पने
१४२	७	वर्हिमुख	वहिर्मुख
१४७	११–१२	फन[४]...सीमाव[५]	फन[५]...सीमाव[४]
१५५	१३	मक्त जन	भक्त जन
१६१	३	वानी...वानी	वाणी...वाणी
१६३	७	नशव–ओ–ममा	नशव–ओ–नमा
१६४	१४	पकाश	प्रकाश
१७९	३	मसजूदो मलायक	मसजूदे मलायक
१८२	१०	ूर	तूर
१८७	७	.इसक़	.इशक़
१८८	१४	माग्य	भाग्य
१९७	१४	फांस	फांसी
१९९	१६	शांह रग	शाह रग
२००	७	सिर्फ सिर्फ है और तेर कोई	सिर्फ है और अन्य कोई
२०८	१२	पतल वैंत	पतले वैंत
२०९	१३	मुसकहट वाला	मुसकाहट वाला
२१०	१६	४१ पानों	४१ पानी

शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२१४	८	पोझाक	पोशाक
२२०	१४	मटोल, जी[२४] ।	मटोल, जी[२४]
२२१	१७	अन्य सोग	अन्य लोग
२२६	१६	जोद	चांद
,,	१२	खज़ोन की	खज़ाने की
२२८	६	सोयै	सोये
२३१	५	वोहं	वाहें
२३५	१३-१४	वालो कर्म कारुडी	वाले कर्म कांडी
२३८	८	मारत	भारत
२४२	आखरी	विम्वित	प्रति बिम्वत
२४४	१०	मौ राम	मैं राम
,,	१२	हुसना .इशक़	हुसनो .इशक़
२४६	४	वक़ सीना	वरक़े सीना
२४९	१	ज्ञानी की ताऽल्लक़ी	ज्ञानी की वे तऽल्लक़ी
२५१	आखरी	झागड़ा	झगड़ा
२५३	११	हड्ी पावों	हड्डी पाओं
२५६	४	पाया दाज	पापा दाज
२६५	आखरी	फा कोइ	का कोई

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२७१	११	सेरे	मेरे
२७६	१५	भजबूरी	मजबूरी
२८१	१३	वर्जुर्गा	.बुजुर्गा
२९४	१४	किधर	किधरे
३१६	८–९	१३ घर १४ मंसूर...	१४ घर १५ मंसूर ...
३१७	१०	कर्म नशां	कर्मफशां
३२४	१४	दता हूं	देता हूं
३३२	६	उन्तज़ार	इन्तज़ार
३३५	११	६० माशूक़	३० माशूक़
३३९	६	६ वादा	३ वादी
३४३	३	३५ ख्वाव	३६ ख्वाव
३४४	५	घृण	घृणा
३४५	१२	इकवात	इकवार or यक लखत
३४७	७	हिप हुंर	हिप २ हुरें
३५८	७	ताकि म	ताकिः मैं
३७६	आखरी	खट्टा माठा	खट्टा मीठा
३७७	३	ठाठ ये	ठाठ थे

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२७८	३	हम	हम
३८३	१	जुज़[१०]	जुज़[११] (आगे अंक १४ तक बढ़ा कर बदल दो)
३८६	५	भवें	भवें

मंगळा चरण

---

१ दोहरा राग बिभास.

नारायण सब रम रह्या नहीं द्वैतकी गंध,
वही एक बहु रूप है पहिला बोलूं छन्द. १
कृपा सतगुर्देव से कटी अविद्या फन्द,
मैं तो शुद्ध ब्रह्म हूं द्वतीया बोलूं छन्द. २
स्व स्वरूप रामको लखूं एक सचिदानन्द,
वह मेरो है आत्मा तृतीया बोलूं छन्द. ३
स्वांस स्वांस अनुभव करूं रामकृष्ण गोविन्द,
सो मैं ही कोई भिन्न न चतुर्थ यह बोलूं छन्द. ४
सा स्वरूप सा मैं लख्यो निजानन्द मुकुन्द,
सो आनन्द मैं एक रस पञ्चम बोलूं छन्द. ५

१ नाना, अनेक. २ अपना असली स्वरूप. ३ अलग, जुदा. ४ वही,

२ सवैया राग धनासरी

सब शाहों का शाह मैं मेरा शाह न कोय
सब देवों का देव मैं मेरा देव न होय
चावक सब पर है मिरा क्या सुलतान अमीर
पत्ता मुझ बिन न हिले आँन्धी मेरी असीर

(१) मेरा (२) राजा, महाराजा (३) झक्कर हवा (४) कैद

---

३ लावनी स्वैया।

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी
जास ज्ञान से मोक्ष हो जावे कट जावे यम की फांसी
अनादि ब्रह्म अद्वैत द्वैत का जा में नामो नशां नहीं
अखंड सदा सुख जा का कोई आदि मध्य अवसां नहीं
निर्गुण निर्विकल्प निर उपमा जा की कोई शान नहीं
निर्विकार निरवैव माया का जा में रञ्चक भान नहीं
यही ब्रह्म हूं मनन निरंतर करें मोक्ष हित संन्यासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी॥१

सर्व देशी हूं, ब्रह्म हमारा एक जगह अस्थान नहीं
रमा हूं सब में मुझ से कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं
देख विचारो स्वाये ब्रह्म के हूवा कभी कुच्छ आन नहीं
कभी न छूटे पीड़ दुःख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नहीं पड़े भोगनी चौरासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी ॥ २
अदृष्ट अगोचर सदा दृष्ट में जा का कोई आकार नहीं
नेति नेति कह निगम ऋपीश्वर पाते जिसका पार नहीं
अलख ब्रह्म लियो जान जगत् नहीं कार नहीं कोई यार नहीं
आंख खोल दिलकी टुक प्यारे कौंन तर्फ गुलज़ार नहीं
सत रूप आनन्द राशी हूं कहें जिसे घट घट वासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी ॥ ३

(नोट) यह खुद भाषा में है इसवास्ते शब्दार्थ नहीं लिखे गये.

४ सवैया राग धनासरी

वांकी[1] अदायें[2] देखो । चन्द का सा मुखडा पेखो[3] (टेक)
बादल में बहते जल में वायू में तेरी लटकें
तारों में नाज़नी[4] में मोरो में तेरी मटके ॥ वांकी० १
चलना ठुमक ठुमक कर बालक का रूप धर कर
घोंघट अबर उलट कर हंसना यह बिजली बन कर ॥ वां० २
शबनम[5] गुल[6] और सूरज चाकर[7] हैं तेरे पद के
यह आन बान सज धज ऐ राम ! तेरे सदके[8]

१ नाजक २ नखरे ३ देखो ४ नाज़ुक, सुन्दरी ५ ओस ६ पुष्प
७ नौकर ८ कुर्बान.

राम महिमा अथवा गुरु स्तुति.

१ तर्ज़ बलोचां ज़ालमां, पद राग एमन कल्याण

लखूं क्या आप को ऐ अब प्यारे
अवनाशी कब वाचक[1] शब्द तुम्हारे
जहां गति[2] रूप की न नाम की है
वहां गति आ हमारे राम की है
वही इक रूप से पी प्रेम शरबत
नदी जंगल में जा देखे हैं परबत
वही इक रूप से नगरों में फिरता
किसी के खोज में डगरों में फिरता
अजब माया है तेरी शाहे[3] दुन्या !
कि जिस से है मेरी तेरी यह दुन्या
न तुझको पा सका कोई जहां में

१ बोला जाने वाला शब्द २ पहुंच ३ भूमंडल के बादशाः

न देखा जिस ने तुझको हर मकां में
तुझे समझा कीये सौ कोस अब तक
नहीं समझा मगर अफसोस अब तक
तू ही है राम और तू ही है यादूं
तू ही स्वामी तू ही है आप माधव

४ देश ५ कृष्ण (माधो)

---

२ साकी.

बैठत राम ही ऊठत राम ही बोलत राम ही राम रह्यो है
खावत राम ही पीवत राम ही धाम ही राम ही राम भयो है
जागत राम ही सोवत राम ही जोवत राम ही राम लह्यो है
देत हू राम ही लेत हू राम ही सुंदर राम ही राम रह्यो है

---

३ राग पीलू ताल दीपचंदी.

तेरी मेरे स्वामी यह बांकी अदा है
कहीं दास है तूं कहीं खुदं खुदा है

१ नखरा २ आप ईश्वर

कहीं कृष्ण है तू कहीं राम है तू
कहीं संगी है तू कहीं तू जुदा है
पलाया है जब से मुझे जाम तू ने
मेरी आंख में क्या नया गुल खिला है
तेरे इश्क़ के बहर में मस्त हूं मैं
बक़ा में फ़ना है फ़ना में बक़ा है
तेरी ज़ात तंज़ियः है तशबीह से फ़ारग़
मगर रंग तशबीह का तुझ पर चढ़ा है
नज़ारा तेरा राम हर जा पै देखूं
हर इक नग़्मों ऐ जाँ! तेरी सदा है

३ प्रेम का पियाला ४ फूल खिला है ५ समुद्र ६ अस्ति, मौजूदगी ७ नेस्ती ८ शुद्ध, पाक, बेदाग पूजनीय ९ मसाल १० जगह, देश ११ आवाज़, सुर १२ प्यारे! १३ आवाज़

---

४ राग केदार ताल रूपक ए राम!

रफ़ीक़ों में गर है मुरव्वत तो तुझ से

१ मित्र लोग २ मर्दानगी

अज़ीज़ों में गर है महब्बत तो तुझ से
ख़ज़ानों में जो कुच्छ है दौलत तो तुझ से
अमीरों में है जाह-ओ-सौलत तो तुझ से
हकीमों में है इल्मों हिकमत तो तुझ से
या रौनक़ जहां या है बर्कत तो तुझ से
है रोकर यह तकरारे उल्फ़त तो तुझ से
कि इतनी यह हो मेरी किस्मत तो तुझ से
मेरे जिस्मों जां में हो हर्कत तो तुझ से
उड़े मा-ओ-मनी की यह शिर्कत तो तुझ से
मिले सदक़ाः होने की इज़्ज़त तो तुझ से
सदा एक होने की लज़्ज़त तो तुझ से
उड़ें टेढ़ी बांकी यह चालाकियां सब
सिपर फैंक ढूंढूं सलामत तो तुझ से

२ मरतबः और रोब अर्थात् डर ४ प्रेम के बार बार इक़रार करने और फेर देने ५ शरीर और प्राण ६ अहंकार ७ अलहदगी जुदाई ८ अर्पन करना ९ तिस पर १० बचाओ

५ शाम कल्माण.

क्या क्या रक्खे हैं राम सामान तेरी क़ुदरत
बदले है रंग क्या क्या हर आन तेरी क़ुदरत
सब मस्त हो रहे हैं पेहचान तेरी क़ुदरत
तीतर पुकारते हैं सुबहान तेरी क़ुदरत
कोयेल की कूक में भी तेरा ही नाम हैगा
और मोर की जटलें में तेरा ही प्याम हैगा
यह रंग सोलहडे़ का जो सुबहो शाम हैगा
यह और का नहीं हैं तेरा ही काम हैगा
बादल हवा के ऊपर घंघोर नाचते हैं
मेंडक उछल रहे हैं और मोर नाचते हैं
बोलें बीयें बटेरे कुमरी पुकारे कू कू
पी पी करें पपीहा बगले पुकारें तूं तूं
क्या फारवतों की हक हकें क्या हुद हुदों की हू हू
सब रट रहेहैं तुझ को क्या पंखं क्या पखेरू

१ समय २ मुबारक, पाक ३ पक्षीका नाम ४ चाल ५ पैग़ाम, खबर, चिट्ठी ६ शफक़ ७ प्रातःकाल सायं काल ८ पक्षीका नाम ९ आवाज़का नाम १० पक्षी बड़े छोटे.

६ बरवा ताल तीन

कहीं कैवां सतारह हो के अपना नूर चमकाया
जुहल में जा कहीं चमका कहीं मरीख में आया
कहीं सूरज हो क्या पया तेज़ जल्वा आप दिखलाया
कहीं हो चान्द चमका और कहीं खुद बन गया साया
तूं ही बातन में पिनहां है तू ज़ाहर हर मकान् पर है
तूं मुनियो के मनों में है तूं रिंदों की ज़बान् पर है (टेक) ॥१
तेरा ही हुक्म है इन्दर जो बरसाता है यह पानी
हवा अटखेलियां करती है तेरे ज़ेरे निग्रानी
तजल्ली आतशे सोज़ां में तेरी ही है नूरानी
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्ग हैवांनी ॥ तूं ही० २
तूं ही आंखों में नूरे मर्दमक हो आप चमका है
तूं ही हो अक़ल का जौहर सिरों में सब के दमका है

१. सतारा का नाम (ज़ोहल का स्तारा)=शनिश्चर तारा
२. मंगल तारा ३ अकाश ४ अन्दर ५ छुपा हुवा ६ निग्रानी के नीचे, हफाज़त, इन्तज़ाम के तेल ७ रौशनी ८ जलती हुई अग्नि
९ चमक १० वैहशी मृतु देवता ११ आंखकी पुतली की रौशनी

तेरे ही नूर का जलसा है क़तरः में जो नम[12] का है
तूं रौनक़ हर चमन[13] की है तू दिलबर जामे जम[14] का है ॥ तूंही० ३
कहीं ताऊस[15] ज़री[16] बाल बनकर रक़्स[17] करता है
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है
कहीं हो फ़ाख़्तः[18] कू कू की सी आवाज़ करता है
कहीं बुलबुल है खुद है बागबां फिर उस से डरता है ॥ तूं० ४
कहीं शाहीं[19] बना शहपर[20] कहीं शकरः[21] है मस्ताना
शिकारी आप बनता है कहीं है आब[22] और दाना
लटक से चाल चलता है कहीं माशूक़ ज़नाना[23]
सनम[24] में तूं ब्रह्मण नाक़ूस[25] तू खुद तू है बुतख़ाना[26] ॥ तूंही० ५
तू ही याक़ूत[27] में रौशन तूही पुखराज और दुर[28] में
तू ही लाल[29]-ओ-बदख़्शां में तू ही है खुद समुद्र में

१२ तरी १३ बाग ३ जमशेद का पियाला (शराबवाला) १५ मोर १६ सुनैहरी वालो वाला १७ नाच १८ घुग्गी (घुगगतो) (१९, २०, २१) पक्षीयों के नाम २२ पानी और दाना २३ दोस्त स्त्री की तरह २४ मित्र प्यारा २५ शंख २६ मंदर (२७, २८, २९) मोती और लाल.

तू ही कोहे[30] और दर्या में तू ही दीवार में दरे[31] में
तू ही सेहरा[32] में आवादी में तेरा नूर नय्यर[33] में ॥ तूही० ६

३० पर्वत ३१ घर, दरवाजा ३२ जंगल ३३ सूरज.

---

७ राग खमाज ताल ठुमरी.

तूंहीं हैं मैं नाहीं वे सजनां[1] ! तूंहीं हैं मैं नाहीं (टेक)
जां[2] सोदां तां[3] तूं नाले[4] सोवें जां[5] चल्लां तां[6] तूं राहीं ॥ तूं० १
जां बोला तां तूं नाले बोलें चुप करां[7] मन माँहीं ॥ तू० २
सहक सहक के[8] मिलया दिलवर जिंद[9] दी घोलं गंवाईं[10] ॥ तूं० ४

१ ऐ प्यारे २ जब ३ तब ४ साथ ५ जब चलने लगूं ६ तब तूं साथ रास्ते में होता हैं ७ चूप होवुं तो तू मन के अन्दर होता है ८ तडप तडप के ९ जान १० उसी के पाने में या म्मृण में खो दी.

---

८ राग आसावरी ताल तीन.

पास खडा नज़रों में न आवे ऐसा राम हमारा रे (टेक)
है घट[1] में घट की सब जाने रहित खलक़ से न्यारा रे ॥ पास० १

१ दिल के अन्दर.

कोई ध्यावे पीर पैग़म्बर, कोई ठाकुरद्वारा रे॥पास० २

जप तप संजम[2] और वरत सब कर कर सबे हारा रे॥ पास.३

गुरु[3] गम से कोइ लक्ष्य[4] न पावे कहत कबीर विचारा रे॥पास.४

२ तप आंद्री इन्द्री और दिल को रोकरा ३ गुरु के समझाने के बग़ैर ढूढ़ना। अर्थात बग़ैर गुरु के उसके पाने की कोशिश करना ४ निशाना, पता.

उपदेश.

१ झिंजोटी ताल दादरा.

ग़फ़लत से जाग देख क्या लुत़फ की वात है
नज़दीक यार है मगर नज़र न आत है } (टेक)

दूई की गेर्द[1] से चशमे[2] की रौशनी गई
महबूब[3] के दीदार[4] की ताक़त नहीं रही
इसी वात से दुन्यां के तूं फंदे में फाथे[5] है ॥ गफ़० १

बिसियार[6] तलब[7] है अगर तुझे दीदार की
मुर्शद[8] के सखुन[9] से चलो गली विचार की
जिस से पलक में सब फंद टूट जात हैं ॥ गफ़० २

जिस के ज़ुलूस[10] से तेरा रौशन वजूद[11] है
ख़लक़ की सब्ही ख़ूबियोंका भी जो ख़ूब है

१ धूक २ आंख, नेत्र ३ प्यारा, माशूक़ ४ देखना, दर्शन, ५ फंसा हुवा ६ अधिक, बहुत ७ जिज्ञासा, ढूंढ, चाह ८ गुरु आत्मवित ९ उपदेश, नसीहत १० दरबार, हाजरी अर्थात मौजूदगी ११ शरीर

सोई है तेरा यार यह सब वेद गात हैं ॥ गफ० ३

कहते हैं ब्रह्मानंद नहीं तेरे से जुदा

वुही है तूं कुरान में लिखा है जो खुदा

जिगर में लेके समझना मुशकल की वात है ॥ गफ० ४

१२ लेकिन, किन्तु.

---

२. झिंजोटी ताल दादरा

गाफल तूं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है

किस वास्ते पड़ा जन्म मरण के कूप है (टेक)

यह देह गृह नाशवान हैं नहीं तेरा।

वृथाभिमान जात में फिरे कहां घेरा

तूं तो सदा विनाश से परे अनूप है ॥ गाफल तूं० १

भेद दृष्टि कीन जब्ही दीन हो गया,

स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया,

विचार देख एक तूं भूपों का भूप है ॥ गाफल० २

१ कूंआ, कदहा २ समुद्र, आनन्द धारा ३ मालक, बादशाह, रक्षक

तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतते[४],
तूं देह तीन दृश्य को सदा है देखता,
द्रष्टा नहीं होता है कभी दृश्यरूप है ॥ गाफल० ३
कहते है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाइये,
इस बात को विचार सदा दिल में लाइये,
तूं देख जुदा करके जैसे छाया धूप है ॥ गाफल० ४

४ हरकत करता, चिंतन करता

---

२ झंजोटी ताल दादरा

अजी मान मान मान कहा मान ले मेरा
जान जान जान रूप जान ले तेरा (टेक)
जाने विना स्वरूप ग़म न जावे है कभी,
कहते हैं वेद वार वार बात यह सभी,
हुशियार हो आज़ाद बार[१] डार मैं मेरा ॥ मान मान० १
जाता है देखने जिसे क़ाशी दुवारका,

१ बोझा.

मुक़ाम है वदन में तेरे उसी यारका,
लेकिन बिना विचार किसी ने नहीं हेरा[२] ॥ मान० २
नैनर्न[३] के नैन जो है सो वैनन के वैन है,
जिस के विना शरीर में न पलक चैन है,
पिछान ले वखूब[४] सो स्वरूप है तेरा ॥ मान० ३
ए प्यारी जान ! जान तूं भूपों की भूप है,
नाचत है प्रकृति सदा मुजरा अनूप है,
संभाल अपने को, वह तुझे करे न घेरा ॥ मान० ४
कहते हैं ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तूं सही,
वात यह पुराण वेद ग्रन्थ में कही,
विचार देख मिटे जन्म मरण का फेरा[६] ॥ मान० ५

२ पाया, ३ चक्षु आंखे ४ ज्ञान चक्षू अथवा अंग्रीय आंख
बुद्धि इत्यादि ५ अच्छी तरह से ६ आवागमन

४ गज़ल ताल दादरा.

जाग जाग जाग मोह नींद से ज़रा
भाग भाग भाग भोग जाल से नरा ! ॥ टेक
विषयों के जाल में फंसा छूटे नहीं कभी
जन्म ज़न्म में विषय संग होत हैं सभी
विना वैराग न कोई भवेसिंधु को तरा ॥ १ ॥ टेक
वर्ष गया मास गया दिन गयी घड़ी
दुन्या के कारवार में खवर नहीं पड़ी
नज़दीक काल आगया मन में नहीं डरा ॥ २॥ टेक
संगत से देह की स्वरूप को अपने विसारिया
जगत को सत्यमान के मन को पसारिया
दिन रात करे शोच राग द्वेष से भरा ॥ ३ ॥ टेक
अपने स्वरूप को विचार देख ले सही
ईश्वर है तेरे पास वह तुझ से जुदा नहीं
पस याद रख यहि वेद का वचन खरा ॥ ४ ॥ टेक

१ संसार रूपी समुद्र.

५, लावणी.

नाम राम का दिल से प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिये
पा कर नर का बदन रतन को, खाक मिलाना ना चाहिये ॥ टेक.
सुंदर नारी देख पियारी, मन को लुभाना ना चाहिये
जलति अगन में जान, पतंग, समान समाना ना चाहिये
बिन जाने परिणाम[1] काम को, हाथ लगाना न चाहिये
कोई दिन का खियाल कपट, का जाल बिछाना न चाहिये ॥ना. १
यह माया बिजली का चमका, मन को जमाना ना चाहिये
बिछडेगा संयोग भोग का, रोग लगाना ना चाहिये
लगे हमेशां रंग संग, दुर्जन के जाना ना चाहिये,
नदी नाव की रीत किसीसे, प्रीत लगाना न चाहिये ॥ ना. २
बांधव[2] जन के हेत[3] पाप का, खेत जमाना न चाहिये,
अपने पांव पर अपने कर[4] से, चोट लगाना न चाहिये,
अपना करना भरना दोष, किसी पर लाना न चाहिये,
अपनी आंख है मंद चंद को, दो बतलाना न चाहिये॥ना. ३

१ नतीजा २ सम्बन्धी ३ कारण (सबब) ४ हाथ

करना जो शुभ काज आज, कर देर लगाना न चाहिये,
कल जाने क्या हाल काल को, दूर पिछाना न चाहिये,
दुर्लभ तन को पाय कर, विषयों में गंवाना न चाहिये,
भवसागर में नाव पाय, चक्कर में डुबाना न चाहिये ॥ ना.४
दारादिक सब घेर फेर, तिन में अटकाना न चाहिये ॥
करी वमन के ऊपर फिर कर, दिल ललचाना न चाहिये,
जान आपनो रूप कूप, गृह में लटकाना न चाहिये,
पूरे गुरु को खोज मज़हब का, बोझ उठाना न चाहिये, ॥ ना. ५
बचा चाहे पापन से मन से, मौत भुलाना न चाहिये,
जो है सुख की लाग तो कर सब त्याग, फसाना न चाहिये,
जो चाहे तुं ज्ञान विषय के, बाण चलाना न चाहिये,
जो है मोक्ष की आश संग की पाश बढ़ाना न चाहिये, ना. ॥ ६
परमेश्वर है तन में वन में, खोजन जाना न चाहिये,

५ स्त्री वैगरा: ६ कै की हुई या उलटी ७ घर रूपी कूवा मेल मिलाप. ८ उमेद, आशा ९ फांसी फाही

कस्तूरी है पास मिरग को, घास सुंघाना न चाहिये,
कर सतसंग विचार निहार, कभी विसराना न चाहिये,
आत्म सुख को भोग भोग में, फिर भटकाना न चाहिये ॥ना७.

१० देखना पेखना ११ भूलना

---

६ गजल भैरवी.

शाहंशाहे जहान् है सायल हुवा है तू
पैदा कुने ज़मान् है डायल हुवा है तू
सौ वार गर्ज़ होवे तो धो धो पीयें क़दम
क्यों चर्खो मिहरो माह पै मायल हुवा है तू
खंजर की क्या मजाल कि इक ज़खम कर सके
तेरा ही है ख्याल कि घायल हुवा है तू
क्या हर गदाओ शाह का राज़क है कोइ और

१ जहान का बादशाह २ मंगता फ़कीर ३ जमाने का पैदा करने वाला ४ घडी का पैंडूलम ५ आकाश, सूरज और चांद ६ आशक मोहित ७ ताक़त ८ फक़ीर और बादशाह ९ रिज़क़ देने वाला

अर्फ़ लासो तंग दस्ती का क़ायेल हूवा है तू
टायेम है तेरे मुजरे के मौक़ा की ताक में
क्यों डर से उस के मुफत में ज़ायेल हूवा है तू
हमवग़ल तुझ से रहता है हर आँन राम तो
वन पर्दा अपनी वसँल में हायेल हूवा है तू

१० श्रोयी मुफलसी ११ मानने वाला १२ (अंग्रेजीसब्द है) अर्थ काल, समय [अर्थात् काल इस ताड़ में लगा रहता कि मौक़ा अगर पाये तो आप के आगे मुजरा (नाच) करे १३ तुयाह, (घटना) १४ साथ अपने १५ हर समय १६ मुलाक़ात १७ दो वस्तुओं के बीच में आने वाला पर्दा.

---

७ राग पीलो ताल तेवरा.

शशि सूर पावक को करे प्रकाश सो निजधाम वे
इस चाम से त्यज नेह तूं उस धाम कर विश्राम वे
इक दमक तेरी पायेके सब चमकदा संसार वे

१ चन्द्रमा २ सूरज ३ अग्नि ४ अपना असली घर ५ चमड़े ६ प्यार, मोह ७ घर ८ आराम

टुक चीन ब्रह्मानन्द को जगनीर से होय पार वे
मंसूर ने सूली सही पर बोलता वोही बैन वे
बन्दा: न पायो ख़ल्क़ में जब देखयो निज नैन वे
आशक़ लखावें सैन जो लख सैन को कर चैन वे
तू आप मालक खुद खुदा क्यों भटकदा दिन रैन वे
भांपे ज्ञानी सुन प्राणी नीर न धर धीर वे
आपा भुलायो जग बनायो सब अपनी तक़सीर वे

९ ले, अनुभव कर १० जगत के समुद्र से पार हो ११ एक मस्त ब्रह्मज्ञानी का नाम है १२ कलमा, मंत्र, रमज़ १३ जीव १४ सृष्टि, खलक़त १५ अपनी आंखे १६ इशारा, रमज़ १७ समझ, याद कर १८ रात्री १९ कहे २० जल २१ अपना स्वरूप २२ क़सूर.

---

८ सिंध भैरवी.

मरे न टरे न जरे हरे तम।
परमानन्द सो पायो ॥
मंगल मोद भरयो घट भीतर।

मुरझाना कुमलाना, २ अन्धकार.

गुरु श्रुति ब्रह्म त्वमेवं बतायो ॥
टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी ।
ठाकर सत राम अवनाशी ॥
लै मुझ में सब गयो रे बाकी ।
वासुदेव सोहम कर झाकी ॥
अहर्निश् का सूरज में नाश ।
अहं प्रकाश प्रकाश प्रकाश ॥
सूरज को ठंडक लगे जलको लगे प्यास ?
आनन्द घन मम राम से क्या आशा को आस

३ तुझ को ही [अर्थात तूही ब्रह्म है] ऐसा ४ हृदय की गांठ या शकोंकी गांठ ५ मुझ में सब लै होजाने पर मैंही वासुदेव हूं ऐसा पाया ६ दिन रात ७ उमेद को उमेद ८ जैसे सूरज को कभी ठंडकऔर जलको कदाचित प्यास नही लगती ऐसे मुझ आनन्द घन रामको कभी आशा नही होती या आशा का मुझ में कदाचित निवास नहीं.

९ राग गारा ताल दादरा

हर लैहज़ा[1] अपनी चश्म[2] के नक़शो नैगार[3] देख,
ऐ गुल[4] ! तूं अपने हुसन[5] की आपही वहार देख॥ (टेक)
ले आयीना[6] को हाथ में और वार वार देख।
सूरत में अपनी क़ुद्रते पॅरवर्दगार[7] देख ॥
खाले स्याह[8] अरु खत्ते मुशकअंवार[9] देख।
ज़ुलफे दराज़ो[10] तुर्रहे[11] अंबर फशार देख॥ हर लैहज़ा० १
आयीना क्या है ? जान ! तेरा पाक साफ दिल
और खाल क्या है तेरे स्वैदा[12] रुख के तिल
ज़ुलफे दराज़ फैहम[13] रसा से रही है मिल
लाखों तरह के रंज ही में हम रहे हैं खिले[14]॥हर लैहजा २

हर पल २ चक्षू ३ वज़ा कृता, सुन्दर चित्र ४ पुष्प, ऐ खूब सूरत प्यारे (जिज्ञासू) ५ सुंदरता ६ शीशा ७ ईश्वर की ताक़त (लीला) ८ स्याह तिल (दाग़) ९ कस्तूरी से खुशबूदार खत (वज़ा, लकीर) १० लम्बी ज़ुलफ [बालोंकी] ११ मस्तक पर बालों का लटकता हुवा गुच्छा जिस पर अम्बर की खुशबू छिड़की हुई हो १२ एक नुक़ता स्याह जो दिल पर होता है मगर यहां काले से मुराद है १३ तेज़ बुद्धि १४ खेल रहे हैं

मुशके ततार[15] मुशके खुतन भी तुझी में है
याक़ूते सुर्ख़[16] ओ लालेयमन भी तुझी में है
निसरीं[17] ओ मोतियां ओ सेवन[18] भी तुझी में है
अलक़िस्सा[19] क्या कहूं चमन[20] भी तुझी में है ॥हर लेहज़ा० ३
सुरज मुखी के गुल की गर दिल में ताब[21] है
तू अपने मुंह को देख कि खुद आफताब[22] है
गुल ओर गुलाब का भी तुझी में हसाब है
रुखसार[23] तेरा गुल है पसीना गुलाब है ॥हर लेहज़ा० ४
नर्गिस[24] के फूल पर तू न अपना गुमान कर
ओर सरू से भी दिल न लगा अपना जान कर
अपने सिवाय किसी पै न हरगज़ तू ध्यानकर
यह सब समा रहे हैं तुझी में तो आन कर ॥हर लैहाज़ ५

१५ तातार और खुतन देस के मृग का मुशक नाफा १६ लाल रंग का क़ीमती हीरा १७ सेवती (सयोती) का फूल १८ पुष्प का नाम १९ अलग़र्ज़, आखरकार २० बाग २१ गर्मी, शौक़ २२ सूरज २३ गाल, कपोल २४ एक पुष्पका नाम.

नरगस वह क्या है ? जान ! तेरी चश्मे खुश नगाँह[25]
और सर्व[26] क्या है यह तेरा क़द्दे दराज़े[27] आह
गर सैर बाग़ चाहे तो अपनी ही कर तू चाह
इश्क़[28] ने तुझी को बाग़ बनाया है वाह वाह ॥हर लैहज़ा ६

गर दिल में तेरे क़ुमरी[29] ओ बुलबुल का ध्यान है
तो होंठ[30] तेर क़ुमरी हैं बुलबुल ज़ुबान है
है तूही बाग़ और तूही बाग़वान है
बाग़ो चमन हैं जितने तू उन सब की जान है ॥हर लैहज़ा ७

बाग़ो चमन के गुंचा[31]ः ओ गुल में न हो असीर[32]
क़ुमरी की सुन सफ़ीर[33] न बुलबुल की सुन सफ़ीर
अपने तयीं तू देख कि क्या है ? अरे नज़ीर[34]
हैं हरफ़ मअरूफ़[35] के मानी[36] यही नज़ीर ! ॥हर लैहज़ा ८

२५ आनन्द भरी दृष्टि २६ एक वृक्षका नाम है २७ लम्बा क़द २८ ईश्वर २९ एक पक्षी का नाम है ३० लब ३१ कली और पुष्प ३२ क़ैद ३३ बुलबुल की आवाज़ ३४ कवी का नाम ३५ अपने आप को पैहचान ३६ मतलब.

१० राग कल्याण ताल दादरा

१ गंजे निहां के क़ुफ़्ल पर सिर ही तो मोहरे शाह है
तोड़ के कु.फल-ओ-मोहर को कञ्ज़ को खुद न पाये क्यों
॥ टेक

२ दीदः—ए-दिल हुवा जो वाँ खुल गया हुसने दिलरुवा
यार खड़ा हो साह्मने आंख न फिर लड़ाये क्यों ॥ गंजे० १

३ आप ही डाल साया को उस को पकड़ने जाये क्यों
साया जो दौड़ता चले कीजिये वाये वाये क्यों ॥ गंजे० २

४ जब वह जुमालेदिलफरोज़ सूरते मिहरे नीमरोज़
आप ही हो नज़ारः सोज़ पर्दे में मुंह छुपाये क्यों ॥ गं० ३

५ दशनः—ए—ग़मज़ः जांसितां नावके नाज़े वे पनाह
तेरा ही अक्से रुख सही साह्मने तेरे आये क्यों ॥ गं० ४

१ खजाना २ छुपा हुवा, ३ ताला, जन्द्रा ४ बादशाह की मोहर ५ रतन खज़ाना ६ दिल की आंख ७ खुली ८ माशूक़ प्यारे की सुंदरता ९ हाय हाय का शोर १० दिल के रौशन करने वाला ११ दुपैहर के सूरज की सूरत १२ दृश्य को चमकावे (तपावे) १३ आंख के इशारे की कटारी १४ जान को सताने वाला १५ नखरे का तीर १६ मुंह का प्रतिबिम्ब

६ अँह्ल् ओ अय़ाल ओ मौल् ओ ज़ॅर सब का है बार रामपर
अॅस्प पै साथ बोझ दर सिर पै उसे उठाये क्यों ॥ गं०५

१७ टब्बर क़बीला १८ दौलत १९ रुपय २० बोझ २१ घोड़ा

पंक्तिवार अर्थ

१ छुपाहुवा खज़ाना [जो आदमी के अन्दर है] उसके उपर बादशाह [आत्मदेव] की मोहर हर एक का सिर है, ऐ प्यारे इस ताले और मोहर को तोड़कर खज़ाना क्यों नहीं पाता ? ॥

२ दिल की चक्षु जब खुली तो [आत्मदेव] यार का .हुसन [सौन्दर्यता] अन्दर खुब गया। ऐ प्यारे जब यार रूब़ सामने खड़ा हो तो फिर उस से आंख क्यों नहीं लड़ाता ?

३ अपना साया [परछावां] अपने पीछे आप ही डालकर उसको पकड़ने क्यों जाता है, और जब [तेरे भागने से] साया दौड़ता जाता है तो तू फिर वाये वाये [हाये हाये] क्यों करता है ? ॥

४ जब वह दिल के प्रकाश करने वाला, दुपैहर के सूर्य की तरह आप ही दृश्य पदार्थों को चमकाता है [तपाता है] तो तूं क्यों पर्दे में मुंह छुपाता है ? ॥

५ ऐ जान लेने वाले [आत्मस्वरूप]! तेरी आंख के इशारे की कटारी और नखरे का तीर ख्वाह तेरे ही रूप का साया है मगर तेरे साह्मने क्यों आता है [अर्थात मोहने वाली तेरी माया तेरा साया हो कर तेरे आगे आ कर तुझ को क्यों ढक देती है ?

६ घर वार [टव्वर कबीला] और माल धन सब का बोझ तो राम [ईश्वर] पर है तो तू उस भोले जाट* की तरह घोडे के साथ होकर बोझ को सिर पर मुफत में क्यों उठाता है ?

* एक भोला आदमी गाऊं को अपना घोड़ा और असबाब लेकर जा रहा था, असबाब घोड़े की पीठ पर था और आप असबाब के उपर घोड़े पर सवार था । रास्ते में जो घोड़े का मोह दिल में जोश मारने लगा तो ख्याल करने लग पड़ा कि बोझ घोड़े की पीठ को कहीं खराब न करदे ॥ फिर असबाब को घोड़े की पीठपर से ऊतार कर अपने सिर पर रख लीया और घोड़े पर सवार हो गया । घोड़े पर तो बोझ वैसाही रहा मगर उस जाट ने अपनी गर्दन मुफत में तोड़ली ॥ [ऐसा ही वह पुरुष अपनी गर्दन मुफत में तोड़ लेता है जो ईश्वर पर भरोसा न करके सिर्फ यह ख्याल करता रहता है कि बच्चों आदि को मैं पालता हूं] इसवास्ते ऐ प्यारे ! सब ईश्वर पर छोड मुफत में अपनी गर्दन क्यो तोड़ता हैं । क्योंकि ऐसा ख्यालकरे या न करे ईश्वर पर तो बोझ हर सूरत मैं वैसा ही रहता है ।

११ राग भैरवी ताल ठुमरी.

दिलवर पास वसदा ढूंडन किथे जावना ॥ टेक.
गली ते[1] वाज़ार ढूण्डो शहर ते दयार[2] ढूंडो।
घर घर हज़ार ढूंडो-पता नहीं पावना ॥ दिलवर पास० १
मक्के ते मदीने जाईये, मथे चा मसीत घसाईये ।
उची कूक वांग सुनाईये मिल नहीं जावना ॥ दिलवर० २
गंगा भावें जमुना न्हावो, कांशी ते प्राग जावो ।
बद्री केदार जावो मुड़ घर आवना ॥ दिलवर पास० ३
देस ते दसौर ढूंडो दिल्ली ते पशौर ढूंडो ।
भावें टौर टौर ढूंडो किसे न बतावना ॥ दिलवर पास० ४
वनो जोगी ते वैरागी संन्यासी जगत त्यागी ।
प्यारे से न प्रीत लागी भेस की वटना ॥ दिलवर पास० ५
भावें गल माला डाल चंदन लगावो भाल ।
प्रीत नहीं साईं नाल जगत नूं दखावना ॥ दिलवर पास० ६
मोमनांदी शकल बनावें काफरां दे कम्म कमावे ।
मैंथे ते मेहरावं लगावें मौल्वी कहावना ॥ दिलवर पास० ७

१ किस जगह २ और ३ मुलक ४ ब्वाह ५ वापस ६ सन्तों की ७ पेशानीपर ८ दहलीज़ की राख या मंदर के चरणों की राख, भस्म,

१२ राग गारा ताल दादरा.

तनहा न उसे अपने दिले तंग में पैहचान।
हर बाग़ में हर दश्त में हर संग में पैहचान॥
बे रंग में बारंग में नैरंग में पैहचान।
मंज़ल में मुक़ामात में फ़रसंग में पैहचान॥
नित रूम में और हिंद में और ज़ंग में पैहचान।
हर राह में हर साथ में हर संग में पैहचान॥
हर अज़्म इरादाः में हर आंहंग में पैहचान।
हर धूम में हर सुलह में हर जंग में पैहचान॥
हर आन में हर बात में हर ढंग में पैहचान।
आशक़ है तो दिलबर को हर इक रंग मे पैहचान॥ १
हंसता है कोई शाद किसी का बुरा है हाल।

१ सिर्फ़, अकेला २ तंग दिलमें ३ जंगल ४ पथ्थर ५ रंगदार ६ क़िस्म क़िस्म के रंगमें, तरह २ के रंगवाले ७ पत्थर से मुराद पत्थर के मकानों से ८ हबशी ९ अरादाः या मक़सद १०आवाज़ सुर ११ खुश

रोता है कोई हो के ग़मो दर्द में पौमाल[11]
नाचे है कोई शोख बजाता है कोई ताल
पैहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल
करता है कोई नाज़[12] दखाता है कोई माल
जब ग़ौर से देखा तो उसी की है यह सब चाल
हर बात में हर आन[13] में हर ढंग में पैहचान
आशक़ है तो दिलबर को हर इक रंग में पैहचान॥ २

११ कुचला हुवा, अर्थात तकलीफ से दबा हुवा १२ नखरा
१३ तरीका, समय, चाल.

---

१३ राग मांड ताल दीपचंदी तरज़ लेली मजनूं.

साधो दूर दुई[1] जब होवे
हमरी कौन कोई पत[2] खोवे ॥ टेक
ऐसा कौन नशा तुम पीया
अबलौं[3] आप सही[4] नाहीं कीया ॥ १ ॥ साधो०

१ द्वैत २ इज्ज़त ३ अभी तक ४ दुरस्त, ठीक पिछांना

सिन्ध विषे रञ्चक सम देखें
आँज नहीं पर्वत सम पेखें ॥ २ ॥ साधो०
चमके नूर तेज सब तेरा
तेरे नैनन्नं काँहे अन्धेरा ॥ ३ ॥ साधो०
तूं ही राम भूप पति राजा
तूं ही सर्व लोक को साजा ॥ ४ ॥ साधो०

५ समुद्र में छोटे से मोती को तो ढूंढ रहा है और अपने अन्दर पहाड़ जितने अपने स्वरूप को नहिं अनुभव करता ६ आंखको ७ क्यों.

---

१४ राग भैरवी ताल तीन

न्राये नाम भी अपना न कुच्छ वाक़ी नशां रखना।
न तन रखना न दिल रखना न जी रखना न जां रखना॥
तऽ़ल्लुक़ तोड़ देना छोड़ देना उस की पाँवंदी।
खबर दार अपनी गर्दन पर न यह बारे गिरां रखना॥
मिलेगी क्या मदद तुझ को मददगाराने दुंन्या से।

१ नाम मात्र भी २ समबन्ध ३ रस्सी, कैद मजबूरी ४ भारी बोझ ५ दुन्या की मददचाहने वाले.

उमेदे याँवरी उन से न यहां रखना न वहां रखना ॥
बहुत मज़बूत घर है आँक़बत का दारे दुंन्या से ।
उठा लेना यहां से अपनी दौलत और वहां रखना ॥
उठा देना तसव्वरे ग़ैरे की सूरत का आंखों से ।
फ़क़त सीने के आयीने में नक़शे दिलस्तान रखना ॥
किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे फ़ाँनी से ।
ठाकाना वे ठाकाना और मकां वर लॉमकां रखना ॥

६ मुरादों के पूरा होने की उम्मेद ७ परलोक, आखर वाला ८ दुन्या के घर से ९ वैहम, खियाल १० द्वैत ११ दिल के शीशे में १२ दिल लेने वाले (आत्मा, यार) की सूरत (ध्यान) रखना १३ अन्त वाला घर (मुक़ाम) १४ स्थानो के ऊपर, स्थान रहित (मुक़ाम)

१५

तू को इतना मिटा कि तू न रहे ।
और तुझ में *दूई की बू न रहे ॥

* द्वैत.

जुस्तजू[1] भी इजावे हसनी[2] है।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे॥
आर्जू[3] भी वसाले पर्दा है[4]।
आर्जू है कि आर्जू न रहे॥

१ जिज्ञासा २ सुन्दर पर्दा ३ उमेद, खाहश ४ दर्शण में पर्दा

---

१६ राग सिंदोरा ताल दीपचंदी

नहीं अव वक्त सोने का सोये दिल को जगा देना।
जो लेटा गोदे[1] गफ़लत में वहां से अव उठा देना॥
न जागे इस तरह गर वह तो झट उस के कानों में।
ढंडोरा चार वेदों का वतशरीहन[2] सुना देना॥
है आत्म ओर ब्रह्म एको नहीं इस में फरक़ कुच्छभी।
वमैये[3] माने-व-मतलव के यक़ीं इस पर करा देना॥
है दुन्या खेल जादू का कहो या ख्वाब ही इस को।
अगर कुच्छ शक हो इस में तो युक्ति से मिटा देना॥

१ सुसती के विस्तर [आगोश] २ खोल कर, साफ साफ
३ अर्थ सहित, साथ मतलवके ३ अर्थ साहित [साथ] अर्थ के

नमूदे इस की है ख्यालों पर हकीकत में नहीं कुच्छ भी।
सखोपत मे कहां भासे? है वेहभी यह जता देना ॥
सर्व द्रष्टा सर्वाधार सब से परे जो है चैतन्य (चेतन)।
वही आनन्दघन व्यापक वही आत्म लखा देना॥
उसी में जीव ईश्वर की कल्पना है पड़ी होती।
वही प्रकृति हो भासे हमहँ वह है बता देना॥
हमह का लफ़्ज़ भी जिस बिन नहीं रखता हैसीयत को।
वही वह है हमह फ़र्ज़ी मुफस्सल यह सुझा देना॥
कहां दूई कहां वहदत कहां असली कहां नक़ली।
है केवल एक ही गोविन्द सबक़ आखर पढ़ा पेना॥

४ भासमान [नज़र आना] ५ सपुपति अवस्था ६ आत्म चैतन्य स्वरूप ७ सब कुच्छ [सर्व तमाम] ८ साफ तफसील वार ९ द्वैत १० एकता ११ सिरफ १२ कवी का नाम.

१७ ग़ज़ल.

दुन्या अजब बाज़ार हैं कुछ जिन्से यहां की साथ ले
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले
आराम दे आराम ले दुःख दर्द दे आफात ले
कल जुग नहीं कर जुग है यह यहां दिन
को दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥ } (टेक)

कांटा किसी के मत लगा गो मिसले गुल फूला है तू
वह तेरे हक़ में तीर है किस बात पर झूला है तू
मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू
सुन रख यह नुक़ता बेख़बर किस बात पर भूला है तू॥
कलजुग नहीं० २

शोखी शरारत मकरो फ़न सब का बसेरा है यहां

१ वस्तु, चीज़ २ दुःख, मूसीबत ३ पुष्प की तरह ४ तेरे वास्ते, तेरे को ५ दग़ा, फरेब ६ बसेरा, रहने की जगह, घर

जो जो दिखाया और को वह खुद भी देखा है यहां
खोटी खरी जो कुछ कही तिस का परेखा है यहां ॥
जो जो वडा तुलता है मोल तिल तिल का लेखा है यहां
कलजुग नहीं० ३

जो और की बस्ती रखे उस का भी बस्ता है पुरा.
जो और के मारे छुरी उस के भी लगता है छुरा.
जो और की तोडे घडी उस का भी टुटे है घडा.
जो और की चीते बदी उस का भी होता है बुरा ॥
कलजुग नहीं० ४

जो और को फल देवेगा वह भी सदा फल पावेगा
गेहूं से गेहूं जौ से जौ चांवल से चांवल पावेगा
जो आज देवेगा यहां वैसा ही वह कल पावेगा
कल देवेगा कल पावेगा फिर देवेगा फिर पावेगा ॥
कलजुग नहीं० ५

७ परखना, जांचना ८ नगरी ९ दिल में लाना, ख्याल में लावे

जो चाहे ले चल इस घडी सब जिन्स यहां तय्यार है
आराम में आराम है आज़ार[10] में आज़ार है
दुन्या न जां इस को मीयां दरया की यह मंजधार है
औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है ॥

कलजुग नहीं० ६

तूं और की तारीफ कर तुझ को सनाख्वानी[11] मिले
कर मुशकल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले
तूं और को मेहिमान कर तुझ को भी मेहिमानी मिले
रोटी खला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले ॥

कलजुग नहीं० ७

जो गुल[12] खिरावे और का उस का ही गुल खिरता भी है
जो और का कीले[13] है मुंह उस का ही मुंह किलता भी है
जो और का छीले जिगर उस का जिगर छिलता भी है

१० दुःख ११ तारीफ, स्तुति १२ फूल, पुष्प १३ कीले अर्थात निन्दे या कोई किसी पर धब्बा या दाग़ लगाये

जो और को देवे कपट उस को कपट मिलता भी है ॥
कलजुग नहीं० ८

कर चुक जु कुछ करना है अब यह दम तो कोई आँन है
नुक्सान में नुक्सान है इहसान में एहसान है
तोहमत में यहां तोहमत लगे तूफान में तूफान है
रैहमाँन को रैहमान है शैतान को शैतान है ॥
कलजुग नहीं० ९

यहां जैहर दे तो जैहर ले शक्कर में शक्कर देख ले
नेकों को नेंकी का मज़ा मुंज़ी को टक्कर देख ले
मोती दीये मोती मिले पथ्थर में पथ्थर देख ले
गर तुझ को यह वावँरँ नहीं तो तू भी करके देख ले
कलजुग नहीं० १०

अपने नफे के वास्ते मत और का नुक़सान कर
तेरा भी नुक़सान होवेगा इस वात पर तूं ध्यान कर

१४ घड़ी पल १५ बखशश करने वाला, बरकत देने वाला १६ सताने वाला, दुःख देने वाला १७ निश्चय, यक़ीन.

खाना जो खा सो देख कर पानी पीये सो छान कर
यहां पौं को रख दूं फूंक कर और खौफ से गुज़रान कर
कलजुग नहीं० ११

ग़फलत की यह जगह नहीं साहिबे इद्रोंक रहे
दिलशाद रख दिल शाद रहे ग़मनाक रख ग़मनाक रहे
हर हाल में भी तूं नेंजीर अब हर कदम की खाक रहे
यह वह मकां है ओ मीयां यां पाक रहे वेवाक रहे ॥
कलजुग नहीं० १२

१८ तेज़ समझ वाला पुरुष १९ प्रसन्न चित्त, आनन्द चित्त २० कवी का नाम है २१ शुद्ध पवित्र २२ नडर, वेखौफ भय रहित.

---

१८ ग़ज़ल.

दुन्या है जिसका नाम मीयां यह अजब तरह की हस्ती है
जो मैहंगो को तो मैहंगी है और सस्तों को यह सस्ती है
यहां हरदम झगड़े उठते हैं हर आन अदालत वस्ती है

१ वस्तू है २ हर वक्त, हरदम

गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त³ करे तो पस्ती है
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं इन्साफ⁴ और अदलपरस्ती है } टेक
इस हाथ करो उस हाथ मिले यहां सौदा दस्त बदस्ती है } १.

जो और किसी का मान रखे तो उस को भी अरु मान मिले
जो पान खिलावे पान मिले जो रोटी दे तो नॉन⁵ मिले
नुक्सान करे नुक़सान मिले एहसान करे एहसान मिले
जो जैसा जिस के साथ करे फिर वैसा उस को आन मिले ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० २

जो और किसी की जां बख़्शे तो हक़⁶ उस की भी जान रखे
जो और किसी की आँन⁷ रखे तो उस की भी हक़ आन रखे
जो यहां का रहने वाला है यह दिल में अपने ठान रखे

३ घटाना, कम करना ॥ अर्थात जो झगड़े बढ़ावे तो उसके वास्ते बाज़ार गर्म है और जो लड़ाई झगड़ों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुवा बाज़ार है ४ न्याय, इन्साफ ५ रोटी ६ सत्य स्वरूप ईश्वर ७ इज़्ज़त, आबरू

वहु तुरत फ़ुरत का नक़शा है उस नक़शे को पहछान रखे ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ३

जो पार उतारे औरों को उस की भी नाव उतरनी है
जो ग़र्क़ करे फिर उस को भी यां डुवकूं डुवकूं करनी है
शमशेर तवर वंदूक सेनां और नश्तर तीर निहरनी है
यां जैसी जैसी करनी है फिर वैसी वैसी भरनी है ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ४

जो और का ऊंचा वोलें करे तो उस का वोलें भी वाला है
और दे पटके तो उस को भी कोई और पटकने वाला है
वेजुर्म ख़ता जिस ज़ालिम ने मज़लूम ज़िवह करडाला है

८ जल्दी, फौरन अर्थात अदले का वदला फौरन ही मिल-जाता है ऐसा दुन्या का नक़शा है ९ भाला १० निहेरण, छीलना या छीलने का या नाखुन काटने का औज़ार । इसपांक्त में सब हथ्यारों के नाम हैं ११ इस जगह इस दुन्या में १२ वड़ी इज़्ज़त से पुकारे या किसी का ज़िकर करे १३ नामवरी १४ क़सूर रहित पुरुष १५ ज़ुल्म करने वाला, या नाहक़ दुःख देने वाला १६ जिस पर ज़ुलम कीया गया हो अर्थात दुःखी १७ गला घूट कर या छुरी से मारदेना,

उस ज़ालिम के भी लहू का फिर बैहता नदी नाला है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर नहीं० ५

जो मिसरी और के मुंह में दे फिर वह भी शक्कर खाता है
जो और के तईं अब टक्कर दे फिर वह भी टक्कर खाता है
जो और को डाले चक्कर में फिर वह भी चक्कर खाता है
जो और को ठोकर मार चले फिर वह भी ठोकर खाता है॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ६

जो और किसी को नाहक में कोइ झूठी बात लगाता है
और कोइ ग़रीब विचारे को नाहक में जो लुट जाता है
वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्की खाता है
वह जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ७

है खटका उस के साथ लगा जो और किसी को दे खटका
वह ग़ैब[18] से झटका खाता है जो और किसी को दे झटका

१८ अप्रगट स्थान, दैवयोग से अर्थात् क़ुदरत से वह चोट खाता है.

"चीरे के बदले चीरा है पंटके के बदले है पटका
क्या कहिये और नज़ीर आगे यह है तमाशा झटपेंट का॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ८

१९ एक क़िस्म की सुंदर पगड़ी का नाम है २० पटका भी एक उत्तम पगड़ी को कहते है २१ उसी ही समय बदला देवे वाला.

---

११ राग देशकार ताल दादरा

ज़िन्दः रहो वे जीया ; ज़िन्दः रहो वे (टेक)
तू सदा अखंड चिदानन्द घन मोह भै शोक क्यों करो रे।
जिन्दः रहो रे जीया ! जिन्दः रहो रे ॥ १ ॥
आया ही नहीं तो जायेगा कौन गृह
सोया ही नहीं तो कहां जागे।
उपजा ही नहीं तो बिन्से गा किस तरह
वैहम और रोग सब हरो रे ॥ जिन्दः० २ ॥

१ ऐ जी, जीव.

तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन तेरो नहीं मान अपमान जनें।
तेरा नहीं नफ़ा नुक़सान धनग़म चिन्ता डर खौफ को
तेरो रे ॥ जिन्द॰ ३ ॥

जाग रे लालन जाग रे घर तेरे सदा सुहाग रे।
सूरज वत उगरे भाग रे सब फिकर को परे कर
धरो रे ॥ जिन्द॰ ४ ॥

है राम तो सदा ही पास रे हंस खेल क्यों हुवा उदास रे।
आनन्द की शिषर वर वास रे हर स्वांस में सोहंगे को
धरो रे ॥ जिन्द॰ ५ ॥

२ ऐ पुरुष ३ ए प्यारे ४ वह [ईश्वर] मैं हूं वह आत्म स्वरूप मै हूं.

---

२० राग धुन ताल तीन

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे॥ टेक.
गर्भवास से जब तूं निकला, दूध स्तनों में डारा है रें।
बालकपन में पालन कीनो, माता मोह दुवारा है रे॥१॥का॰

अन्न रचा मनुषों के कारण, पशुवों के हित चारा है रे ।
पक्षी वन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ॥२॥
काहे शोक०
जल में जलचर रहत निरंतर, खावें मास करारा है रे ।
नाग वसें भूतल के मांहि, जीवें वर्ष हज़ारा है रे ॥३॥ का०
स्वर्ग लोक में देवन के हित, वहुत सुधा की धारा है रे ।
ब्रह्मानंद फिकर सव तज के, सिमरो सर्जन[1] हारा है रे ॥
॥ ४ ॥ काहे०

१ सरवत.

---

२१ राग परज.

वात चलन दी कर हो, ऐथे[1] रहना नाहिं ॥ टेक
खाय खुराकां पैहन पुशाकां जमदा वकरा पल हो ॥१॥ऐथे
गंगा जावें गोदावरी न्हावे अजों न समझें खले[2] हो ॥२॥ऐथे.
उमर तेरी ऐवें पंई जाँदी घड़ी घड़ी पल पल हो ॥ ३ ॥ ऐथे.
कहै हुसैन फकी साईं दा भय साहिव दा कर हो ॥४॥ऐथे.

१ इस संसार में २ वेवकूफ नालायक.

२२ गज़ल ताल ३

हरि को सिमर प्यारे ! उमर विहो[1] रही है ।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन में जा रही है ॥
(टेक)

दीपक की जोत जावे, नदीयों का नीर[2] धावे[3] ।
जाती नज़र न आवे, चंचल समा रही है ॥ १ ॥ हरि०
पिछली भलाई कमाई, मानुषा देह पाई ।
प्रभु हेत[4] ना लगाई, विरथा गमा रही है ॥ २ ॥ हरि०
घर माल मीत नारी, दुन्यां की मौज[5] भारी ।
होवे पलक में न्यारी, दिल को फंसा रही है ॥ ३ ॥ हरि०
क्या नींद में पड़ा है, सिर काल आ खड़ा है ।
उठ दिन चढ़ रहा है, रजनी[6] बता रही है ॥ ४ ॥ हरि०

१ गुज़र (बीत) रही है २ जल ३ दोड़े मुराद बहने से ४ कारण (अर्थात प्रभुके लीये) ५ तरंग, लहर. ६ रात.

२३ लावणी लंगडी.

सुन दिल प्यारे! भज निज स्वरुप तूं वारंवारा ॥ टेक
इस दुन्या में एक रतन है मिलता वारंवार नहीं
जैसे फूल गिरा डाली से, फिर होता गुलज़ार नहीं
उस की क़ीमत है वडभारी, जानत लोग गंवार नहीं
परमेश्वर के मिलने का फिर, उस के विना दुवार नहीं
काच खरीद करे पदले में, देकर उस को मति मारा ॥१॥ सुन.
इस दुन्या में इक पुतली ने ऐसा भारी जाल रचा
स्वर्ग लोक पाताल ज़िमीं पर, कोई न उस के हाथ वचा
क्या जोगी क्या पीर पैगंबर, सव को उस ने दिया नचा
फंसा नहीं जो उस वंधन में, सोई है गुरुदेव सचा
मोक्ष मारग के जाने में, सो ठग जानो लूटन हारा ॥२॥ सुन.
इस दुन्या में एक अचंभा, हम ने देखा है जो वड़ा
एक छोड़ कर चला ज़िमीं को, दूजा करता है झगड़ा
वह नहीं मन में समझे मूरख, मैं भी जावनहार खड़ा

१ मनुष्या देह से मुराद है २ बेवकूफ, जिसकी बुद्धि नहीं
३ स्त्री से मुराद है.

घड़ी पलक का नहीं टिकाना, किस के भरोसे भूल पड़ा
पर आगे जाने का समान कोई, विरला करता है पियारा ३सुन
इस दुन्या में एक कूप है, जिस का पार कोय नाहि पावे
तिस के भरने कारण प्राणी देश देशांतर को जावे
ध्यान भजन चिंतन ईश्वर का उस के कारण विसरावे
दीन भया पर घर में जाकर सेवा कर कर मर जावे
वही जो ध्यावे निजस्वरूप को शोक फिकर तज दे सारा
॥ ४ ॥ सुन०

इस दुन्या में एक वृक्ष पर पक्षी करत बसेरा है
सांझ पड़े जब सब मिल जावे, बिछडें होत सवेरा है
चार घड़ी के रहने कारण करतें मेरा मेरा है
ऐसी बात न मन में लावें, बस बस गये बडेरा है
क्या ले आया क्या ले जासी वृथा करत है हंकारा
॥ ५ ॥ सुन०

४ खूता, यहां मुराद है पेट से ५ यहां मुराद घर, मकान से है.

इस दुन्या के वीच निरंतर एक नंदी चलती भारी
दिन दिन पल पल छिन छिन उस का वेग वड़ा है वलकारी
पशु पक्षी नर देव दनुज उस में वहती दुन्या सारी
जमे न उस में पैर किसी का कर के यतन सव पचहारी
विन स्वरूप जाने, किसी का, कभी न होगा निस्तारा
॥ ६ ॥ सुन दिल०

इस दुन्या में एक अंधेरा सव की आंख में जो छाया
जिस के कारण सूझ पड़े नहीं कौन हूं मैं कहां से आया
कौन दिशा में जाना मुझ को किस को देख कर ललचाया
कौन मालक है इस दुन्या का किस ने रची है यह माया
निजानन्द पाने विन कवहुं मिटे नहीं यह संसारा
॥ ७ ॥ सुन दिल०

६ यहां मुराद है काल भगवान से ७ दानव ८ अज्ञान से मुराद है.

२४ राग जंगला

कोइ दम दा इहां गुज़ारा रे। तुम किस पर पाँव पसारा रे॥
इहां पलक झलक दा मेला है। रहना गुरू न रहना चेला है॥
कोई पल का यहां गुज़ारा रे ॥ १ ॥ कोई दम०
यहां रात सराय का रहना है। कल्ह अस्थिर होय न जाना है॥
उठ चलना सांझ सकारा[2] रे ॥ २ ॥ कोई दम०
ज्यों जल के बीच बताशा है। त्यों जग का सभी तमाशा है॥
यह अपनी आंख निहारा[3] रे ॥ ३ ॥ कोई दम०
देखन में जो कोई आवे है। सब खाक माहिं मिल जावे है॥
यह सभी काल का चाँरा[4] रे ॥ ४ ॥ कोई दम०
यह दृष्टमान सब नाशी[5] है। इस काल के सब घर फांसी है॥
इस काल सबन को मारा रे ॥ ५ ॥ कोई दम०
दर जिन के नौबत बाजे है। वे तख्त छोड कर भाजे है॥
लशकर जिनके लाख हज़ारा रे ॥ ६ ॥ कोई दम०

१ यहां २ सवेरे, प्रातःकाल ३ देखा ४ घास, नतीजा खुराक
५ नाश होने वाला.

२५ ग़ज़ल

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफ़िल ! कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तन से तो सब अपना बिगाना है॥
मुसाफर तूं है और दुनियां सरा है भूल मत ग़ाफिल ! ।
सफर परलोक का आखर तुझे दरपेश आना है ॥१॥ ज़०
लगाना है अबस दौलत पे क्यों तूं दिल को अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़ यहीं सब छोड़ जाना है ॥२॥ ज़.
न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना ।
बखूबी ग़ौर कर देखा तो मतलब का ज़माना है ॥३॥ ज़रा०
रहो लग याद में हक़ की अगर अपनी शफ़ा चाहो।
अबस दुन्यां के धंधों में हुआ तूं क्यों दिवाना है ॥४॥ ज़रा०

१ बे फायदः, फ़ज़ूल २ दोस्त मित्र ३ सत्य स्वरूप, ईश्वर ४ भलाई, बेहतरी ५ पागल.

२६ राग भूपाली ताल दादरा

विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उस को शान्ति क्यों न हो उस का मन मगन॥
काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली।
इन के ¹हनन के वास्ते जितना हो तुझ से कर यतन॥१॥वि.
ऐसा बना सुभाव को चित्त की शान्ति से तू।
पैदा न ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन॥ २॥ विश्व.
मित्रता सब से मन में रख त्याग दे वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन॥३॥ विश्व.
जिस से अधिक न है कोई जिस ने रचा है यह जगत।
उस का ही रख तू ²आशा उस की ही तू पकड़ शरन॥४॥वि.
छोड़ के राग द्वेश को मन में तु अपने ध्यान कर।
तो निश्चय तुझ को होवेगा यह सब हैं मेरे आत्मन॥५॥ वि.
जैसा किसी का हो अमल वैसा ही पाता है वह फल।

१ मारना, क़ाबू करने से मुराद है. २ आस

दुष्टों को कष्ट मिलता है शिष्टों का होता दुःख हरन ॥८॥ त्रि०

आप ही सब तु रूप हैं अपना ही कर तू आश्रा ।

कोई दूसरा नाहिं होगा सहाय जो छेदे तेरे दुःख कठन ७॥ त्रि.

३ उत्तम पुरुष ज्ञान वान ४ दूर होना ५ मददगार, साथी.

---

२७ राग जंगला

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे ! (टेक)

झूठ न छोड़ा क्रोध न छोड़ा

सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ १ ॥ नाम०

झूठे जग में दिल ललचाकर

असल वतन क्यों छोड़ दिया ॥ २ ॥ नाम०

कौड़ी को तो खूब सँभाला

लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ॥ ३ ॥ नाम०

जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावे

सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥ ४ ॥ नाम०

खालस इक भगवान भरोसे.

तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ॥५॥ नाम०

२८ गज़ल, झंजोटी

जितना वढ़े वढ़ा ले उलफतं के सिलसले को
वेहरे असीरिये दिल ज़ंजीर है तो यह है
चाहे जो काम्यावी तो क़दर वक़त की कर
तक़दीर है तो यह है तदवीर है तो यह है
जैसा यहां करेंगे वैसा वहां भरेंगे
वस तेरी ख्वावे हस्ती! तावीर है तो यह है
नेकी सदा कीया कर उस की वदी के वदले
क़तलेअदू के क़ाविल शमशीर है तो यह है
पुर्र हिर्स दिल को अपने तू पाक कर हवस से
दुन्या में ऐ मुहव्वस! अकसीर है तो यह है

१ मोह के संवन्ध को. २ दिल के कैद करने के लीये ३ प्रारब्ध ४ पुरुषार्थ ५ स्वप्ना का वृतान्त व भाष्य ६ शत्रू के मारने की लीये ७ तलवार ८ लालची ९ लालच १० लालची, भुख्खा, जिस का दिल कभी न भरे ११ रसायन

जिस से खता[12] हो सदि[13] उस को मुआफ कर दे
इन्सान के गुनाह की तौज़ीर[14] है तो यह है
करती है गुफ़तगू[15] क्यों इसरार[16] ज़ाते हक़[17] में
अक़ले दक़ीक़ः[18] रस की तक़सीर[19] है तो यह है

१२ क़सूर १३ पाप हो जाय, अथवा कीया जाय, १४ सज़ा, दंड
१५ वाणी, .ज़ुवान १६ ज़िद, हठ १७ सत्य स्वरूप १८ गुह्य
भेदों को जानने वाली बुद्धि १९ भूल, क़सूर,

२९

आंख होय तो देख बदन के पर्दे में अल्लाह ।
पर्दे में अल्लाह क़ल्ब[1] को साफ करो वल्लाह ॥ } टेक

जप तप दान यज्ञ तीरथ से यही काम भल्ला[2] ।
अंत समय परमीत[3] साथ न जावे इक छल्ला ॥ १ ॥ आंख.

१ दिल, अन्तःकरण २ अच्छा ३ दूसरे का दोस्त अपना नहीं
अर्थात जो अपने साथ अन्त में संबन्ध न रखे

भव सागर से पार लघाने को सतगुरु मिल्ला।
झूठा है दौरा मुँत मित्र मुफत का रैल्ला ॥ २ ॥ आंख.
"तूं तेरा," "मैं मेरा" स्वप्ने का सा है हँल्ला।
अपना जान सुखी हो जा, है यही नेक सल्लाह ॥३॥ आंख.
अँज अविनाशी आत्म जाने होये खैर सल्लो।
निर्भय ब्रह्म रूप निज जाने हुवा पाक पल्ला ॥४॥ आंख०

४ स्त्री ५ पुत्र ६ झगड़ा, शोर ७ शोर ८ जन्म से रहित ९ उत्तम, शुभ १० शुद्ध,

---

३०

जागो रे संसारी प्यारे। अब तो जागो मेरे प्यारे॥ टेक
घोर अविद्या के वश होकर, स्वामी से तुम भये हो कंकर।
विषयन के कीचर में फंस कर, स्मृत नहीं हो तुम संभारे १.जा०
ज्ञान वड़ाई खोई है तुम ने, झूंटी विद्या पढ़ी है तुम ने।
माया को नहीं चीना तुम ने, अब तो सोचो टुक मेरे प्यारे २जा.

१ होश, अपने स्वरूप का स्मृण २ जाना, पैहचाना, यहां मुराद है क़ाबू (वश) करने से

जिन को नित्य उठ तुम हो गावो, मूरत जिन की होत बनावो।
शिक्षा उन की चित्त में लावो, देखो उन की तरफ निहारे ३
शिव संकादिक जिस को ध्यावें, नेति नेति से वेद लखावें।
मन बुद्ध जा का पार न पावें, वह तुम ही हो मित्र प्यारे! ४ जा०
विष्यन से अब चित्त को खैंचो, प्रेम के जल से ४हीये को सींचो।
ज्योती से मत नैनन मीचो, तुम ज्योतन के ज्योत हो प्यारे ५
महावाक्य को मन में गावो, अहम ब्रह्म यह नित उठ गावो।
ओंकार से अलख जगावो, आनन्द से नहीं तुम हो न्यारे! ६

३ गौर से देखो, सोच विचार कर ४ हृदय ५ चक्षु यहां दिल की आंख से मुराद है ६ वेदबानी अर्थात अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि,

---

३१ ग़ज़ल.

जो मोहन में मन को लगाये हुए है। (टेक)
वो फल मुक्ति जीवन का पाये हुए हैं ॥ १ ॥ जो०
जो बंदे हैं दुन्या के, गंदे सरासर।

१ कृष्ण, मुराद अपने प्यारे स्वरूप से है

वह फंदे में खुद को फंसाये हुए हैं॥ २ ॥ जो०
जो सोते हैं ग़फ़लत में रोते हैं आखिर।
वह खोते रतन हाथ आये हुए हैं ॥ ३ ॥ जो०
खेतर है न यम का न डर मौत ग़म का।
जो मोहन को दिल में बिठाये हुए हैं ॥ ४ ॥ जो०
पकड़ पाया मुर्शिद के दामन को जिस ने।
वह ही है मगन, सब सताये हुए हैं ॥ ५ ॥ जो०

२ डर, भय ३ ब्रह्मनिष्ट गुरू ४ गुरु की बानी, उपदेश से मुराद है.

---

३२ लावनी

चेतो चेतो जल्द मुसाफिर गाड़ी जाने वाली है ।
लाइन किलीयर लेने को तैय्यार गार्ड बन्ना ी है ॥ } टेक

पांच धातु की रेल है जिसको मन अंजन लेजाता है ।
इन्द्री गण के पैयों से वह खूब ही तेज़ चलाता है ॥
मील हज़ारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है ।

कठिन वज्र लोहे जैसा होकर चंचलता दिखलाता है ॥
बड़े गार्ड दम्माली से होती इस की रखवाली है ॥ १ ॥ चे.
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती तुर्या चार मुख्य अष्टेशन हैं ।
आठ पैहर इन ही में विचरे रेल सहित यह अंजन है ॥
कर्म उपासन ज्ञान टिकट घर लेता टिकट हर इक जन है ।
फ़स्ट सैकंड अरु थर्ड क्लास ले जितना पल्ले शुभ धन है ॥
बैठ न पावे हरगिज़ वह नर जो इस ज़रसे खाली है ॥ २ ॥ चे.
रहगीरों के ललचाने को नाना रूप से सजती है ।
तीन घंटिका बाल तरुण और जरा की इस में बजती हैं ॥
तीसरी घैंटी होने पर झठ जगह को अपनी तजती है ।
आते जाते सीटी देकर रोती और चल्लाती है ॥
[illegible] सनातन लाइन छोड़ के निपट बिगड़ने वाली है ३ चे.
पाप पुन्य के भार का बंडल अक्सर साथ ही रखते हैं ।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं ॥
अष्टेशन इस्टेशन पर रागादिक रिपू भटकते हैं ।

१ धन २ बुढ़ापा ३ जल्द ४ नहसारा, दगेबाज़, शत्रू.

पुलिसमैन सद्गुरु उपदेशक रक्षा सब की करते हैं ॥
निर्भय वह ही जाता है जो होवे पूरा ज्ञानी है ॥४॥ चे.

---

३३ (तरज़ लेली मजनूं)

प्रभू प्रीतम जिस ने विसारा । हाय जनम अमोलक
बिगाड़ा ॥ (टेक.)

धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे वेगाना ।
सत्य धर्म को नाहीं विचारा, भूला फिरता है मुग्ध गंवारा[१] ॥१॥ प्र०
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना ।
पुत्र पौत्र और परिवारा[२], कोई संग न चल्लन हारा ॥२॥ प्र०
भ्रात्री भाव न प्रीती प्रसपर, कपट छल है भरा मन अंदर ।
कुछ भी कीया न परउपकारा, खोटे करमों का लीया
अँजारा[३] ॥ ३ ॥ प्रभू०
तेरा योवन और जवानी, ढलती जावे ज्यों वर्फ का पानी ।

१ मूर्ख, आवारह गर्द २ कुटम्भ ३ ठेका.

मीठी नींद में पाओं पिसारा, चिड़यां चुग गयी खेत
तुम्हारा ॥ ४ ॥ प्रभू०

धोके बाज़ी के दाम फैलाये, विषय भोग के चैन उड़ाये ।
पुन्न दान से रह्या नियारा, ऐसे पुरुषों को हो धिक्कारा५ प्र.

जो जो शास्त्र वेद विखाने, मूर्ख उलटा ही उन को जाने ।
समय खोया है खेल में सारा, सतसंग से कीया किनारा६ प्र.

ऐसे जीने पै तू अभमानी, टीला रेत का ज्यों वीच पानी ।
क्यों न गुन अरु कर्म सुधारा, मानुश जन्म न हो बारं-
बारा ॥ ७ ॥ प्रभू०

तेरे करम हैं नौ[५] समाना, जिस में वैठा है तू अज्ञाना ।
गैहरी नद्या है दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा ॥८॥ प्र.

अपने दिल में तू जाग रे भाई, कुछ तो कर ले नेक कमाई ।
संग जाये नहीं सुत दारा[६], सत धर्म ही देगा सहारा ॥९॥ प्र०

४ उपदेश करे ५ बेड़ी, किशती ६ स्त्री पुत्र.

३४ रागनी भिभास ताल तीन

तू कुछ कर उपकार जगत में तू कुछ कर उपकार। टेक.

मानुष जनम अमोलक तुझ को मिले न वारंवार ॥१॥ तू.

सुकृत[1] अपना कर धन संचय यह वस्तू है सार।

देश उन्नती कर पित्री सेवा गुनीयन का सतकार ॥२॥ तू.

शील संतोश परस्वारथ रती[2] दया क्षमा उर धार।

भूखे को भोजन प्यासे को पानी दीजे यथा अधकार ॥३॥ तू.

कठन समय में होवेंगे साथी तेरे स्रेष्ट आचार।

इस लीये इन का कर तूं संग्रेह[3] सुख हो सर्व प्रकार ॥४॥ तू.

होय अज्ञानी कहे वन्दा गन्धः तिस को है धिक्कार।

है ज्ञान ही औशद सब अवेगण[4] की करते वेद पुकार ॥५॥ तू.

१ पुन्य कर्म रूपी धन २ आराम, आनन्द, खुशी ३ एकत्र
४ कुसूर पाप, वेवकूफियां.

---

३५ सोरठ ताल दादरा

राम सिमर राम सिमर यही तेरो कांज[1] है ॥ (टेक)

१ फर्ज़, काम.

माया को संग साग, प्रभू जी की शरण लाग। जगत
सुख मान मिथ्या झूठो ही सब साज है ॥ १ ॥ राम०
स्वप्ने जैसा धन पैहचान, काहे पर करत मान।
वालू की सी भित्त जैसे, वसुधाः को राज है ॥ २ ॥ रा०
नानक जन कहत वात, विनस जाये तेरो गॉत।
छिन छिन कर गयो काल, ऐसे जात आज है ॥ ३ ॥ रा०

२ टुकड़े, शकल, अर्थात् रेत के घर या रेत की दीवारें ३ धन दौलत ४ कवी का नाम है ५ अंग, बल.

३६

हरि नाम भजो मन! रैनं दिना (टेक)
सुन सुन मीता, परम पुनीता, हरि यश गीता, गाये स्वारो-निज जन्मे ॥ १ ॥ हरि० सुत परिवारा, परम प्यारा, नित घरवारा, नाहिं सहारा-समझ मना ॥२॥ हरि०

१ रात दिन २ ऐ प्यारे!

कोई न अंगी, होवे न संगी, सब टल जावें, काम न आवें, कोई जना ॥ ३ ॥ हरि० यह जग सारा, निपट असारा¹, दिन दो चारा, वीतन हारा, कुछ दिन में ॥४॥ हरि० दोलर² माड़ी, छत्र स्वारी, मुनि घरवारी, अन्त समय तज, चल वसना ॥ ५ ॥ हरि० जब लग प्राण, रहें घट अन्दर, बानी सुन्दर, रट मेहमां, हरि लाय मना ॥६॥ ह० किस दे कारण, पाप कमावें, जन्म गंवावें, समय टलावें, समझ विना ॥७॥ हरि० हरि यश गावन, पाप नसावन, धन मन भावन, जोड़ लियो संग जिस चलना ॥८॥ हरि० निश दिन भज हरि, जन्म सफल कर, भव सिन्धू जाय, तर, हरि सहँवास त्र, होय जना ॥ ९ ॥ हरि०

१ सार रहत ४ घड़े २ गुम्मजदार मकान ५ दूर करना ६ दुन्या रूपी समुद्र ७ हरि को घट अन्दर पाकर हरि में सर्वदा स्थिति कर.

३७ रागनी पीलू ताल तीन

नेक कमाई कर ले प्यारे! जो तेरा परलोक सुधारे। टेक.
इस दुन्या का ऐसा लेखा, जैसा रात को स्वप्ना देखा ॥१॥ने.
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आंख खुली तो हाथ न आई॥२॥ने.
कुटुंब कबीला काम न आवे, साथ तेरे इक धर्म ही जावे ३॥ने.
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यहां से कूच करेगा॥४॥ने.
तोशा[1] कुच्छ नहीं सफर है भारा, क्योंकर होगा तेरा गुज़ारा५
अब तक ग़ाफल रहा तू सोया, वक्त अनमोल अकारथ[2] खोया
टेढ़ी चाल चला तूं भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ॥७॥ने.
खूब सोच ले अपने मन में, समय गंवाया मूरख पन में८॥ने.
यदि अब भी नहीं तु यतन करेगा, तो पछताना तुझ को पड़ेगा
कर सत संग और विद्या[3] ध्यैन, तब पावे तू सुख और चैन १०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिस के सिमरे मुक्ति होई ११॥ने
उसी का केवल[4] पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा १२॥

१ रास्ते की खुराक २ बेफायदाः ३ विद्या ज्ञान को पढ़ो ४ सिर्फ, कवी का नाम भी है

३८ राग कुमाच ताल तीन

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है ॥ टेक.

कोई दिगम्बर कोई पीताम्बर, पैहने शाल दोशाला है ॥१॥

कोई भूपति है कोई सैनापति, कोई गडरिया गुवाला है ॥२॥

कोई अंधा कोई लूल्हा लंगड़ा, कोई गोरा कोई काला है ॥३॥

कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मद पी पी मतवाला है ॥४॥

कोई मद पी भंगी चरसी है, कोई पीवे प्रेम प्याला है ॥ ५ ॥

जब तक फिरे न मन का मनका, क्या तसवीह क्या माला है ६

निशदिन भजे जो हरिनारायण को, सोई करने वाला है ॥७॥

१ अमल करने का स्वभाव २ पृथ्वि का राजा ३ स्मरणी जपनी, माला ४ हर रोज़.

---

३९ गज़ल

लगा दिल ईश से प्यारे अगर मुक्ति को पाना है (टेक)

वगरना यासो हसरत के सिवा क्या हाथ आना है ॥१॥ ल०

१ ईश्वर २ ना उमेदी और अफसोस.

यह दुन्या चंदरोज़ाः है यहां रहना नहीं दायम ।
जवान् हो पीर हो तिफलक सभों ने छोड़ जाना है ॥२॥ल०
करोड़ों हो गये योधा जो भारत के सतारे थे ।
निशां उन का कहां वाकी कहां उन का ठिकाना है ॥३॥ल०
बहारे ज़िन्दगी पर किस लीये भूला फिरे नादान् ।
खज़ां को याद रख जिस ने निशां तेरा मिटाना है ॥४॥ल०

३ बहुत स्थिर न रहने वाले ४ हमेशां ५ बच्चा.

---

४० राग भैरो ताल तीन.

(टेक) मन परमात्मन को सिमर नाम । घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निशदिन ॥ स्वांस स्वांस से सिमर नाम ॥१॥म.
घट घट व्यापक अन्तर यामी है, रोम रोम में रम रहे स्वामी ।
अद्वैती ब्रह्म परमात्म पूर्ण है, विश्वंवर वा को नाम ।

१ प्रति दिन २ सिर्फ एक अकेला ३ विश्व को धारन करने वाला.

निरविकार शुद्ध रूप निरंजन, कर वा को पुनि पुनि
प्रणाम ॥ २ ॥ मन०

नित्य पवित्र सृष्टि का कर्ता, दुःख दरिद्र मल मनके हर्ता।
अजर अमर दयालू न्याकारि, करुना सिंधू सरव हितकारी।
मंगल दायक सच्चदानन्द को, भज ले रे नर आठों
याम ॥ ३ ॥ मन०

अन्न धन सब भोग पदारथ, भक्ती मुक्ती दो अर्थ परमारथ।
जो जन गावे धर में पावे, कर भक्ति निष्काम।
अमीचंद प्रभू पूरन करता है, सकल मनोरथ सिध
काम ॥ ४ ॥ मन०

४ रहीम, रैहम करने वाला ५ कवी का नाम है.

वैराग्य.

——:०:——

१ जंगला ताल तिन.

प्रीतम जान लीयो मन मांही (टेक.)

अपने सुख से सब जग बान्धयो को काहू को नाहीं ॥ प्री०

सुख में आन बहुत मिल बैठत रहत चहों दिश घेरे ।

विपंद पड़ी सब ही संग छाडत कोऊ न आवत नेडे ॥ प्री०

घर की नार बहुत हित जां से रहत सदा संग लागी ।

जब ही हंस तजी यह काया प्रेत २ कह भागी ॥ प्री०

जीवत को व्योहार बनयो है जां से नेह लगायो ।

अंत समय नानक बिन हर जी कोई काम न आयो ॥ प्री०

१ तरफ २ तकलीफ या मुसीबत ३ प्यार, स्नेह ४ जीव
५ मोह, प्रेम जिस से लगाया.

२ राग देव गंधारी.

झूठी देखी प्रीत जगत में झूठी देखी प्रीत (टेक.)
मेरो मेरो सब ही कहत हैं हित से बान्धयो चीत ॥ ज०
अपने सुख हित सब जग फांदयो क्या दारा क्या मीत॥ज०
अन्त काल संगी नाहि कोऊ यह अचरज है रीत ॥ ज०
मन मूरख अजहों नाहि समझत सुख दे हारयो नीत ॥ ज०
नानक भवजल पार पड़े जो गावे प्रभु के गीत ॥ ज०

१ प्यार, मोह २ दिल ३ सबब, कारण ४ स्त्री ५ मित्र, दोस्त ६ तरीका ७ अभी तक ८ नित्य, हमेशां सुख का हारा हुवा है ९ संसार समुद्र.

---

३ साकी राग जोगी ताल धुमाली.

जग में कोई नही ज़िन्द मेरीये! हरी बिना रछपाल (टेक)
धन जोड़न नूं बहुत सियांना रैन दिनां यही चिन्ता।

१ ऐ जान मेरी! २ रक्षा करने वाला ३ दाना, अक़ल मंद ४ रात दिन.

अन्त समय यह सब धन तेरा कँदे न होसी मन्ता ॥ जि०
खावँन पीवन दे विच रचँया भूल गया प्रभू अपना ।
यह जिस नू अपना कर जाने होसी रैनें का सुपना ॥ जि०
महल अरुं माड़ी उंचे अटारी है शोभा दिन चारी ।
नाम विना कोई काम न आवे छूटन अन्त दी वारी ॥ जि०
जगत जंजाल तेरे गल फांसी ले सी जान प्यारी ।
हृदय भजन विना इस जग विच सके न कोई उतारी॥जि०
जंगल ढूंडन जा न प्यारे निकट वसे हरी स्वामी ।
तू जाने हरी दूर वसे है वह तो घट घट अन्तर्यामी ॥ जि०
होये अचीत सोवें सुन मूरख! जन्म अकारथ जावे ।
जीवन सफल तदे ही होवे भक्ति हृदय विच आवे ॥ जि०
भक्ति विना सुन्नाँ अंधराना देख देख कर झूरे ।

५ कमी ६ अच्छा फल देने वाला ७ खान पान ८ लग गया, मसरूफ होया ९ रात्री का स्वप्न १० और ११ ऊंचा मकान १२ चार दिनकी शोभा वाली १३ पार उतारना १४ समीप १५ बेखबर, बे होश हो कर सोना १६ बेफायदा १७ घोर अन्धकार

जब मन अन्दर नाम वसे है नर्सन सकेल वसूरे ॥ जि०
अमृत नाम जपे जद प्राणी तृषा सकल मिट जावे ।
तपत हृदय मिट जावे सारी ठंड कलेजे आवे ॥ जि०

१८ आगे १९ तमाम २० तकलीफ, दुःख.

---

४ साकी राग कालंगड़ा.

यह जग स्वप्ना है रंजनी का, क्या कहे मेरा मेरा रे (टेक)
मात तात सुत दारा मनोहर, भाई वन्धु अरु चेरा रे ।
आपो अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ॥१॥ यह.
जिन के हेत करत धन संचय, कर कर पाप घनेरा रे ।
जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे॥२॥यह.
ऊंचे ऊंचे महल वनाये, देश दिगंतर घेरा रे ।
सब ही ठाठ पड़ा रह जावत, होत जंगल में डेरा रे ॥३॥ यह.
अतर फुलेल मले जिस तन को, अंत भस्म की ढेरा रे ।
ब्रह्मानंद स्वरूप विन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे॥४॥यह.

१ रात २ पिता ३ बेटा ४ स्त्री ५ शिष्य ६ कारण ७ अकट्ठा जमा करना ८ बहुत.

५ राग धनासरी.

जीवत को व्योहार जगत में, जीवत को व्योहार (टेक)
मात पिता भाई सुत[1] वान्धव, अरु निज[2] घर की नार ॥ जग०
तन से प्राण होत जब न्यारे, तुरत[3] प्रेत पुकार ॥ जग०
अर्ध घड़ी कोई नहीं राखे, घर से देत निकार ॥ जग०
मृग तृष्णा[4] ज्युं रहे जगरचना, देखो हृदय विचार ॥ जग०
जन नानक यह मत संतन को, देख्यो ताहिं पुकार ॥ जग०

१ बेटा २ अपनी ३ फौरन, जलदी ४ रेत जो पानी नज़र आवे.

---

६ राग मारू.

जिन्हां[1] घर झूलते हाथी हज़ारों लाख थे साथी । } टेक.
उन्हां को खा गयी माटी तू खुश कर नींद क्यों सोया }
नक़ारह कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे ।
ज्यों सावण मेघरा गाजे, तूं खुश कर नींद क्यो सोया ॥१॥
कहां गये खानू[2] मद माते, जो सूरज चांद चमकाते ।

१ जिन के २ बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मर्तबा वाले खानू साहिब.

न देखे कहां जी वह जाते, तूं खुश० ॥ २ ॥
जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा मुख पान और बीड़े।
उन्हां नूं खा गये कीड़े, तूं खुश० ॥ ३ ॥
जिन्हां घर पालकी घोड़े, ज़री ज़रवफत के जोड़े।
वुही अब मौत ने तोड़े, तूं खुश० ॥ ४ ॥
जिन्हां दे बाल थे काले, मलाईयां दूध से पाले।
वह आखर आग में डाले, तूं खुश० ॥ ५ ॥
जिन्हां संग प्यार था तेरा, उन्हां कीया खाक में डेरा।
न फिर वह करनगे फेरा, तूं खुश० ॥ ६ ॥

---

७ रागिन झुंढंस ताल धीमा.

ऐथे[1] रहना नाहिं मत खरमस्तीयां कर ओ (टेक)
तन मद[2] धन मद और राज मद। पी कर मस्ती न कर ओ १ ऐ.
कैरव पांडव भोज और विक्रम। दस कहां गये किधर ओ २ ऐ.
राम चंद्र लङ्केश[3] भवीक्षन। लङ्का को गये खाली कर ओ ३ ऐ.

१ इस जगह २ अहंकार ३ लंका का मालक, रावण

कालवारन्ट नकाल अचानक। तुर्त ले जासी फड़ ओ ४ ऐ.
साथ न जासी संपत तेरे। ज़ब्त हो जासी घर ओ ५ ऐ.
मर्घट दे विच मिलसी भूमी साढ़े तीन हाथ भर ओ ६ ऐ.
यह देह खेहं हो जासी पल विच। रूप जोवन जर ओ ७ ऐ.
अमीर कँवीर न वाचिया कोई, मौत नूं दे कर ज़र ओ ८ ऐ.

४ धन दौलत ५ राख ६ मुरझाना ७ बड़ा पुरुष, कवि का नाम है ८ धन दौलत.

---

८ राग पहाड़ी.

धन जन योवन संग न जाये प्यारे! यह सब पीछे रहजावें॥ (टेक)

रैनें गंवाई देह नसौंरे प्यारे खा कर दिवस गंवाये।
मानुष जनम अकारथ खोया मूर्ख समझ न आवे॥१॥ध०
धन कारण जो होवे दीवाना चारों दिशा को धावे।
राम नाम कभी न सिमरे सो अंते पछतावे॥ २॥ धन०

१ पुरुष २ रात ३ खोये ४ दिन ५ आखर में.

मीती सहत मिल आवो रे साधो ईश्वर के गुण गावें।
जिस के कीये सदा शुभ होवे तिस को काहे भुलावें ॥३॥४०

६

इस तन चलना प्यारे! कि ढेहरा जंगल में मलना (टेक)
सूरत योवन भी चल जांदा कोई दिन दा ढोल वजांदा।
आखर माटी में मलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ १ ॥
सब कोई मतलब दा है वेली तेरी जासी जान अकेली।
ओड़क वेला नहीं टलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ २ ॥
यह तो चार दिनां दा मेला रहना गुरू न रहना चेला।
इस तन आतैश में जलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ३ ॥
जिस नूं कहें तू मेरी मेरी यह नहीं मेरी है न तेरी ॥
इस ने खाक विपे रलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ४ ॥
यह तन अपना देख न भुल रे विन ईश्वर के फँना है कुल रे।

१ प्यारा २ समय, वक्त ३ अग्नि ४ खाक के बीच ५ नाशवान

प्रभु दे भजन विना गलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ५॥
मिट्ठा बोल हथ्थों कुच्छ दे ले नेकी कर ज़िंदगी दा है वेला ।
पिच्छों किसे नहीं घलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ६ ॥

६ हाथ से ७ भेजना.

---

१० ग़ज़ल.

हाये क्यों ऐ दिल! तूझे दुन्या-ऐ-दूं से प्यार है ।
भूल कर हक़ को तेरी क्यों इस तरफ रफतार है ॥१॥
कारे दुन्या में है रहता हर घड़ी चालाको चुस्त ।
पर भजन में सर्वदा सुस्त क्यों रफतार है ॥ २ ॥
क्या तुझे जज़बात की सेरी का हि रहता है ध्यान ।
उन पै ग़ालब आना क्यों तेरे लीये दुशवार है ॥ ३ ॥
ख्वाहश के पीछे क्यों फिरता है मारा रोज़ो शब ।

१ घर बार, और दुन्या के विषय उस के मोह २ ईश्वर, सत्य ३ गति ४ व्योहारक काम, व्योपार इत्यादि ५ विषयकी चटक या लज्ज़त ६ भरना दिल का, सन्तुष्ट ७ मुशकल ८ दिन रात.

क्या यही दुन्या में तुझ को एक बाक़ी कार है ॥ ४ ॥
भागता है नेक सोहबत से दिलाँ किस वास्ते ।
वह तो मिसले[11] डाक्टर है और तू बीमार है ॥ ५ ॥

९ काम १० ऐ दिल ! ११ डाक्टर के सदृश.

११

मान मन क्यों अभिमान करे (टेक.)
योवन धन क्षनभंगुर तिन पै काहे मूढ़ मरे ॥१॥ मान०
जल बिच फेन बुदबुदा जैसे छिन्न छिन्न वन विगड़े ।
त्यों यह देह खेह होय छिन में बहुर न दीख परे ॥२॥ मान०
मंदर मैहल वैहल रथ वाहन यहीं रह जात धरे ।
भाई बन्धु कोई संग न लागे न कोई साख भरे ॥३॥ मान०
चाम के देह से नेह लगाये उस बिन नाहिं टरे ।
धृक् तो को अरे! अति सुंदर हरि! ताकी सुध ना करे ॥४॥

१ फिर २ स्वारी ३ मुराद है कि कोई साथ न रहे और न कोई मदद करे ४ प्यार

हरि चर्चा सत सेवा अर्चा इन ते निपट डरे।
कूकर सूकर तुल्य भोग रत अंध होय विचरे ॥५॥ मान०

५ पूजा.

१२

नहीं जो खोर से डरते वही उस गुल को पाते हैं।
मिला मिट्टी में अपने आप को खिरमन उठाते हैं॥
नशां पाते हैं पैहले जो नशां अपना मटाते हैं।
खुद अपना नाश करके वीज फिर फल फूल पाते हैं॥
जिन्हें बन्दों से भीती है वही साहिब को भाते हैं॥

१ कांटा २ पुष्प ३ फसल का अनाज ४ पसिन्द आना.

---

१३ गज़ल.

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम यह दुन्या छोड़ जाना है।
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अंदर समाना है॥ } टेक.

१ ऐ दिल !

बदन नाज़ुक गुलों जैसा जो लेटे सेज फूलों पर ।
होवेगा एक दिन मुरदा यही कीड़ों ने खाना है ॥ १ ॥
न बेली होयगा भाई न बेटा बाप ना माई ।
क्या फिरता है सौदाई अमल ने काम आना है ॥ २ ॥
पियारे नज़र कर देखो पड़ी जो माड़ियां खाली ।
गये सब छोड़ फानी देह दगाबाज़ी का बाना है ॥३॥
पियारे नज़र कर देखो न खेशों में नहीं तेरा ।
ज़नो फर्ज़न्द सब कूकें किसे तुझ को छुड़ाना है ॥ ४ ॥
तमामी रैन ग़फ़लत में गुज़ारे चार पाई पर ।
गुज़ारे रोज़ खेलों में नज़र कर क्यों गंवाना है ॥५॥
ग़लत फ़हमी यहि तेरी नहीं आराम है इस जाः ।
मुसाफर बेवतन तू है कहां तेरा ठिकाना है ॥ ६ ॥

२ पुष्प, फुल ३ संबन्धी, रिश्तेदार ४ स्त्री, पुत्र ५ रात ६ बे समझी ७ स्थान, मुराद है दुन्या से.

१४.

चपल मन मान कही मेरी, न कर हरि चिन्तन में देरी (टेक)
लख चौरासी योनि भुगत के यह मानुष्य तन पायो।
मेरी तेरी करते करते नाहक़ जन्म गमायो ॥ १॥ चपल०
मात पिता सुत भ्रात नारि पति देखन ही के नाते।
अंत समय जब आय अकेला तो कोई संग नहीं जाते ॥२॥ च०
दुन्या दौलत माल खज़ाने व्यंजन[1] अधिक सुहाने।
प्राण छूटें सब होयें पराये मूरख मुफत लुभाने[2] ॥ ३ ॥ च०
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों बड़े लुटेरे।
इन से बचने के लीये तूं हरि चरणन चित्त दे रे ॥४॥ च०
योग्य यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद बताये।
हरि सुमृण सम एक हु नाहिं, बढ़ भाग्य, जो पाये॥५॥ च०

१ ज़िवायश २ मोह लेने वाले, लुभायमान

१५.

इस माया ने अहो कैसा भुलाया मुझ को। (टेक)
झूठे संसार के फंदे में फंसाया मुझ को ॥ १ ॥ इस०
नूर जिस प्यारे का रौशन है हरेक ज़र्रे में।
ख्वाब में भी न वह दिलदार दिखाया मुझ को ॥२॥इस०
दिल के आईने[1] में तस्वीर सुनी थी उस की।
सैंकड़ो कोस मगर मुफत घुमाया मुझ को ॥ ३ ॥ इस०
सुन लीया दर्श वह देता है सिरफ प्रेमी को।
युंहि तप जप में कैई साल भ्रमाया मुझ को ॥ ४ ॥ इ०

१ शीशा.

१६.

दुन्या के जंगलों में है यह दिल भटक रहा।
अटका यहां जो आज तो कल वहां अटक रहा ॥१॥
मंदर में फंस गया कभी मसजद में जा फंसा।
छूटा जो यहां से आज तो कल वहां अटक रहा ॥२॥

हिन्दू का और किसी को मुस्लमान का गरूर।
ऐसे ही वाह्यात में हर इक भटक रहा ॥ ३ ॥
वह हर जगह मौजूद है जिस की तलाश है।
आंखों के आगे परदाः-ए-ग़फ़लत[1] लटक रहा ॥ ४ ॥
गुलेज़ार[2] में है गुल में है जंगल में वैहर[3] में।
सीनाः में सिर में दिल में जिगर में खटक रहा ॥ ५ ॥
ढूंडा है उस को जिस ने उसे आन कर मिला।
अटका जो उसकी राह से उस से अटक रहा ॥ ६ ॥
सिदक़[4] और यक़ीन के बिन दिल्बर मिले कहां।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ॥ ७ ॥
यार! उमेद एक पे रख दिल को साफ कर।
क्या विसवसा[5] का कांटा है दिल में खटक रहा ॥८॥

१ सुस्ती (अविद्या) का पर्दा २ बाग़ ३ समुद्र ४ शुद्ध हृदय
५ संशय, शुबा, शक.

१७ राग खमाच ताल ३.

चंचल मन निशदिन भटकत है, ।
एजी भटकत है भटकावत है ॥ टेक ॥
ज्यों मर्कट तरु ऊपर चढ़ कर ।
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०
रुकेत यतन से क्षण विषयण ते ।
फिर तिन हीं में अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०
काच के हेत लोभ कर मूरख ।
चिंतामणि को पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०
ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर ।
तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ ४ ॥ चंचल०

१ हर रोज़ २ कपि, बन्दर ३ रुक कर, रुका हुवा होकर
४ गट गट कर पी रहा है.

१८ झंझोटी ठुमरी ताल ३.

भजन विन विरथा जनम गयो ॥ टेक ॥

वालपनो सब खेल गमायो, योवन काम वह्यो[1] ॥१॥ भ०

बूढे रोग ग्रसी सब काया, पर[2] वश आप भयो ॥२॥ भ०

जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरिनाम लयो ॥३॥ भ०

ऐ मन! मेरे विना प्रभु सिमरण, जा कर नरक पयो ।४। भ०

१ विशय वासना में वैह गया २ दूसरे के वश में, दूसरे के सहारे.

---

१९ भैरवी ताल ३.

मेरो मन रे! राम भजन कर लीजे ॥ टेक ॥

यह माया विजली का चमका रे यामें चित नहीं दीजे ॥१॥

फूटे घट में जल न रहावे रे, पल पल काया[1] छीजे ॥ २ ॥

सबहिं ठाठ पडा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे ॥ ३ ॥

इह कारण करो हरि सुमरण रे, भवजल[2] पार तरीजे ॥ ४ ॥

१ शरीर २ संसार समुद्र.

---

२० धनासरी.

मेरो मन रे भज ले कृष्ण मुरारी (टेक)
चार दिनन के जीवन खातर रे कैसी जाल पसारी ।
कोई न जावत संग तुम्हारे रे मात पिता सुत[1] नारी ॥ कृ०
पाप कपट कर संचित[2] धनको रे मूरख मौत विसारी ।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ रे, देत वृथा किम डारी ॥ मे०

१ बेटा २ जमा, इकठ्ठा.

---

२१ भैरवी.

सुनो नर रे राम भजन कर लीजे (टेक)
यह माया विजली का चमका रे, या में चित्त न दीजे ।
फूटे घट[1] में जल न रहावे रे, पल पल काया[2] छीजे[3],
सबही ठाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे ।
ब्रह्मानंद रामगुण गावो रे, भवजल[4] पार तरीजे ॥ भजन०

१ घड़ा २ शरीर ३ मुरझाना. घटना ४ दुन्या रूपी समुद्र.

२२ राग धनासरी ताल धुमाली.

रचना राम वनाई रे सन्तो ! रचना राम वनाई ॥ टेक.॥
इक विनसे इक अस्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ॥ रे
काम क्रोध मोह मत्सर लालच, हरी सुरता विसराई ॥ रे०
झूठा तन साचा कर मान्या, ज्युं सुपन रैने में आई ॥ रे०
जो दीखे सो सकल विनासे, ज्युं वादर की छाई ॥ रे०
नाम रूप कछु रेहन न पावे, खिन में सर्व उड़ जाई ॥ रे०
जिस प्यारे हरि आप पिछाना, तिस सव विध वन आई ॥ रे०

१ नाश होना २ अहंकार, ग़रूर ३ हरि की सुरती, ध्यान ४ स्वप्न, ख्वाव ५ रात ६ सव नाश होवे ७ वादल ८ तरह.

---

२३ राग सावन ताल दीपचंदी.

मना ! तैं ने राम न जान्या रे (टेक.)
जैसे मोती ओस का रे तैसे यह संसार।
देखत ही को झिलमैला रे जात न लागी वार ॥ मना०

१ हे मन ! २ शबनम, माक़ तरेल ३ चमकता रे ४ जाती दफ़ा

सोने का गढ़ लङ्क बनायो सोने का दरबार।
रत्ती इक सोना न मिला रे रावण मरती बार॥ मना०
दिन गँवाया खेल में रे रैण गंवाई सोय।
सूर दास भजो भगवन्ता होनी होय सो होय॥ मना०

देर नहीं लगाता ५ सोने की लंका ६ खोया ७ रात ८ भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे)

---

२४ राग नट नारायण ताल दादरा.

मनुवा रे नादान ज़री मान मान मान (टेक)
आत्म गंग संग जंग विष्टा में ग़लतान। मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के तू क्यों हुवा हैरान। मनुवा रे०
शङ्कर शिव स्वरूप त्याग शव न बन री जान। मनु०

१ हे मन! २ कम समझ ३ ज़रा सा ४ जैसे गंगा के साथ पत्थर वहाओ में लड़ाई करते हैं ऐसे तू विष्टा में (ग़र्क़) ग़ल्तान हो कर आत्म रूपी गंगा के साथ युद्ध कर रहा है ५ मुर्दा

उदय अस्त राज तेरा तीन लोक साज तेरा फैंक दे अज्ञान। म-
हाय ब्रह्मघात करके करे तू खान पान। मनुवा रे०
तू तो रवी रूप राम शोक मोह से काहे काम तिमिर की
सन्तान। मनुवा रे०

६ पूरब पच्छम (पश्चिम) तक राज तेरा ७ आत्म हत्या
८ खाना पीना ९ सूरज १० अन्धकार, अर्थात् यह शोक मो-
हादि सब अन्धकार की ११ उलाद, कबीला, टब्बर हैं.

---

२५ राग नट नारायण ताल दादरा.

मनुवा वे मदारिया नशंग बाज़ी ला (टेक.)
नेशंग बाज़ी ला वे नहंग बाज़ी ला॥ मनुवा वे०
महल अरु माड़ी उच अटारी दम भर दे विच ढाँ॥मनु०
झगड़े झांजे सब कर कोतांः अपने आप में आ॥ मनु०

१ निर्भयता से २ शर्म रहत होकर ३ ऐ मदारी या
जादूगर मन ४ गिरा दे ५ छोटे, कम अर्थात फैसल करदे.

२६ होरी राग जिला काफी.

जीओ तोकुं समझ न आई, मूरख तैं उमर गंवाई (टेक)
मात पिता सुत[2] कुटुंब कबीलो, धन जोवन ठकुराई[3] ।
कोई नहीं तेरो तूं न किसी को, संग रह्यो ललचाई,
उमर में तैं धूल उड़ाई—जीआ तोकुं० १.
राग द्वेष तूं किन से करत है एक ब्रह्म रह्यो छाई ।
जैसे स्वान[4] रहे काच भुवन[5] में, भौंक भौंक मर जाई ॥
खबर अपनी नहीं पाई—जीआ तोकुं० २
लोभ लालच के बीच तूं लटकत, भटक रह्यो भरमाई ।
तृषा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गंवाई ॥
श्याम को जान ले भाई—जीआ तो कुं० ३
अगम[6] अगोचर[7] अकलंक[8] अरूपी[9], घट घट रहत समाई ।
सूरश्याम प्रभु तिहारे भजनविन, कबहु न रूप दिखाई ॥

१ ऐ दिल २ वेटा ३ मलकीयत, बड़ा दरजा ठाकुरपन ४ कुत्ता ५ शीशे का महल ६ न हिलनेवाला ७ जो इंद्रियोंकी पहुंच से परे ८ कलंक रहित ९ रूप रहित

श्याम को औ लेंखो संदाई—जीआ तो कुं० ४

१० पाओ समझो ११ सर्वदा हमेशा.

---

१७ राग सिंदोरा ताल दीपचंदी.

गुज़ारी उमर झगड़ों में बगाड़ी अपनी हालत है।
हुवा खारज अपील अपना .अजायब यह वकालत है॥
मुक़दमें ग़ैर लोगों के हज़ारों कर दीये फैसल।
न देखा मिसल अपनी को .अजायब यह .अदालत है॥
दलीलें दे के ग़ैरों पर कीया साबत असूल अपना।
दिल अपने का न शक टूटा .अजायब यह दलालत है॥
बहुत पढ़ने पढ़ाने से हूवा सब .इल्म में कामल।
न पाया भेद रब्बी का .अजायब यह कमालत है॥
बना हाफ़ज़ पढ़े मसले सुनाये दूसरों को भी।
वेले टूटा न कुफर अपना .अजायब यह मसालत है॥

१ दलील बाज़ी २ सम्पन्न, पूरा ३ मददगार स्वस्वरूप, (आत्मा) ४ किन्तु, लेकिन ५ प्रमाण मसले पढ़ के सुनाना

तू कर फैसल हसाव अपना तुझे औरों से क्या गोविन्द[६]
न क़िस्सा .तूल[७] दे इतना फ़ज़ूल ही यह तुवालत[८] है ॥

६ कवी का नाम ७ लम्बा ८ लम्बा ज़िकर बढ़ाना.

---

२८ राग खमाच ताल दादरा.

तेर[१] तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या,
जानयो अपनों आप तो वेद पुराण क्या,
खुद मस्ती कर मस्त तो फिर मदरा पान क्या,
किंचा देहाध्यास तो आत्म ज्ञान क्या,
वीत[२] राग जब भये तो जगत की लोड़ क्या,
तृणवत जानयो जगत तो लाख क्रोड़ क्या,
चाह[३] रजू से बन्धयो तो फिर मरोड़ क्या,
किंचा भ्रान्ति साथ तो विवाद[४] फिर होर[५] क्या,

१ बहुत भारी २ राग रहत ३ चाह (ख्वाहश) की रस्सी
४ झगड़ा ५ और अधिक, दूसरा.

२१.

यह पीठ अजब है दुन्या की और क्या क्या जिन्स अकट्ठी है,
यां माल किसी का मीठा है और चीज़ किसी की खट्टी है,
कुच्छ पकता है कुच्छ भुनता है पकवान मिठाई फट्टी है,
जब देखा खूब तो आखर को न चूल्हा भाड़ न भट्टी है,
ग़ुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को यह धोखे की सी टट्टी है॥ १

कोई ताज खरीदे हंस हंस कर कोई तखत खड़ा बनवाता है,
कोई रो रो मातम करता है कोई गोर[2] पड़ा खुदवाता है,
कोई भाई बाप चचा नाना कोई बाबा पूत कहाता है,
जब देखा खूब तो आखर को नहीं रिश्तः[3] है नहीं नाता है,
[4]ग़ुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोखे की सी टट्टी है॥ २

कोई बाल बढ़ाये फिरता है कोई सिर को घोट मुंडाता है,
कोई कपड़े रंगे पैहने है कोई नंग मनंगा आता है,

१ मंडी २ क़बर ३ समबन्ध ४ शोर शराबा.

कोई पूजा कथा बखाने है कोई रोता है कोई गाता है,
जब देखा खूब तो .आखर को सब छोड़ अकेला जाता है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोखे की सी टट्टी है ॥ ३
कोई टोपी टोप .सजाता है कोई बांद फिरे .अँमामा है,
कोई साफ बरहना फिरता है नै पगड़ी नै पाजामा है,
कमख़ाब गज़ीं और गाढ़े का नित कज़ीया है हंगामा है,
जब देखा खूब तो आखर को न पगड़ी है न जामा है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोके की सी टट्टी है ॥ ४

५ पगड़ी ६ नंगा ७ नहीं ८ झगड़ा ९ लड़ाई.

३०

जो खाक से बना है वह आखर को खाक है ॥ टेक ॥
दुन्या से जबकि: औलिया अरु अंबीया उठे ।

१ बड़े बड़े पैग़म्बर, ऋषी २ नबी लोग, बड़े बड़े आत्म ज्ञानी महात्मा.

अजसाम पाक उन के इसी खाक में रहे।
रूहें हैं खूब जान में रूहों के हैं मज़े।
यह जिस्म से तो अब यही साबत हुवा मुझे ॥जो०॥१

वह शख्स थे जो सात विलायत के बादशाह।
हशमत में जिन की अर्श से ऊंची थी बारगाह।
मरते ही उन के तन हुवे गलीयों की खाके राह।
अब उन के हाल की भी यही बात है गवाह ॥जो०॥२

किस किस तरह के हो गये महबूब कजकुलाह।
तन जिन के मिसले फूल थे और मुंह भी रश्के माह।
जाती है उन की क़बर पे जिस दम मेरी निगाह।
रोता हूं जब तो मैं यही कह कह के दिल में आह॥जो०॥३

३ जिस्म की जमा, शरीर ४ जीवात्मा ५ इज़्ज़त, मरतबा, विभूती ६ आकाश ७ रास्ते की धूल (मिट्टी) ८ प्यारे माशूक़ ९ टेहड़ी टोपी पैहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष अपनी सौन्दयर्ता को वढ़ाने के लीये पैहना करते है १० मानन्द, सादृश्य. ११ चांद से ईर्शा करने वाला, अर्थात चांद से भी अति सुंदर

भक्ति अथवा इशक़.

१ राग भैरवी ताल दादरा.

.अक़ल के मदरसे से उठ .इशक़ के मैकदे में आ ।
जामे शराबे बेखुदी अब तो पीया जो हो सो हो ॥ १
लौंग की आग लग उठी पम्बा सां सब जल गया ।
रखते वजूद ओ जान ओ तन कुच्छ न बचा जो हो सो हो ॥ २
हिजर की जम मुसीबतें .अर्ज कीं उसके रूबरू ।
नाज़-ओ-अदा से मुस्का कहने लगा जो हो सो हो ॥ ३

१ (प्रेम के) शराब खाना २ बेखुदी की शराब का प्याला ३ प्रेम की लाग (लटक) ४ रूयी के फम्बे की तरह ५ प्राण और तन रूपी सब असबाब ६ शरीर और प्राण (रूपी असबाब कुच्छ न बचा) ७ जुदायेगी ८ नाज़ और नखरे से ९ हस कर.

इशक़ में तेरे कोहे ग़म सिर पै लीया जो हो सो हो।
ऐश-ओ-नेशाते ज़िन्दगी सब छोड़ दीया जो हो सो हो॥४
दुन्या के नेकओ बद से काम हम को न्यां ज़ कुच्छ नहीं।
आप से जो गुज़र गया फिर उसे क्या जो हो सो हो॥५

१० ग़म या शोक का पहाड़ ११ ज़िन्दगी की खुशी आनन्द १२ अच्छे और बुरे १३ कवि का नाम १४ जान हथेली पर रखे रखना, अर्थात जो अहंकार को मारे हुए हो अपने आप से गुज़र चुका है॥

---

२. राग खमाच ताल दादरा.

१ कलीदे इश्क़ को सीने की दीजीये तो सही। टेक.
मचा के लूट कभी सैर कीजीये तो सही॥
२ करो शहीद खुदी के स्वार को रो कर।
यह जिस्मे दुलदुले बेयार कीजीये तो सही॥

१ प्रेम की कुंजी २ दिल ३ अहंकार ४ उस घोड़े को कहते जो हसन हुसेन [मुसलमानो के पैगम्बर] की लड़ाई में मरने के पश्चात अपने स्वार से खाली घर में आगया था जिस खाली घोड़े को लड़ाई से वापस आते देखकर उसके [हसन के] सम्बन्धी रोये.

३ जला के खानाओअस्बाब मिस्ल नीरो के ।
मज़ा सोदँ का शोलों का लीजीये तो सही ॥
४ है खुम तो मे से लबालब यह तिशनां कामो क्यों ।
लो तोड़ मोहरे खुदी मे भी पीजीये तो सही ॥
५ उड़ा पतंग महब्बत का चर्ख से भी दूर ।
खिरद की डोर को अब छोड़ दीजिये तो सही ॥
६ मज़ा दिखायेंगे जो कहदो राम मैं ही हूं ।
ज़मीन ज़मान को भी यूं राम कीजीये तो सही ॥

५ घर, जायदाद ६ एक बादशाह का नाम है जो अपने मुलक को आग लगा कर खुद पहाडी पर चढ़ कर दूर से लोगों को जलते हूये देखकर अत्यन्त खुशी मनाया करता था और खुद राग रंग में लगा रहता था ७ राग और आग का ८ मटका ९ शराब १० पियासा गला ११ आकाश १२ अकल १३ राम स्वामी जी का तखल्लुस १४ ताबियादार, गुलाम.

——:०:——

१ दिल को प्रेम की कुंजी तो दो और अन्दर के खज़ाना की लूट मचार कर कभी सैर तो करिये,

२ देह का स्वार जो अहंकार [इस को] मार कर शहीद [जीवन मुक्त] तो करो और शरीर को स्वार रहत घोड़े की तरह करिये.

३ नीरो बादशाह की तरह अपना घर बार अस्वाब [कुल अहंकार के मुल्क को जला कर] [अपने स्वरूप की पहाड़ी पर चढ़ कर] इस आग का और अपने [स्वरूप के] राग रंग का मज़ा तो लो.

४ दिल रूपी मटका [आत्मानंद रूपी] शराब से लबालब भरा हूवा पास है तो फिर प्यासा गला क्यों रखना इस अहंकार की मोहर को तोड़ कर शराब भी पीजीये तो सही.

५ प्रेम का पतंग [.आशक़ दिल] आकाश से भी दूर उड़ गया अब .अक़ल की रस्सी को ढीला छोड़ देना चाहिये ताकि प्रेम में मैह्व [मगन] हुवा दिल फिर .अक़ल होश में न आजावे.

६ आत्मानन्द [मज़ा] ख़ुब दखायंगे [अनुभव होगा] अगर आप ख़ुद मनन करो "कि राम मैं ख़ुद हूं" ऐसे अभ्यास से कुल देश काल को अपना गुलाम ताबियादार कीजीये तो सही.

३. राग भैरवी ताल दादरा.

ऐ दिल तू राहे.इश्क में मरदाना हो मरदाना हो।
क़ुर्बान कर अपनी जान को जानाना हो जानाना हो ॥१॥
तू हज़रते इनसान है लाज़म तुझे ईर्फ़ांन है।
हरगिज़ न तू हैवान सा दीवाना हो दीवाना हो ॥२॥
हर ग़म से तू आज़ाद हो खुर्सन्द हो और शाद हो।
हर दो जहां के फिकर से बेगाना हो बेगाना हो ॥३॥
कर तर्क ज़ोहद ज़ोहदा मजलस नशीं रिंदो का हो।
दीवानगी से दरगुज़र फरज़ाना हो फरज़ाना हो ॥४॥
मैं तू का मनशा .अक़ल है लाज़म है तुझ को क़ादरी।
पी कर शराबे बेखुदी मस्ताना हो मस्ताना हो ॥५॥

१ प्रेम के रास्ते में २ .आशक़ अर्थात जान देने वाला ३ आत्म ज्ञान ४ पागल ५ आनन्द ६ खुश ७ फिकर रहत हो ८ तप तपस्स्या ९ तपी, कर्म कांडी १० मस्तों की सभा में बैठने वाला बन ११ पगलापन या बेवकूफी १२ आत्मवित, अक़ल-मन्द १३ कवी का नाम है.

८४. लावनी स्वैया.

समझ बुझ[1] दिल खोज प्यारे .आशक़ हो कर सोना क्या॥
जिन नैनों से नींद गंवाई तकिया लेफ बछौना क्या ॥
रूखा सूखा राम का टुकड़ा चिकना और सलूना क्या ॥
पाया है तो कर ले शांदी[2] पाई पाई पर खोना क्या ॥
कहत कुमाल[3] प्रेम के मार्ग[4] सीस दिया फिर रोना क्या ॥

१ दिल में विचार कर के २ खुशी ३ कवी का नाम ४ रास्ता.

---

५ राग आसावरी ताल तीन.

करूं क्या तुझ को मैं बादे वहार ॥ टेक. ॥
आग लगे उस गुले गुलज़ान[1] को पास न होवे मेरा यार ॥ क०
लकड़ी जल कोयला भयी रे कोयला जल भयी राख ।
मैं पापन ऐसी जली रे कोयला भयी हूं न राख ॥ करूं०
कागा[2] कुरंग[3] न छेड़ियो रे सब चुन खायो मास ।
दो नैनन[4] मत छेड़ियो रे पीया मिलन की आस ॥ करूं०

१ बाग़ के फूल २ कौवा ३ आंखका ढेला या आंखकी पुतली ४ आंखें.

नैनन की कर कोठरी रे पुतली दियों रे बछा।
पलकन की चिक तान के रे साजन लीयो रे बुला॥करूं०
आई वसन्त खिले हैं गेसू और कंवल के फूल।
भंवर तो सारे शांद हुए हैं दिल मेरा है मर्लूल॥करूं०

५ खुश ६ उदास.

---

६. साकी राग जोगी.

मेरे राना जी मैं गोविन्द गुण गाना॥ टेक.॥
राजा रूठे नगरी राखे वह अपनी, मैं हर रूठे कहां जानां॥मे०
डबिया में काला नाग जो भेजियो, मैं ठाकर करके माना॥मे०
राना ने भेजियो ज़हर प्यालड़ा, मैं अमृत कर पी जाना॥मे०
भयी रे मीरां प्रेम दीवानी, मैं सांवरया वर पाना॥मे०

१ नाराज हो तो २ पियाला ३ पागली.

राग खमाज ताल दादरा.

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई (टेक.)
माता छोडी पिता छोडे छोड़े सगा सोई ।
साधू संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ अब तो० १
संत देख दौड़ आई जगत देख रोई ।
प्रेम आंसू डार डार अमर[1] बेल बोई ॥ अब तो० २
मारग में तारण[2] मिले संत राम दोई ।
संत सदा शीश[3] पर राम हृदय होई ॥ अब तो० ३
अंत में से तंत[4] काढ़यो, पिछे रही सोई ।
राणे भेज्यो विष[5] का प्याला, पीते मस्त होई॥ अब तो०
अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी सो होई॥अब तो० ५

१ सर्वदा रहने वाली २ पार करने वाले, बचाने वाले, तैराने वाले ३ सिर ४ तत्त्व, सत्य वस्तु से मुराद है ५ ज़हर.

८. राग कालंगड़ा ताल धुमाली.

माई मैंने गोविन्द लीना मोल (टेक.)

कोई कहे हलका कोई कहे भारी, लीया तराजू तोल॥मा०

कोई कहे सस्ता कोई कहे महंगा, कोई कहे अनमोल[1] ॥ मा०

विन्द्रा बन की कुंज गली में, लीया बजा के ढोल ॥ मा०

मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्व जन्म के बोल ॥ मा०

१ बे कीमती.

९. देश ताल तेवरा.

१. जूंही आमदे आमदे इश्क़ का मुझे दिल ने मुज़दहा

सुना दीया।

दिलेदों हवासो शकेब ने युहीं कूसे कूच बजा दीया।

२. जिसे देखना ही मुहाल था न था जिस का नामो नशां कहीं

सो हर एक ज़र्रे में इश्क़ ने मुझे उस का जलवा दखा दीया

१ प्रेम का आना २ खुश खबरी ३ अकल अरु होश ४ नक्कारा चलने का ५ मुशकल.

३ करूं क्या बियान मैं हमनशीं[6] असर उस की लुतफे निगह का
कि तअ़य्युनात[7] की क़ैद से मुझे एक दम में छुड़ा दीया ॥

४ वह जो नक़्शेपा की तरह रही थी नमूद अपने वजूद[8] की ।
सो कशश से दामने नाज़[9] की उसे भी ज़मीन से मटा दीया ॥

५ तेरी नासिहों[10] यह चुनां[11] चुनीं कि है ख़ुद पसन्दी के संवे क़रीन[12]
न दिखायी देगी तुझे कहीं कभी जो किसी ने मुझा दीया ॥

६ तुझे .इश्क़े दिल से ही काम था न कि उस्तख़्वानों[13] का फूंकना ।
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नैस्तां[14] को जला दीया ॥

७ यह निहाल[15] शो़लाये हुस्न का तेरा बढ़ के सर बफ़लक[16] हुवा ।
मेरी काये हस्ती[17] ने मुश्तइल[18] हो उसे यह नशो नुमा[19] दीया ॥

६ साथ बैठने वाला ७ हदूद, परिछिन्नता ८ शरीर
९ बड़ा नाज़क, या पतला पल्ला १० नसीहत करने वाले
११ क्यों किस तरह १२ नज़दीक समीप १३ हड्डीयों १४ जंगल
१५ वृक्ष, बूटा, मुराद ताज़: १६ आकाश तक १७ शारीरक हस्ती
१८ जल कर या भड़क कर १९ पाला, भड़काया.

पंक्तिवार अर्थ.

१ जिस समय मेरे अन्दर अपने स्वरूप के इश्क़ (प्रेम) के आने की ख़ुशख़बरी दिल ने सुनाई तो उस समय .अक़ल और

होश और सबर ने मेरे अन्दर से निकलने का नक्क़ारः बजा दीया (अर्थात अंदर से होश हवास निकलने लगे)

२ (प्रेम आने से पहिले) जिसको देखना मुशकल था और जिस का नाम और निशान नज़र नहीं आता था उसका हर एक अणु मात्र में भी इस इश्क़ (प्रेम) ने मुझे दर्शन अब करा दीया.

३ ऐ प्यारे ! (साथी) मैं उस अपने स्वरूप की जगह के लुतफ अर्थात आनन्द के असर को [आत्मा के अनुभवको] क्या ज़िकर करूं कि उस [अनुभव] ने मुझे सर्व बन्धनो की क़ैद से एक दम में छुड़ा दीया [सर्व बन्धनों सु मुक्त कर दीया].

४ ज़मीन पर पाओं (पाद) के नक़श की तरह जो अपने शरीर की परतीती [दृश्य मात्र] थी सो उस स्वरुप [यार] के नाज़क पल्ले की कशश [अर्थात अनुभव के बढ़ने] ने उस को भी पृथ्वि से मिटा दीया.

५. ऐ नसीहत करने वाले ! तेरी यह 'क्यों कब' ख़ुदपसन्दी या अहंकार के सबब से हैं अगर किसी ने तुझ को सुझा दीया अर्थात अनुभव करा दीया तो यह क्यों किस तरह (अर्थात क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि) तुम को भी नहीं दखाई देंगे.

६ इस के दो मतलब हैं:—१ ऐ ब्रह्म साक्षातकार के जिज्ञासू !

तुझ को दिल में इश्क़ (प्रेम) भड़काना चाहे था और न कि अज्ञानी तपस्सीयों की तरह हठ योग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और अस्तियों को जलाना था। बड़े आश्चर्य की बात है कि तूने एक शेर (दिल) के क़ाबू करने के वास्ते सारे (इस) जंगल (अर्थात इस शरीर को जिस में यह दिल रूपी शेर रहता है) को मुफत में आग लगादी, मुफत में शरीर को जर्जरी भूत कर दीया.

दूसरा अर्थ (२) ऐ यार ! माशूक़ ! (प्रमात्मन्) ! तुझे हमारा दिली इशक़ (प्रेम) लेना चाहे था और न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और बरबाद करना था ॥ बड़ा आश्चर्य है की तू ने हमारा दिल लेने के बजाये हमारे शरीर रूपी बन को मुफत में जला दीया (तुबाह कर दीया)

७ यह तेरी खूबसूरती की अग्नि (दमक) की ताज़ी लाट आकाश तक उपर बढ़ गयी (भड़क उठी) और मेरे शरीर रूपी तृण (घास) ने उस से जल कर उस आग को और ज्यादा बढ़ा दीया (अर्थात उस अग्नि को और ज्यादा भड़का दीया)

१०. सोहनी ताल तेवरा.

१ खबरे तहय्यरे .इशक़ सुन न जुनूं रहा न परी रही ।
न तो तू रहा न तो मैं रहा जो रही सो बेखबरी रही ॥

२ शाहे बेखुदीने .अता कीया मुझे जब लबासे ब्रैहनगी ।
न खिरद की बख्यागिरी रही न जुनूं की पर्दादरी रही ॥

३ वह जो होशो .अक़लो हवास थे तेरी यूं निगह ने उडा दीये।
कि शराबे सद कदहे आर्जू खुमे दिल में थी सो भरी रही

४ चली सिमते ग़ैब से इक हवा कि चमन ग़रूर का जल गया
वले शम्आं-ए-खाना जला के सब गुले सुर्ख सां ही हरी रही॥

५ वह .अजब घडी थी कि जिस घड़ी लीया दर्स नुसखाए
.इशक़ का ।

१ .इशक़ की हैरानी की खबर सुन कर २ बे खुदी के बादशाह ३ बखशा ४ नंगे पन का लिबास ५ .अक़ल ६ काट फाट ७ ढपे रहना ८ सौ १०० प्यालो की शराब की ख्वाहश ९ दिल का मटका १० लेकिन ११ घर का दीपक १२ लाल पुष्प की तरह १३ सबक़ १४ प्रेम के नुसखे का,

कि किताबे .अक़्ल की ताक़ पे जो धरी थी यूं ही धरी रही ॥

८ तेरे जोशे हैरते[15] हुसन का हुवा इस क़द्र से असर यहां।
न तो आयीने में जलॉ[16] रही न परी में जल्वा गरी रही ॥

७ कीया खाक आतशे .इशक़[17] ने दिले बेन्वाये सराज को।
न हज़र[18] रहा न खतर[19] रहा जो रही सो बेखतरी[20] रही ॥

१५ सौन्दर्यता की हैरानी का जोश १६ साफ शफाफ पना १७ प्रेम अग्नि १८ डर १९ खौफ, झिजक २० बेखौफी नडरपना.

पंक्तिवार अर्थ.

१ .इशक़ की .अजीव खवर सुनने से न तो दुन्यावी पगला पन रहा न संसारक खुबसूरती (परि) रही और इस .इशक़ के आने से न तो तू रहा और न मैं रही जो कुच्छ रहा वह बेखवरी रही.

२ अहंकार रहत बादशाह (आत्मा) ने जब मुझ को नंगालिवास बख्शा (अर्थात जब मैं माया के पर्दों से रहित हुवा) तो .अक़्ल का उधेरपन (काट फाट) और पगले पन का छुपे रहना न रहा.

३ ऐ यार (स्वस्वरूप) ! वह जो होश भरे .अक़्लभरे हवास

ये तेरी नगाह से उड़ गये [अर्थात तेरे अनुभव से .अक़ल इ-त्यादि भाग गयी] और सैंकड़ों किस्म की ख्वाहश रूपी प्यालों की शराब जो दिल रूपी मटके में भरी हुई थी वह यूं की त्यूं भरी रही [अर्थात ख्वाहशे पूरे होने वगैर, नष्ट होगई]

४ अदृश्य देश से ऐसी एक हवा चली कि अहंकार का तमाम बाग़ जल गया बल्कि घर [अन्तःकर्ण] के दीपक [ज्ञान] ने सब जलाकर आप स्वयं लाल [अनार के] फूल की तरह हरा रहा [तांजा रहा]

५ वह अजीब घड़ी थी कि जिस घड़ी .इश्क़ (प्रेम) का सबक़ पढ़ा था कि जिस के आने से .अक़ल की कताब तख्ते पर धरी की धरी रही.

६ ऐ यार ! (स्वस्वरूप) ! तेरे सौन्दर्यता के जोश का असर इस क़दर हुवा कि शीशे को लताड़ और [माया रूपी] परी की दुमाई (अर्थात दृश्य आना) सब जाती रही

७ .इश्क़ की आग ने सराज (कवी का नाम है) को ख़ाक कर दीया । फिर न कोइ डर रहा न खतरा रहा । जो कुच्छ रहा वह बेखतरी (निर्भयता) रही.

—:o:—

११ राग मांड ताल दादरा.

इश्क़ आया तो हम ने क्या देखा
जल्वाये यार बरमला देखा।
आतशे शौक ने दीया है फूंक
जानो दिल और जिगर जला देखा ॥
अपनी मूरत का आप है आशक़
आप पर आप मुब्तला देखा ॥
होके ज़ाहर ज़हूर में वह छुपा
हम ने उस का यह हौसला देखा ॥
जो गया कूए यार में न बचा
कूचाये यार करबला देखा ॥
जब खुदी गयी तो सब दूई गयी

१ स्वरूप का दीदार (अनुभव) सन्मुख २ जिज्ञासा की भड़क (आग) ३ जान अरु दिल ४ फंसा हुवा, आशक़, ५ दृश्य ६ यार की गली, स्वस्वरूप के रास्ते में ७ शहीद होने की जगह ८ अहंकार

वख़ुदा आप को ख़ुदा देखा ॥
मौजे दरया की तरह उस को
बहरे वहदत का आशना देखा ॥

९ ख़ुदा की क़स्म १० दरया की लहर ११ एकता के समुद्र
१२ दोस्त, वाक़फ़, ज्ञानवान.

---

१२ राग भैरवी ताल ग़ज़ल.

कहा जो हम ने, दर से क्यों उठाते हो ? ।
कहा कि इस लीये, तुम यां जो .ग़ुल मचाते हो ॥
कहा लड़ाते हो क्यों हम से ग़ैर को हरदम? ।
कहा कि तुम भी तो हम से निगह लड़ाते हो ॥
कहा जो हाले दिल अपना, तो उस ने हस हस कर ।
कहा ग़लत है यह बातें जो तुम बनाते हो ॥

१ दरवाज़ः २ शोर ३ दूसरा ४ दृष्टि, नज़र ५ अपने
दिल का हाल

कहा जताते हो क्यों हम को हर रोज़ नाज़ो अंदा ? ।
कहा कि तुम भी तो चाहत हमें जताते हो ॥
कहा कि अर्ज़ करें, हम पे जो गुज़रती है ? ।
कहा खैर है हमें ! क्यों ज़बां पे लाते हो ॥
कहा कि रूठे हो क्यों हम से, क्यों सबब इस का ? ।
कहा सबब है यही, तुम जो दिल छुपाते हो ॥
कहा कि हम नहीं आने के यहां, तो उस ने नज़ीर ।
कहा कि सोचो, तो क्या आप से तुम आते हो ॥

६ हर दिन ७ नखरे टखरे ८ ख्वाहिश, इच्छा ९ गुस्से १० कवि का नाम.

१२ राग खरवां ठोल, ग़ज़ल.

तमाशाये जहान है और भरे हैं सब तमाशाई ।
न सूरत अपने दिलबर सी, कहीं अब तक नज़र आई ॥
न उस का देखने वाला, न मेरा पूछने वाला ।

इधर यह बेकसी अपनी, उधर उस की वह तनहाई ॥
मुझे यह धुन, कि उस के तालिबों में नाम हो जावे।
उसे यह फ़िक्र, कि पहिले देख लो है यह भी सौदाई॥
मुझे मतलब दीदार उस का, इक खिल्वत के आलम में।
उसे मंजूर, मेरी आज़मायश मेरी रुसवाई ॥
मुझे धड़का, कि आजुर्दाः न हो मुझ से कुछ दिल में।
उसे शिकवा, कि तूने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ॥
मैं कहता हूं, कि तेरा हुस्न आलम सोज़ है जानां! ।
वह कहता है, कि क्या हो गर करूं मैं ज़ुल्फ़ आराई॥
मैं कहता हूं, कि तुझ पर इक ज़माना जान देता है।

१ कमज़ोरी, बेबसी २ अकेला पन ३ लगन ४ जज्ञासू
५ ख्याल, तरंग. ६ ज़रूरत, इच्छा ७ दर्शन ८ एकान्त, तनहाई
९ हालत, समय १० खुवारी ११ नाराज़, खफा १२ शकायत
१३ सुंदरता १४ जगत, दुन्या को जलाने वाला १५ ऐ प्यारे !
१६ अपने नक्श को सजाना, अपने बालों को सजाना..

वह कहता है, कि हां वे इन्तहा हैं मेरे शैदाई ॥
मैं कहता हूं, कि दिलवर! मैं नहीं हूं क्या तेरा आशक़?
वह कहता है, कि मैं तो रखता हूं ऐसी ही रानाई ॥
मैं कहता हूं, कि तू नज़रों से मेरी क्यों हुवा ओझले (ग़ायेव)।
वह कहता है, यही अपनी अदा मुझ को पसंद आई॥
मैं कहता हूं, तेरा यह हुसन और देखूं न मैं उस को।
वह कहता है, कि मैं खुद देखता हूं अपनी ज़ेबाई ॥
मैं कहता हूं, कि हद पर्दा की आखर तावके परदाः।
वह कहता है, कि कोई जब तक नहो अपना शनासाई ॥
मैं कहता हूं, कि अब मुझ को नहीं है ताबे फ़ुर्क़त की।
वह कहता है, कि आशक़ हो के कैसी ना शकेबाई॥

१७ आशक़ भक्त १८ खुश रफ़तारी, आनन्द से मटकना, क़ता वज़ा १९ छुपा २० हर्कत, नखरा टखरा २१ सज़ावट, खुबसूरती २२ कब तक २३ अपने आप को पैहचानने वाला, आत्मवित २४ जुदायगी के सहने की ताक़त २५ बे सबरी.

मैं कहता हूं. कि सूरत अपनी दिखला दीजीये मुझ को।
वह कहता है, कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई?॥
मैं कहता हूं, कि जानां! अब तो मेरी जान जाती है।
वह कहता है, कि दिल में याद कर क्योंकर थी वह आई॥
मैं कहता हूं, कि इक झलकी है काफी मेरी तसकीं को।
वह कहता है, कि बामे तूर पर थी क्या निदा आई?॥
मैं कहता हूं, कि मुझ बेसबर को किस तौर सबर आये।
वह कहता है, कि मेरी याद की लज़्ज़त नहीं पाई॥
मैं कहता हूं, यह दामे इश्क़ बेढब तू ने फैलाया।
वह कहता है, कि मेरी खुद पसंदी मेरी खुदराई॥

२६ ऐ प्यारे २७ तसल्ली २८ तूर के पहाड़ की चोटी पर [जहां मूसा को ज्ञान मिला था और जहां ईश्वर आग की लाट में मूसा के आगे प्रगट हूवा] अर्थात ज्ञान की शिखर पर २९ आवाज़ ३० स्वाद ३१ प्रेम का जाल, इश्क़ का फन्द ३२ अपनी मर्ज़ी ३३ अपनी ही बनाई हूई, अथवा खुबसूरत की हुई, अपनी सजाई हुई

राग परज ताल धुमाली १४

हमेन हैं इशक़ के माते हमन को दौलतां क्या रे ।
नहीं कुच्छ माल की परवाह किसी की मिन्नतां क्या रे ॥१॥
हमन को खुशक रोटी वस कमर को यक लंगोटी वस।
शिरे पै एक टोपी वस हमन को इन्नतां क्या रे ॥२॥
क़बा शाला वज़ीरों को ज़री ज़रवफ़्त अमीरों को ।
हमन जैसे फ़कीरों को जगत की नेऽमतां क्या रे ॥३॥
जिन्हों के सुखन स्याने हैं उन्हीं को खल्क़ माने है ।
हमन .आशक़ दीवाने हैं, हमन को मजलसां क्या रे ॥४॥
कीयो हम दर्द का खाना, लीयो हम भस्म का वाना ।
वली वस शोक़ मन भाना किसी की मसहलतां क्या रे ॥५॥

१ हंम २ मस्त ३ अमीरो की पोशाक ४ जगत के आनंद दायक पदार्थ ५ उपदेश, वोतें, वाक ६ .अक़ल मन्द, ठीक, या गैहरे ७ दुन्या ८ असलाह, नसीहतां.

राग गारा ताल दादरा १५

हम कूये दरे यार से क्या टल के जायेंगे? ।
हम न पथ्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥ १ ॥
वसले सनम को छोड़ कर क्या काबे जायेंगे।
वहां भी वही सनम है तो क्या मुंह दखायेंगे ॥२॥
हम अपने कूए यार को काबा बनायेंगे।
लैली बनेंगे हम उसे मजनूं बनायेंगे ॥ ३ ॥
गैरों से मत मिलो कि सितमगर बनायेंगे।
हम से मिला करो तुम्हें दिलबर बनायेंगे ॥ ४ ॥
आसन जमाये बैठे हैं दर से न जायेंगे।
हम कैहकंसां बनेंगे तुम्हे माहरूः बनायेंगे ॥ ५ ॥
बैठे हैं तेरे दर पे तो कुच्छ करके उठेंगे।

१ यार के कूचे के दरवाजे से २ यार (अपने स्वरूप) की मुलाक़ात ३ प्यारा यार (अपना स्वरूप). ४ कूचा, गली ५ नाम है ६ ज़ालम, ज़ुलम करने वाला ७ दूधिया रास्ता जो रातको आकाश में नज़र आता है (milky path) ७ चांद सूरत

या वस्ल ही हो जायेगी या मर के उठेंगे

८ मुलाक़ात.

राग गारा ताल धुमाली १६

(वर वज़न सब से जहां में अच्छा.)

कुंदन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
वावर न हो, तो हम को ले आज आज़माले॥
जैसे तेरी खुशी हो, सब नाच तू नचाले।
सब छान बीन कर ले, हर तौर दिल जमाले॥
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है। } टेक
यहां यूंभीवाह वाहहै औरवूं भी वाह वाह है॥१.
या दिल से अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे।
या तेग़ खैंच ज़ालम टुकड़े उड़ा हमारे॥
जीता रखे तू हम को या तन से सिर उतारे।

१ यक़ीन, निश्चय, २ तरह, तरीक़ा ३ मर्ज़ी ४ तल्वार ५ ज़ुल्म करने वाला, बेरहम सताने वाला

अब तो फक़ीर आशिक़ कहते हैं यूं पुकारे—राज़ी है० २

अब दर[6] पै अपने हम को रहने दे या उठा[7] दे।
हम इस तरह भी खुश हैं रख या हवा बना दे।
आशिक़ हैं पर क़लन्दर चाहे जहां बठा दे।
या अर्श[8] पर चढ़ा दे या खाक में रला दे—राज़ी है० ३

६ दरवाज़ा, अर्थात निकट अपने ७ दूर फैंक दे, परे करदे
८ आकाश, आस्मान.

राग संधोरा ताल दीपचंदी १७

(टेक) अरे लोगो! तुम्हें क्या है? या वह जाने या मैं जानूं
वह दिल मांगे तो हाज़र है, वह सिर मांगे तो बेसिर हूं।
जो मुख मोडूं तो काफ़र[1] हूं, या वह जाने या मैं जानूं ॥ १ ॥
वह मेरी बग़ल छुप रहता मैं उस के नाज़[2] सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं ॥२॥
वह मेरे खून का प्यासा, मैं उस के दर्द का मारा।

१ कवराल २ नखरे.

दोनो का पंथ[3] है न्यारा, या वह जाने या मै जानूं ॥३॥
मूआ आशक़ द्वारे पर, अगर वाक़फ़ नहीं दिलवर ।
अरे मुल्ला: सपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं ॥४॥

३ रास्ता ४ कलमा.

राग सिंधोरा ताल दीपचंदी १८

१ रहा है होश कुच्छ बाकी उसे भी अब नवेड़े[1] जा ।
यही आहंग[2] ऐ मुतरब[3] पिसर टुक और छेड़े जा ॥
२ मुझे इस दर्द में लज्जत है ऐ जोशे[4] जुनूं अच्छा ।
मरे ज़ख़मे जिगर[5] के हर घड़ी टांके उधेड़े जा ॥
३ उखड़ना दम कलेजा मूंह को आना ज़ार[6] बेताबी ।
यही साहिल[7] पै आना है लगे है पार बेड़े जा ॥
४ है नाला[8] ज़ार ने पाया सुरागे नाक़:-ए-लैली[9] ।

१ खतम करते जा २ राग सुर ३ गवय्या, डूम राग गाने वाला ४ निजानंद की मस्ती का जोश ५ दिलके घौ ६ बेताबी का दर्द, रोना ७ किनारा ८ रोने का शोर ९ लैली (माशूक़ा) के घर का पता.

मुवाहीं कैसे आ पहुंचे हुदी को ज़ोर छेड़े जा ॥
कहां लज्जत कहां का दर्द तूफ़ां कैसा ज़खमी, कौन।
हक़ीक़त पर पहुंचते ही मिटे क्या खूब छेड़े[13] जा ॥
ओरे हट नाखुदा पत्वार मुड़ ! ले हट पर तूफ़ां।
अड़ा ड़ा धप अड़ा ड़ा धम करारो[15] को थपेरे जा ॥
हैं हम तुम दाखले दफ़तर खुमे मै में है दफ़तर गुम।
न मुजरम मुदई बाक़ी मिटे क्या खुश बखेड़े जा ॥

१० शायद ११ मजनूं १२ ऊंट को धकेलने की आवाज़ अर्थात ऊंटको चलाये चल १३ सब झगड़े फ़ैजीये १४ बेड़ी का मल्लाह (मांझी) १५ बेड़ी को मोड़ने (घुमाने) की चर्खी १६ किनार १७ आनन्द रूपी बैरागी की मटका.

पंक्तिवार अर्थ.

१ ए प्यारे ! (आत्मा) ! अगर कुच्छ दुन्या की होश बाकीरही है तो वह भी गुम करदे, ऐ रागी (गवय्ये) ! यही सुर तू छेड़े जा.

२ मुझे इस दर्द में लज़्ज़त है क्योंके यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाती है इस वास्ते ऐ प्यारे जोश (मस्ती) मेरे जिगर के टांके (मेरे अन्तःकरण के संशये) हर घड़ी उधेड़े (तोड़े) जा.

३ दम उखरता है तो उखरने दे, कलेजा मुंह को आता है तो आने दे, बेताबी होती है तो हो, क्योंकि हम ने इसी (दर्द के) किनारे पर आना है.

४ क्योंकि मजनू के ज़ार ज़ार रोने ने ही लैली के घर का पता पाया, इसवास्ते ऐ ऊंट वाले ऊंट को बढ़ाये जा ताकि कहीं मजनू न पीछे से आजाये [क्योंकि जिस समय मजनू (मन) ने लैली को मिल जाना है आत्मानुभव] कर लेना है तो फिर

५ कहां लज़्ज़त, दर्द कहां, तूफां कैसा, ज़ख़मी कौन, क्योंकि असल तत्व पर पहुंचते ही यह सब मिट जाते है.

६ अरे बेड़ी के मल्लाह [शरीर के अहंकार] परे हट, पतवार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफां टूट पड़ता है तो टूटने दे, और तूफां के ज़ोर से अगर किनारे टूट कर पानी में धम धड़ाड़ा धम कर के गिरते हैं तो गिरने दे.

७ क्योंकि उस समय हम तुम दाख़ल दफ़तर हो जाते हैं और निजानन्द के मटके (अन्तःकर्ण) गुम हो जाते हैं, उस समय न

मुदर्य मुजरम कोई (द्वैत) बाक़ी रहता है, बलकि खुशी ही खुशी प्रगट होती रहती है, या आनन्द ही आनन्द चारों तरफ बिखर जाता है ॥

राग तिलंग ताल दादरा १९

इक ही दिल था सो भी दिलवर ले गया अब क्या करूं।
दूसरा पाता नहीं। किस को कहूं अब क्या करूं ॥१॥
ले चुका था जानेजानां[1] जां को पहिले हाथ से।
फिर भी हमले कर रहा। किस को कहूं अब क्या करूं ॥२॥
हम तो दर[2] पर मुन्तज़र थे तिशन-ऐ-दीदार[3] के
पहुंचते बिसमिल[4] कीया। किस को कहूं अब क्या करूं ॥३॥
याददाश्त के लीये रहता था फ़ोटो[5] जिस्मो जां[6]।
वह भी ज़ायल[7] कर दीया। किस को कहूं अब क्या करूं ॥४॥
यार के मुंह पर झरोखे[8] से नज़र इक जा पड़ी।

१ जान की जो जान (जान से अति प्यारा] २ दरवाज़े पर ३ दर्शण के पियासे ४ [मिलते ही] मारदीया या घायल कीया ५ सूरत, तसवीर. ६ शरीर [देह) अरू प्राण ७ नष्ट. ८ खिड़की.

देखते घायल हुआ। किस को कहूं अब क्या करूं॥७॥
आप को भी क़तल कर फिर आप ही इक रह गये।
वाह नज़ाकत आप की। किस को कहूं अब क्या करूं॥८॥

राग राम कली २०

सय्यो नी मैं प्रीतम पीआ को मनाऊंगी।
इक पल भी उसे न रुसाऊंगी[1]॥ टेक
नैन हृदय का करूंगी बिछोना।
प्रेम की कलियां बिछाऊंगी॥ सइयो०
तन मन धन की भेंट धरूंगी।
हौमें[2] खुदी मिटाऊंगी॥ सइयो०
बिन पीआं दुःख बहुत होवत हैं।
बहू जूना[3] भरमाऊंगी॥ सइयो० २
भेद खेद को दूर छोड़ कर।

१ नाराज़ करूंगी २ अच्छिन अहंकार ३ बहुत जन्म.

आत्म भाव रिझाऊंगी ॥ सइयो० ४
जे कहा पीआ नहीं माने मेरा
मैं आप गले लग जाऊंगी ॥ सइयो० ५
पीआ गले लागी हूइ वड़भागी
जनम मरण छुट जाऊंगी ॥ सइयो० ६
पीआ गल लागे सब दुःख भागे
मैं पीआ विच लै हो जाऊंगी ॥ सइयो० ७
राम पीआ मोरे पास बसत हैं
मैं आप पीआ हो जाऊंगी ॥ सइयो० ८

८ आत्म भाव में प्रसन्न होना या तृप्त रहना.

राग परज ताल रूपक २१

जिस को शोहरत भी तरसती हो वह रुस्वाई[१] है और ।
होश भी जिस पर फड़क जायें वह सोदा और है ॥१॥

१ रुस्वाई, बदनामी.

बन के पर्वाना तेरा आया हूं मैं ऐ शमां-ऐ-तूर ।
बात वह फिर छिड़ न जाये यह तक़ाज़ा और है ॥२॥
देखना ! ज़ौक़े तकल्लुम ! यहां कोइ मूसा नहीं ।
जो मरी आंखों में फिरता है वह शीशा ओर है ॥३॥
यूं तो ऐ स्याद ! आज़ादी में हैं लाखों मज़े ।
दाम के नीचे फड़कने का तमाशा ओर है ॥४॥
जान देता हूं तड़प कर कूचा-ए-उलफ़त में मैं ।
देख लो तुम भी कोइ दम का तमाशा ओर है ॥ ५ ॥
तेरे खंजर ने जिगर टुकड़े कीया अच्छा कीया ।
कुच्छ मिरे पैहलू में लेकिन चिलबला सा ओर है॥६॥
भेस बदले महफ़िले अग़यार में बैठे हैं हम ।
वह समझते हैं यह कोइ ओपेरा सा ओर है ॥ ७ ॥

२ ए अग्निरूपी पहाड़ के शोलो ३ झगड़ा ४ बानी के शौक़ अथवा आनंद ५ शिकारी ६ जाल ७ प्रेम की गली में ८ मेरे ९ कांटा चुबना १० लबास बदले ११ ग़ैर, दूसरा पुरुष १२ न पेछाना हुवा, नावाक़फ़, दूसरा.

राग विहाग ताल दादरा २२

१. इश्क़[1] का तूफ़ान बपा है, हाजते[2] मैखाना[3] नेस्त[4] ।
ख़ून शराब-ओ-दिल कबाब-ओ, फ़ुर्सते पैमाँना[5] नेस्त ॥
२ सख़्त मख़्मूरी[6] है तारी[7]. ख़्वाह कोई क्या कुछ कहे।
पस्त[8] है .आलम[9] नज़र में. वहशते[10] दीवाना[11] नेस्त ॥
३ अलविदा[12] ऐ मर्ज़े दुन्या! अलविदा ऐ जिस्म-ओ-जान।
ऐ .अतश[13]? ऐ जू[14]! चलो, ईंजा[15] कबूतर खाना नेस्त॥
४ क्या तजल्ली[16] है यह नारे[17] हुस्न[18] शोऽलो[19] खेज़ है ।
मार ले पर ही यहां पर, ताकते परवाना नेस्त ॥
५ मिहर[20] हो माह[21] हो दबिस्तान[22]. हो गुलिस्तां[23] कोहसार[24]।

१ प्रेम २ ज़रूरत ३ शराब खाना ४ नहीं है ५ प्याला ६ अमल, नशा ७ छाया हुवा है ८ तुच्छ ९ जहान १० वहशीपना ११ पागलपुरुष १२ रुखसत हो १३ प्यास १४ भूख, क्षुधा १५ इस जगह १६ चमक १७ आग, अग्नि १८ सौन्दर्यता १९ भड़की हुई २० सूरज २१ चांद २२ पाठशाला, मदरस्सा २३ बाग २४ पहाड़

मौजज़न[25] अपनी है खूबी, सूरते बेगांना[26] नेस्त ॥

६ लोग बोले ग्रहण ने, पकड़ा है सूरज को गुलत ।
खुद हैं तारीकी[27] में बरमन[28] माया महजूबांना[29] नेस्त ॥

७ उठ मेरी जान जिस्म से, हो गर्क़ जांते[30] राम में ।
जिस्म बद्रीश्वर की सूरत हरकते फरजांना[31] नेस्त ॥

२५ लैहरें मार रही है २६ अन्य पुरुष २७ अन्धकार में २८ मुझ पर २९ परदे में छुपे हुवे की तरह ३० रामका आत्मा ३१ लड़कों की हर्कत.

पक्तिवार अर्थ.

१ प्रेम की आन्धी आई हुई है अब शराबखाने जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अपना खून इस समय शराब हुवा २ है और दिल अपना कबाव बना हुवा है इस वास्ते (शराब के) प्याले की अब ज़रूरत नहीं.

२ सखत नशा (प्रेम के मद का) चढ़ा हुवा है ख्वाह अब कोई कुच्छ भी कहे इस समय सारा जहान नज़र में तुच्छ नज़र आता है मगर पागल पुरुषों के वैहशी पने से नहीं (सिर्फ प्रेम की मस्ती से) जगत तुच्छ नज़र आरहा है.

३ ऐ दुन्या की मर्ज़ [बीमारी] तुझ को अब रूखसत है, ऐ

शरीर और प्राण तुम को भी अब रूख़सत है, ऐ भूख और प्यास मेरे पास से चले जाओ यह जगह कोई कबूतर खाना [अर्थात तुम्हारे रहने सहने का घर] नहीं है.

४ आहा ! सौन्दर्यता की आगकी (इस प्रेम की) चमक क्या शोऽले मार रही (तेज़ भड़क रही) है अब परवाने की क्या ताक़त है जो इस आग में कहीं पर भी मार सके.

५ सूरज हो, ख्वाह चांद हो, ख्वाह सकूलें हो, बाग़ हो और ख्वाह पहाड़ हो यह तमाम में अपनी ही खूंबं सूरती (सुन्दरता) लैहरें मार रही है कोई अन्य सूरत (शकल और सुन्दरता) नहीं.

६ लोग बोलते हैं कि सूरज को ग्रहण ने पकड़ रखा है, यह बिलकुल ग़लत है, आप खुद अन्धेरे में है (और समझ बैठे हैं कि सूर्ज भी ग्रहण से पकड़ा गया और अन्धेरे में है) जैस यह ग़लत है, और सूरज ग्रहण के साये से नही पक़ड़ा गया एसे मुझ पर भी कोई ढकने वाला साया नहीं डला हुवा (मैं सदा ज़ाहर हूं.)

७ ऐ मेरी जां ! इस शरीराध्यास से उठ और अपने आधार (स्वरूप) में ग़ोते लगा [लीन हो] और शरीर को बदरी नारायण की मूरत जैसा बना दे कि जो हरकत कुच्छ भी नही करती है सिर्फ तस्वीर नज़र आती है.

राग भैरवी ताल दादरा (२३)

आशक़ जहां में दौलतो इक़बाल क्या करे।
मुल्को मकानो तेग़ो तवर ढाल क्या करे॥
जिस का लगा हो दिल वह ज़रो माल क्या करे।
दर्वीनः जाहो हशमतो अजलाल क्या करे॥
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे॥१॥ टेक.
मरने का डर है उन को जो रखते हैं तन में जां।
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहां॥
मोहताज पत्थरों को तरसते हैं हर ज़मां।
और जिन के हाथ काने ज्वाहर लगे मीयां॥
वह फिर इधर उधर के दुरों लाल क्या करे।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे॥२॥
पाला है जिन ख्वारों ने यां खर को आशकार।

१ मुल्क और मकान २ तल्वार और ढाल ३ धन दौलत ४ ईश्वर का पागल (खुद मस्त) ५ मर्तबा इज़्ज़त शोहरत ६ हाजत मंद, अीव ७ ज्वाहरात, मोतियों से मुराद है ८ हर समय ९ ज्वाहरात की खान १० मोती और लाल ११ गदहा, गर्दभ १२ ज़ाहराः

कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते ज़िनेहार[13] ॥
और जो फलांग मार कें हो चर्ख़[14] पर स्वार ।
वह फीलो[15] असपे ज़र्दो सीयाह[16] लाल क्या करे ॥
दीवानाः जाहो हशमतो अजलाल क्या करे ।
गाहक ही न कुछ लेवे तो दल्लाल क्या करे ॥ ३ ॥

१३ हरगिज़ कदापि १४ आकाश १५ हाथी १६ ज़र्द लाल और सीयाह घोड़ा.

राग देश ताल तीन. २४.

गुम हुवा जो इश्क़ में फिर उस को नंगो[1] नाम क्या ।
दैर[2] काबा से गर्ज़ क्या कुफर क्या इसलाम क्या ॥
शैख जी जाते हे मै खाना[3] से मुंहको फेर फेर ।
देखिये मसजद में जाकर पायेंगे इनाम क्या ॥
मौल्वी साहब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या ।
रूह क्या है दम है क्या आगाज़[4] क्या अंजाम[5] क्या ॥

१ शर्म, ह्या २ मंदर ३ शराब खाना ४ शुरू, आदि ५ अन्त

हम को ले कर सुम्मां बुंकमम बेख़बर या बैठ रहे।
कूचाये दिलदार में वाइज़ से तुम को काम क्या ॥
यार मेरा मुझ में है मैं यार में हुं बिलज़रूर।
वसल को यहां दख़ल क्या और हिजर नाफ़र्जाम क्या ॥
तुझ में मैं और मुझ में तूं आंखें मिलाकर देख ले।
और गर देखे न तूं तो मुझ पै है इल्ज़ाम क्या ॥
पुख़्ता मग़ज़ों के लिये है रहनुमां देगा मज़मून।
हाफ़िज़ा हासल करेंगे इस से मर्द ख़ाम क्या ॥

६ चुप गूंगा ७ यार की गली अर्थात स्वरूप के अनुभव में ८ उपदेश ९ मुलाकात, दर्शन १० जुदाइगी ११ बद असल १२ बड़े उत्तम दिमाग़ वाले (बहुत समझ वाले) १३ लीडर, नायक १४ उपदेश १५ कवि का नाम १६ कम अक़्ल, कम दिल

राग पीलू ताल चलन्त २५.

आंखों में क्या खुदा की, छुरियां छुपी हुई हैं।

देखा जिधर को उस ने पलकें उठा के मारा ॥
गुञ्चे में आ के महका. बुलबुल में जा के चहका ।
उस को हंसा के मारा. इस को रुला के मारा ॥

कली पुष्पकी २ खुशबूदार होना या खुशबू देना.

राग पहाड़ी ताल चलन्त २६.

फ़नाह है सब के लीये मुझ कुछ नहीं मौक़ूफ़ ।
यही है फ़िकर अकेला रहेगा तू बाक़ी ॥
कूंवें में क़ैद हुए जबकि हज़रते यूसफ़ ।
रही न इश्क़ मजाज़ी की आब्रू बाक़ी ॥
ज़िबह करे है परों को तो खोल दे सय्याद ।
कि रह न जाये तड़पने की आर्ज़ू बाक़ी ॥
गले लिपट के जो सोया वह रात को गुलरू ।
तो भीनी भीनी महीनों रही है बू बाक़ी ॥

१ मौत २ ज़ुलेखां के आशक का नाम है ३ लौकक इश्क़
४ गर्दन पर जब छुरी चलावे या गरदन पर छुरी चलाना.
५ शिकारी ६ प्यारा (माशूक़)

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाक़ी ।
रुके न हाथ है जब तक रगे गुलू⁷ बाक़ी ॥

७ गले की रग (नाड़ी)

राग भैरवी ताल रूपक २७.

जो मस्त हैं अज़ल¹ के उन को शराब क्या है ।
मक़बूले² खातरों को बूऐ कबाब³ क्या है ॥
क्यों मुंह छुपाओ हम से तक़्सीर⁴ क्या हमारी ।
हर दम की हमनशीनी⁵ फिर यह हजाब⁶ क्या है ॥
हो पास तुम हमारे हम ढूंडते है किस को ।
मुंह से उठा दिखाना ज़ेरे नक़ाब⁷ क्या है ॥

१ अनादि वस्तु से जो मस्त है (अपने स्वरूपकरके जो मस्त हैं) २ दिल क़बूल (मंजूर) करने वालों को, दिल देने वालों को ३ कबाब (लज़्ज़त) की बू ४ कसूर-गुनाह ५ साथ रहना ६ पर्दा ७ परदे के नीचे.

गज़ल. २८

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुवा।
जिन इश्क़ में सिर न दीया युग युग जिया तो क्या हुवा॥टेक
मशहूर हुवा पंथ में साबत न कीया आप को।
आलिम अरू फ़ाज़िल होय के दाना हुवा तो क्या हुवा।१।जि०
औरों नसीहत है करे और खुद अमल करता नहीं।
दिल का कुफर टूटा नहीं हाजी[1] हुवा तो क्या हुवा।२।जिन०
देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेख का।
सारी किताबां याद कर हाफ़ज़ हुवा तो क्या हुवा।३।जिन०
जब तक प्याला प्रेम का पी कर मगन होता नहीं।
तार मंडल बाजते ज़ाहर सुना तो क्या हुवा ॥ ४ ॥ जिन०
जब प्रेम के दरियाव में ग़रक़ाब[2] यह होता नहीं।
गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुवा॥५॥जिन०
प्रीतम से किंचित् प्रेम नहीं प्रीतम पुकारत दिन गया।
मतलूब[3] हासल न हुवा रो रो मुआ तो क्या हुवा।६।जिन०

१ हज (यात्रा) करने वाला २ डूबना ३ इच्छित वस्तु.

राग बरवा. २१

अब मैं अपने राम को रिझाऊं। बैठे भजन गुण गाऊं ॥ टेक
डाली छेडूं न पत्ता छेडूं, न कोई जीव सताऊं (१)
पात पात में प्रभू बसत हैं वाहि को सीस नवाऊं ॥ १ ॥ अब०
गंगा जाऊं न यमुना जाऊं ना कोई तीरथ न्हाऊं ।
अठसठ तीरथ घट के भीतर तिनहि में मल मल न्हाऊं । २ । अ०
औषध खाऊं न बूटी लाऊं ना कोइ वैद्य बुलाऊं ।
पूरण वैद्य मिले अविनाशी वाहि को नवज़ दिखाऊं । ३ । अ०
ज्ञान कुठारा कस कर बांधू सुरत कमान चढाऊं ।
पांचो चोर बसैं घट भीतर तिन को मार गिराऊं ॥ ४ ॥ अब०
योगी होऊं न जटा बढाऊं न अंग बभूति रमाऊं ।
जो रंग रंगे आप विधाता और क्या रंग चढाऊं । ५ । अब०
चंद सूरज दोऊ सम कर राखो निज मन सेज विछाऊं ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिटाऊं ॥ अब०

१ बैठ २ सिर, मस्तक ३ आना जाना, मरना जीना.

राग विहाग ३०.

टुक बूझ कौन छिप आया है ॥ टेक
इक नुक़ते में जो फेर पड़ा तब ऐन ग़ैन का नाम धरा।
जब नुक़ता दूर कीया तब फिर ऐन ही ऐन कहाया है।१। टु०
तुसीं .इलम कतावां पढ़दे हो क्यों उलटे माने करदे हो।
बे मूजब ऐवें लड़दे हो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ २ ॥ टुक०
दूई दूर करो कोई शोर नहीं हिंदू तुरक सभी कोई होर नहीं।
सब साध लखो कोई चोर नहीं घट घट में आप समाया है। टुक०
ना मैं मुल्लां ना मैं क़ाज़ी ना मैं शेख मय्यद न हाजी।
बुल्हया शौह नाल लाई बाज़ी अनहद शब्द कहाया है। टुक०

१ विना कारण २ अन्य, दूसरा ३ जात्रू (यात्रा करने वाला)
४ प्रणव, ओं.

पंक्तिवार अर्थ।

ऐ प्यारे ! ज़रा सोच कि अन्दर अपने कौन छुपा हुवा बैठा है ?
१ एक बिन्दू से ऐन हरफ़ ग़ैन हो जाता (या खुदा से जुदा

हो जाता है) और जब बिन्दू हटा दें तो वही ऐन का ऐन ही रहता है। इससे तात्पर्य कवि का यह है कि ऐ प्यारे ! तूं तो १ ईश्वर साफ शुद्ध अपने आप है, सिरफ जब अज्ञान या मोह की बिन्दू (पर्दा) तूं अपने पर लगा (डाल) लेता है तो ईश्वर से बन्दा (जीव) बन जाता है ॥

२ ऐ प्यारे ! तुम पुस्तक पोथे बहुत पढ़ते हो और मुफत में आपस में बहुत झगड़ते हो (क्योंकि जितना हम बहिर्मुख झगड़े लडाई अथवा अध्यैन में लगे हैं उतना ही हम अपने असली स्वरूप से बेमुख बैठे हुवे है) इसवास्ते ऐसे उलटे काम तूं क्यों कर रहा है और ऐसी उलटी पढ़ाई क्यों पढ़ रहा है ॥

३ यह द्वैत को दूर कर तुम से भिन्न कोई हिंदू तुर्क अन्य नहीं है, मुफत में शोर मत कर क्योंकि यह सब तू ही आप है, और सब को साध (उत्तम) देख क्योंकि तूं ही उन तमाम के घटमें (अन्दर दिल के) बस रहा है ॥

४ बुल्लाह शाह कवि कहता है कि न मैं अकेला मुल्ला हूं न क़ाज़ी हूं और न सय्यद (मुसल्मानों का पीर) और हाजी हूं बलकि मैं ने अपने यार (आत्म स्वरूप) के साथ बाज़ी (शरत) लगाई हूई है (कि मैं तेरा या तूं हूं और तूं मेरा यां मैं है) ऐसे

महावाक्य (अनहद शब्द अहंब्रह्मास्मि) मुख (बहुशाह) से कहा गया है ॥

राग विहाग या आसावरी.　३१

हृदय विच रम रह्यो प्रीतम हमारो (टेक)

योग यतन का रोग न पालूं अंक[1] में पायो प्यारो ॥१॥ हृदय०

जा के काज राज सुख त्यागत कर्ण[2] मुद्रिका धारो ।

अलख निरंजन सोई दुःख भंजन घट हि में प्रघट निहारो[3] ॥२॥

मन दर्पण जब शुद्ध कीयो तब आंख में ज्ञान को अञ्जन डारो।

शील संतोष के पेहर कर भूषण कपट के घूंघट[4] टारो ॥३॥ हृदय.

मन वृन्दावन वृत्ति गोपिका अरु चेतन मोहन प्यारो ।

रास रंग ऐसा खेलत विरले, सन्तन सार निहारो ॥ ४ ॥

१ समीप, नज़दीक २ कान ३ देखो, जानो ४ पर्दा.

तर्ज़ ठुमरी राग कुमाच ताल तीन.　३२

(टेक) जो तुम हो सो हम हैं प्यारे, जो तुम हो सो हम हैं ॥

पर्वत में तुम नदियन में तुम चहुं दिश तुम ही हो विस्तारे ॥

वृक्ष लता में तुमहि विराजो सूरज चंद्र तुम ही हो तारे ॥
देश भी तुम हो काल भी तुम हो तुम ही हो सब के आधारे ॥
अलख ब्रह्म है नाम तिहारो माया से तुम नित हो न्यारे ॥
रूप नहीं नहीं गुण है तुम में वस्तु कृया से दूर सदा रे ॥
तीनो लोक में तुम ही व्यापो तबहूं उन ते हो तुम न्यारे ॥
जो ध्यावे सो ये ही पावे हो तुम उन के चेतन प्यारे ॥
रामानन्द अब जान लेहु यों आनन्द चेतन नहीं दो न्यारे॥

राग सिधड़ा ढ़ाढ़ी ताल ३३

.इशक होवे तो हकीकी .इशक होना चाहिये ।
इस सिवा जितने है आशक उन पे रोना चाहिये ॥ १ ॥
.ऐशो .इशरत में गुज़ारा रोज़ सारा गरचिः तुम ।
रात को प्रभू याद करके तब तो सोना चाहिये ॥ २ ॥
बीज बो कर फल उठाया खूब तुम ने है यहां ।
.आकबत के वास्ते भी कुच्छ तो बोना चाहिये ॥ ३ ॥

१ प्रेम, भक्ति २ विषय भोग आनन्द ३ परलोक

यहां तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे किमख़्वाब पर।
सफ़र भारी सिर पै है वहां भी बिछौना चाहे ॥ ४ ॥
है ग़नीमत .उमर यारो जान को जानो .अज़ीज़।
रायेगां और मुफ़त में इस को न खोना चाहे ॥ ५ ॥
गरचिः दिलबर साथ है बिन जुस्तजू मिलता नहीं।
दूध से माखन जो चाहो तो बिलोना चाहे ॥ ६ ॥
यादे हक़ दिन रात रख, जंजाल दुन्या छोड़ दे।
कुच्छ न कुच्छ तो लुत्फ़े ख़ालस तुझ में होना चाहे ॥७॥

४ धन्य, उत्तम ५ बे फायदः ६ जिज्ञासा, ढूंडना ७ ईश्वर स्मरण ८ शुद्ध आनन्द या निजानन्द.

गज़ल ३४.

प्रीत न की स्वरूप से तो क्या कीया कुच्छ भी नहीं (टेक)
जान दिलबर को न दी फिर क्या दीया कुच्छ भी नहीं ॥१॥ प्री-
मुल्क गीरी में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे।

१ देशों का जय (.फतेह) करना

अपने पर क़बज़ाः न कीया, क्या लीया कुच्छ भी नहीं ॥२॥ प्री.
देवतों ने सोम रस पीया तो फिर भी क्या हुवा ।
प्रेम रस गर न पिया तो क्या पीया कुच्छ भी नही ॥३॥ प्री.
हिज्र[२] में दिलबर के हम जो उमर पाई खिज़्र[३] की ।
यार अपना न मिला तो क्या जीया कुच्छ भी नहीं ॥४॥ प्री.

२ जुदायगी ३ खिज़र एक मुसलमानों के हज़रत का नाम है जिस की आयू अनन्त कही जाती है.

---

३५ माज ताल चंचल.

आवूंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीयूंगा।
हरि के भजन पियाला प्रेम रस पीयूंगा ॥ } टेक

कोई जावे मक्के कोई जावे काशी। देखो रे लोगो दोहों गल फांसी ॥ १ ॥ आऊंगा०
कोई फेरे माला कोई फेरे तसंवीह[१] देखो रे साधो यह दोनों

१ जपनी (जो मुसलमान भजन में वर्तते हैं)

हैं कसवी ॥ २ ॥ आ०

कोई पूजे मढ़ीयां कोई पूजे गोरां । देखो रे सन्तो ! मैं लुट गयी जे चोरां ॥ ३ ॥ आ०

कहत कबीर[3] सुनो मेरी लोई[4] । हम नहीं मरना रोवे न कोई ॥ ४ ॥ आ०

२ क़बरों को कहते हैं ३ कवि का नाम है ४ कवि की स्त्री का नाम है.

---

२६ ग़ज़ल

हर गुल में रंग हर[1] का जल्वा[2] दिखा रहा है । (टेक)

तालिब[3] को .इशक़ का फ़[4]न बुलबुल सिखा रहा है ॥ १ ॥ हर गु०

सीमाब[5] बेक़रारी, बादल भी अशक़ बा[6]री ।

परवाना जाँ निसारी[7], हर को जता रहा है ॥ २ ॥ हर गुल०

१ ईश्वर, निज स्वरूप से मुराद है २ दर्शन, परतीत होना ३ जिज्ञासु ४ पारा ५ हुनर ६ (आंसूओं की तरह) बादल का बरसना ७ प्राण .क़ुर्बान करना

नरगिस ने आंख बन कर देखा उसे नज़र भर।
हर वर्ग[8] बर[9] में जौहर हर का समा रहा है ॥ ३ ॥ हर गुल०
होवे जो .इश्क़[10] कामिल[11] हर जां[12] वह तेरे शामिल।
आमिल[13] से जल्द जा मिल क्यों दिल दुखा रहा है ॥४॥ हर०
हर अञ्जुमन[14] में तन में बन बन में अपने मन में।
दिलवर ही हर चमन[15] में बंसी बजा रहा है ॥५॥ हर गुल०

८ पत्ता ९ फल १० भक्ति, प्रेम ११ पूरा पूरा १२ जगह, स्थान १३ अनुभवी महात्मा, ज्ञानी १४ महफल, सभा, पंचायत १५ बाग़.

---

३७ राग आसा.

खेडन दे दिन चार नी, वतन तुसाडे मुड़ नहीं ओ आना॥टेक
चोला चुनड़ी सानु मापियां दितड़ां।
रूप दित्ता करतार नी ॥ वतन तुसाड़े० ॥ १
अम्बड़ भोली कत्तया लोड़े।
भठ पइय्यां पूनीयां भठ पये गोढ़े।

तूकले दे वळ्ळ चार नी ॥ वतन तुसाड़े ॥ २
अंवड़ मारे वावल झिड़के ।
मर गया वावल सड़ गयी अम्वड़ ।
टल गया सिर तों भार नी ॥ वतन तुसाड़े ॥ ३
रल मिल सैय्यां खेडन चल्लीयां ।
खेड खिडन्दरी नूं कंह्ला पुरया ।
विसर गया घर वार नी ॥ वतन तुसाड़े० ॥ ४

पंक्तिवार अर्थ.

टेकः—मेरे संसार में खेलने के अव दो चार दिन हैं (क्योंकि मुझे ईश्वर का .इशक़ (प्रेम) लग गया है ॥ इसवास्ते ऐ शारीरक मात पिता! तुम्हारे घर (संसार वाले) में मेरा अव आना वापस नहीं होगा ॥

१ शारीरक चोला (शरीर इत्यादि) तो माता पिता ने दीया, मगर असली रूप करतार ने दीया हुवा है (इसवास्ते मैं ईश्वर की हुं तुम्हारी नहीं) इसलीये टेक०

२ शारीरक माता यह चाहती है कि दुन्या रूपी व्योहार में

लगूं मगर मेरे दिल रूपी तकले (कला) के चार वल पड़गये हैं (क्योंकि ईश्वर के प्रेम में चित्त लग गया) इसवास्ते मैं कह रही हूं कि रूई का कातना, व रूई की पूनीयां अर्थात् (व्योहार संसारक) तमाम भाठ में पड़ें और मैं तुम्हारे घर में ही नहीं आने लगी ॥

३ माता मारती है और पिता झिड़कता है (कि कुछ संसारक काम करूं मगर मेरे वास्ते इस प्रेम के कारण तो) माता सड़गयी और वाप मर गया है और उन का दूर होना मैं सिर से भार टला समझती हूं इसवास्ते (टेक)

४ जब संसार के घर से वाहर निकल कर हम सब सहेलीयां (सखीयां) खेलने को जाने लगीं तो रास्ते में (प्रेम का) कांटा मुझे खेलते २ एसा चुभा कि घर वार दुन्या का तमाम मुझे विसर (भूल) गया ॥ इसवास्ते (टेक)

---

३८ राग आसा.

करसां मैं सोई शृंगार नी, जिस विच पिया मेरे वश आवे। टेक

जिस भूषण विच होवे न दूखन, सोई मेरे दरकार नी।जि०।१

गजरयां वंग्गां तों हुन संग्गां, कच्चा कच उतार नी ॥ जि०॥२

नामदा नामां प्रेम दा धागा, पावूं गल विच हार नी॥जि०॥३
पावांगी लच्छे मैं निर्लज्जे, झांजर पिया दा प्यार नी॥जि०॥४
सैह न सकदी मैं सौकण वैरण, झांजर दा छिंकार नी॥जि०॥५

पंक्तिवार अर्थ.

टेकः अब मैं ऐसा शृंगार (अपने अन्दर को साफ) करूंगी कि ज़िससे मेरा (असली) पति (ईश्वर) मेरे क़ाबू में आजावे ॥

१ जिस भूषण (अन्दरूनी सजावट) से कोई दुःख न उतपन्न हो वही ज़ेवर मैं चाहती हूं (और पैहनूं गी) ताकि मेरा ईश्वर (पति) मेरें क़ाबू में आवे ॥

२ दुन्यावी वंगे (braclets) काच की जो स्त्री लोग पैहन्ती हैं उन को पैहनूते मुझे शरम आती है। इसलीये मैं इस कच्चे काच को उतार कर (ऐसा कोई असली और पुख्तः भूषण पैहन्ती हूं) जिस से मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश होजावे.

३ ईश्वर नाम का तो नामरूपी ज़ेवर मैं पैहनूं गी और उस [भूषण] में प्रेम रूपी धागा डालूंगी। ऐसा सुंदर हार बना कर मैं अपने गले में डालूंगी ताकि मेरा प्यारा पति (ईश्वर) मेरे

क़ाबू में आजावे ॥

४ पाओं में ऐसा लच्छे रूप ज़ेवर जो मेरी शर्म उतार दे मैं पैहनूंगी कि जिस में पिया (प्यारे) के प्यार रूपी झांजरें हों ताकि पति मेरा (ईश्वर) मेरे वश में हो जावे ॥

५ मैं ही १ अकेली स्त्री उस की होना चाहती हूं और उसकी दूसरी स्त्री (सौकन) देखना मैं गंवारा नहीं करसकती और न किसी दूसरी स्त्री (सौकन के ज़ेवर इत्यादि झांजरों की छिंकार सुनना बरदाश्त कर सकती हूं ॥ ताकि पिया का मेरे पर ही प्यार हो और मेरे वश में ही आया हुवा हो.

---

३९ राग पीलू ताल दीपचंदी.

ग़लत है कि दीदार[1] की आर्ज़ू[2] है।
ग़लत है कि मुझ को तेरी जुस्तजू[3] है ॥
तिरा जल्वः[4] ऐ जल्वागर[5] कू बकू[6] है ॥
हजूरी है हर वक्त तू रू ब्रू है।

१ दर्शन २ इच्छा, जिज्ञासा ३ तलाश, जिज्ञासा, ढूंड ४ प्रकाश, तेज़ ५ प्रकाशमान ६ सर्व दिशा, गली.

जिधर देखता हूं उधर तूं ही तू है ॥१॥ टेक
हर इक गुल में तू हो के तू ही बसा है।
सदाहाये बुलबुल में तेरी नवा है ॥
चमन फ़ैज़े .कुद्रत से तेरे हरा है।
बहारे गुलिस्तां में जल्वः तेरा है ॥ २ ॥ जि०
नवोंतात में तूं नमू है शजर की।
जमादात में आब्रू वेहरो बर की ॥
तू हैवां में ताक़त है सैरो सफर की।
तू इन्सां में .कुव्वत है तुलको नज़र की॥३॥जि०
घटा तू ही उठता है घंघोर हो कर।
छुपा तू ही है बेहर में शोर हो कर

७ आवाज़ें ८ गीत, सुर, आवाज़ ९ माया की कृपा से १० बाग़ की बहार में ११ वनस्पति, १२ परतीत, दृश्य, सुंदर्यता १३ वृक्ष झाड़ १४ पहाड़, पत्थर, धातू १५ चमक दमक १६ पृथ्वि अरु समुद्र १७ पशू १८ सैर अरु टैहलना १९ बुद्धि अरु ज्ञान चक्षू

निहां तू हि तूफां में है ज़ोर हो कर
अयां[21] तू हि मौजों[22] मे झक झोर हो कर ॥४॥ जि०

तेरी है सदा[23] रादं[24] में गर कड़क है।
तेरी है ज़िया[25] वर्क़[26] में गर चमक है॥
यह क़ौसे[27] क़ज़ह ही में तेरी झलक है।
जवाहर के रंगों में तेरी डलक[28] है ॥ ५ ॥ जि०

ज़मीं आस्मां तुझ से मामूर[29] हैं सब।
ज़मानो मकां[30] तुझ से भरपूर हैं सब॥
तजल्ली[31] से कूनो मकां[32] नूर हैं सब।
नगाहों में मेरी जहान तूर[33] हैं सब ॥ ६ ॥ जि०

हसीनों[34] में तू हुसनो नाज़ो[35] अदा है।

२० छुपा हुवा २१ ज़ाहर २२ लैहरें २३ आवाज़ २४ बिजली की गर्ज २५ रौशनी २६ बिजली २७ इन्द्र धनुष २८ तेज, चमक २९ भरपूर ३० देश, काल ३१ परकाश, तेज ३२ सर्व स्थान ३३ अग्नि के पर्वत से मुराद है ३४ सुन्दर पुरुष ३५ सौन्दर्यता अहं नखरा

तू उश्शाक़[36] में इश्क़ो सदक़ो[37] सफा है ॥
मजाज़ो[38] हक़ीक़त में जल्वाः तेरा है ।
जहां जाइये एक तू रूनुमा[39] है ॥ ७ ॥ जि०
मकां तेरा हर एक ऐ लामकां[40] है ।
नशां हर जगह तेरा ऐ बे निशां है ।
न खाली ज़मीं है न खाली ज़मां[41] है ॥
कहीं तू निहां है कहीं तू अयां है ॥ ८ ॥ जि०
तेरा ला मकान् नाम ज़ेबा[42] नहीं है ।
मकां कौन सा है तू जिस जाः[43] नहीं है ॥
कहीं मासिवा[44] मैं ने देखा नहीं है ।
मुझे ग़ैर[45] का वहम होता नहीं है ॥ ९ ॥ जि०
ज़मीन्-ओ-ज़मां नूर से हैं मुनव्वर[46] ।

३६ भक्त जन ३७ क़ुरबान् होना, वारे जाना ३८ लौकक अरु परमार्थक प्रेम, स्नेह, संबन्ध ३९ साह्मने हाज़र ४० देश रहित ४१ काल ४२ लायक़, मुनासब ४३ जगह, स्थान ४४ सिवाये तेरे ४५ अन्य. ४६ प्रकाशमान

मकीन्-ओ-मकां ज़ात के तेरे मज़हर[47] ॥
जहां में दिले रास्तां[48] है तिरा घर ।
इधर और उधर से मैं इस घर में आकर ॥१.०॥ जि०

४७ तुझे ज़ाहर करने वाले ४८ सत्य पुरुषों का दिल.

ऐ राम ? (राग पीलू ताल दीपचंदी). ४०.

जो तू है सो मैं हूं जो मैं हूं सो तू है । } टेक
न कुछ आंज़ू[1] है न कुछ जुस्तजू[2] है ॥ }

वसा राम मुझ में मैं अब राम में हूं ।
न इक है न दो है सदा तू ही तू है ॥ १ ॥ जो०

खुली है यह ग्रन्थी[3] मिटी है अविद्या ।
सदा राम अब बस रहा चारसू[4] है ॥ २ ॥ जो०

उठा जब कि माया का पर्दा यह सारा ।
कीया ग़म खुशी ने भी हम से किनारा ॥ ३ ॥ जो०

१ इच्छा, उमेद मात्र २ जिज्ञासा ३ गांठ ४ चारों तरफ,

ज़बान को न ताक़त न मन को रसाई ।
मिली मुझ को अब अपनी बादशाही ॥४॥ जो०

काफ़ी आहंग. ४१.

हुस्ने गुल की नाओ अब बेहरे खिज़ां में बेह गयी ।
माल था सो बिक चुका दुकान खाली रह गयी ॥१॥
बाग़बां रोता फिरे है स । दता बादे खिज़ां ।
गुलसितां किस जा है बुलबुल की कहां चेहचैह गयी ॥२॥
कौन पूछे है तुझे माँह । रोज़े रौशन हो गया ।
नूर की तालब जो थी वह शब सियाह अब है गयी ॥३॥
फिर नहीं आने की वापस है यक़ीं मुझ को सनम ! ।
अब तो तेरे इश्क़ के सदमे जवानी सैह गयी ॥ ४ ॥

१ पुष्प की सुन्दरता २ नाविका ३ समुद्र ४ पत झड़ी अर्थात पत्ते झड़ने का समय ५ बाग़ीचाः ६ बुलबल की आवाज़ ७ चांद ८ दिन चढ़ गया ९ प्रकाश १० जिज्ञासु ११ रात १२ प्यारा १३ प्रेम, भक्ति १४ चोटें.

बाज़ आ बाज़ी से है यह .इशक़बाज़ी जां का खेल।
जाते जाते भी मुझे इतनी नसीहत कह गयी ॥ ५ ॥

राग सोहनी. ४२.

जो दिलको तुम पर मिटा चुके है,
मज़ाके[1] उलफत उठा चुके है।
वह अपनी हस्ती मिटा चुके हैं,
खुदा को खुद ही में पा चुके हैं ॥ १ ॥
न सूऐ[2] क़ाबा: झुकाते हैं सर,
न जाते हैं बुत्कदा:[3] के दर[4] पर।
उन्हें है दैहरो[5] हरम[6] बराबर,
जो तुम को क़िबला[7] बना चुके हैं ॥ २ ॥
न हम से प्यारे छुड़ाओ दामां,

१ प्रेमानन्द, या प्रेम का स्वाद २ मुसलमानों के तीर्थ क़ाबा की तरफ ३ मंदर ४ दरवाज़ा ५ मन्दर ६ मसजद ७ पूजनीय ८ पल्ला.

न देखो बाग़ो बहारो रिज़्वां[9]।
कब उन को प्यारे हैं हूरो[10] ग़िल्मां[11],
जो तुम को प्यारा बना चुके हैं ॥ ३ ॥
सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे हस्ती[12]।
मरेंगे यारो तलब[13] में हक़[14] की,
जो नाम तालिब[15] लिखा चुके हैं ॥ ४ ॥
न बोल सक्ते थे कुछ ज़ुबां से,
न याद उन को है जिस्मो जां[16] से।
गुज़र गये हैं वह हर मकां से,
जो उस के कूचे[17] में आ चुके हैं ॥ ५ ॥
गर और अपना भला जो चाहो,

९ स्वर्गभूमी १० स्वर्ग की सुन्दर स्त्री ११ स्वर्ग के नौकर १२ देह अध्यास से मुराद है १३ जिज्ञासा १४ सत स्वरूप १५ जिज्ञासू. ढूंडने वाला १६ शरीर, प्राण १७ कूंज गली, उसकी राह से मुराद है ॥

यह, राम अपने से कह सुनाओ।
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ॥ ६ ॥

आत्म ज्ञान.

१. दोहरा.

चेक्षू जिन्हें देखें नहीं चक्षू की अख मान।
सो परमातम देव तुं कर निश्चय नहीं आंन॥ (टेक)
जाको वानी न जपे जो वानी की जान॥ सो०
श्रोत्रै जाको न सुनें जो श्रोत्र के कान॥ सो०
प्राणो कर जीवत नहीं जो प्राणों के प्राण॥ सो०
मन बुद्धि जाको न लखें परकाशक पेहचान॥ सो०

१ आंख २ और, दूसरा ३ कान ४ प्रकाश करने वाला.

(नोट) यह कविता केनोपनिषद् के पांच मंत्रो के तात्पर्य से परोई हूई है.

---

२. परज ताल चलन्त.

दरया से हुबाबे की है यह सदा।

१ बुदबुदा २ आवाज़

तुम और नहीं हम और नहीं ॥
मुझ को न समझ अपने से जुदा ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ १ ॥
आईना मुक़ाबले रुख़ जो रखा ।
झट बोल उठा यूं अक्स उस का ॥
क्यों देख के हैरान यार हूवा ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ २ ॥
जब गुञ्चः चमन में सुबह को खिला ।
तब कान में गुल के यह कहने लगा ॥
हां आज यह उक़दः है हम पै खुला ।

दर्पण या शीशा ४ मुंह के साह्मने ५ प्रतिबिम्ब ६ कली पुष्प की ७ बाग़ ८ प्रातः काल ९ फूल, पुष्प १० मुशकल बात, घुंडी (अर्थतात जब प्रातः काल बाग़ में कली खिली और फूल बनगयी तो उसी फूल के कान में यह कहने लगी " कि " आज यह हमारा भेद (खुल गया अर्थात) हल हो गया है कि तुम और नहीं और मैं और नहीं मैं ही फूल थी).

तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ३ ॥

दाने ने भला खिरमन[11] से कहा।
चुप रहो इस जा: नहीं चूंन-[12]ओ-चरा ॥
वहदत[13] की झलक कसरत[14] में दिखा।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ४ ॥

नासूत[15] में आ के यही देखा।
है मेरी ही जात[16] से नशव-[17]ओ-नमा ॥
जैसे पंबा:[18] से तार का हो रिश्ता[19]।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ५ ॥

तू क्यों समझा मुझे गैर[20] बता।

११ दानों के ढेर का नाम खिरमन होता है १२ क्यों और किसतरह १३ एकता १४ बहुत (दाना खिलवाड़े से कहने लगा कि इस जगह क्यों कब वाजव नहीं मैं एकेला ही यह बहुत बन कर खिलवाड़ा कहलाता हूं इसवास्ते तू और नहीं मै और नही) १५ जागृत १६ निज स्वरूप (आत्मा) १७ बढ़ते फूलते हैं या बढ़ना फूलना. १८ रूई का गुफ्फा १९ समूबन्ध २० दूसरा भिन्न

अपना रुखे जेबा न हम से छुपा ॥
चिक पर्दा उठा टुक साह्मने आ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ६ ॥

२१ सुन्दर मुंह

---

३. भैरवी ताल तीन.

है दैरो हरम में वह जलवा: कुनां
पर अपना तो रखता वह घर ही नहीं ॥ १ ॥
है नूर का उस के जहूर खिला
पर है वह कहां यह खबर ही नहीं ॥ २ ॥
कोई लाख तरह से भी मारे मुझे
पर मेरा तो कटता यह सर ही नहीं ॥ ३ ॥
वह मकां है मेरा तनहाई में यां

१ मन्दर और मसजिद (काबा) २ प्रगट हूवा हुवा ३ पकाश
४ प्रगट, व्यक्त, प्रकाशमान ५ सिर, ६ जिस जगह

शमसो क़ुँमर का गुज़र ही नहीं ॥ ४ ॥
न तो आवो हवा न है आतश यां
कोई मेरे सिवाय तो वशर ही नहीं ॥ ५ ॥
दरे ११ दिल को हला कर दर्शन आ
कहीं करना तो पड़ता सफ़र ही नहीं ॥ ६ ॥

७ सूरज और चांद ८ पानी, और वायू ९ अग्नि १० जीव जन्तू ११ दिल के दर्वाजे को खोल.

४ गज़ल राग जिला संधोड़ा.

अगर है शौक़ मिलने का अपस की रमज़ पाता जा ।
जला कर खुद नमाँई को भसम तन पै लगाता जा ॥ टेक
पकड़ कर इश्क़ का झाड़ू सफा कर दिल के हुजड़े को ।
दूई की धूल को ले के मुसल्ले पर उड़ाता जा ॥ १ ॥ अ०

१ अपने आपकी २ भेद, बुंडी ३ अहंकार, मगरूरी ४ कोठड़ी ५ द्वैत ६ नमाज़ पढ़ने वक्त जो आगे कपड़ा बिछाया जाता है

मुसल्ला फाड़ तसँबीह[7] तोड़ किताबां डाल पानी में ।
पकड़ कर दस्त[8] मस्तों का निजानन्द को तूं पाता जा ॥ २ अ.
न जा मस्जद न कर सेजदा[9] न रख रोज़ा[10] न मर भूखा ।
वुजू़ का[11] फोड़ दे कूज़ा शराबे[12] शौक़ पीता जा ॥ ३ ॥ अ.
हमेशां खा हमेशां पी न गफलत से रहो इक दम ।
अपस तूं खुद खुदा होके खुदा खुद हो के रहता जा ॥४॥ अ.
न हो मुल्ला न हो क़ाज़ी न खिलका[12] पेहन शेखों का ।
नशे में सैर कर अपनी खुदी को तूं जलाता जा ॥५॥ अ.
कहे मनसूर सुन क़ाज़ी नेवाला[13] कुफर का मत पी ।
अनलहक़[14] कहो सबूती[15] से तूं यही कलमा पकाता जा ॥६॥ अ.

७ माला जाप करने की ८ हाथ ९ वन्दगी, पूजा १० पूजा या नमाज़ के समय मूंह धोने का कूज़ा ११ ईश्वर के प्रेम की आनन्द दिलाने वाली शराब १२ चोगा, लम्बा कोट शेखोंवाला १३ घूंट, ग्रास, १४ मैं खुदा हूं, अहं ब्रह्मास्मि १५ पक्के दिल से.

५ राग जिला पीलू ताल दीपचंदी.

क्या खुदा कुं ढूंडता है यह बड़ी कुछ बात है (टेक)
तू खुदा है तू खुदा है तू खुदा की ज़ात[1] है ॥ १ ॥ क्या.
क्या खुदा को ढूंडता है सदा तो तेरे पास है ।
पास है पाता नहीं ज्यों फूलन में वास[2] है ॥ २ ॥ क्या.
फिरे भूला एक मृग औ कस्तूरी वाकी पास है ।
पास है पाता नहीं फिर फिर सूंघे घास है ॥ ३ ॥ क्या॰
तुझ में है इक बोलता वह ही खुदा तूं आप रे ।
है नारायण हृदय भीतर तूं तेरो तपास[3] रे ॥४॥ क्या॰

१ वास्तव स्वरूप २ खुशबू ३ खोज, इमतिहान लेना, जांचना.

---

६ ठुमरी राग जिला झंजोटी.

जहां देखत[1] वहां रूप हमारो (टेक)
जड चेतन को भेद न पेखत, आत्म एक अखंड निहारो । ज.
क्षिति[2] जल तेज पवन आकाशे, कारण सूक्षम स्थूल विचारो ॥

१ देखो २ ज़मीन, पृथ्वि.

नर नारी पशु पंछी भीतर. मुझ बिन कोई न जागन हारो। ज.
कीट पतंग पिशाच पदारथ, सरुवर तरुवर जंगल पहाड़ो ॥ ज.
मैं सब में सब ही मेरे माँहि, नाम रूप निरंजन धारो । ज.
नाथ कृपा नरसिंह भयो अब, व्यापि रह्यो हम से जग सारो ॥

७

आत्म चेतन चमक रह्यो, कर निधड़क दीदार[1] ॥ टेक.
तूं परमानन्द आप है, झूटे हैं सुतदार[2] ॥ १ ॥ आ०
चमड़ी में हित[3] जो करें, वही पूरे चमार ॥ २ ॥ आ०
नाश वान जग देख के, समझत नाहिं गंवार ॥३॥ आ०
दुर्लभ नर तन पाय के, क्यों न करत विचार ॥४॥ आ०
तन मंदर अद्भुत बनयो, तूं ठाकर सरदार ॥५॥ आ०
विषयों में फंस फंस मरे, जान खोय बेकार ॥६॥ आ०
जो सुख चाहें तो त्याग दे, परधन अरु परनार ॥७॥ आ०

१ दर्शन २ स्त्री पुत्र ३ प्यार.

धन जोबॅन स्थिर है नहीं, लॅख संसार अॅसार ॥८॥ आ०
चमॅन खिलो दिन चार को, गरभ करो नहीं यार ॥९॥ आ०
चौरासी के चक्कर से, कर ले अब निर्स्तार ॥ १०॥ आ०

४ जवानी, युवावस्था ५ समझ, निश्चय कर ६ सार रहित, शुन्याद रहित ७ बाग ८ छुटकारा ॥

८

अब मोहे फिर फिर आवत हांसी ॥ टेक.

सुख स्वरूप होय सुख को ढूंडे, जल में मीनॅ प्यासी १. अ०
सभी तो हैं आत्म चेतन, अॅज अखंडॅ अविनाॅशी ॥२ अ०
करत नहीं निश्चय स्वरूप का, भाजत मथरा कांसी ॥ ३ अ०
क्षनॅभंगरता देख जगत की, फिर भी धारत उदासी॥४अ०
निरॅभय राम राम कृपा से, काटी लख चौरासी ॥५अ०

१ मछी का नाम २ जन्म रहित ३ टुकड़ों बगैर ४ नाश रहित ५ क्षन में नाश होने वाली वस्तू ६ भय रहित, अरु कवि का नाम है ॥

९

तूं ही सच्चिदानन्द प्यारे। तूं ही सच्चिनन्द ॥ टेक.

विषयों से मन रोक बावा, आंख ज़रा कर बंद ॥१॥ तूं०

अचल[2] हो कर अपने अंदर, देख तूं बालमुकंद ॥२॥ तूं०

देख अपने आप को, हैं तूं ही आनन्द कन्द[3] ॥३॥ तूं०

है नहीं कोइ बन्ध तो में, रहो तूं निर द्वन्द[4] ॥४॥ तूं०

कृष्ण राधा. राम सीता, तूं ही बालमुकन्द ॥५॥ तूं०

यह रमज़[5] समझ कर तूं, काट दे सब फंद ॥६॥ तूं०

समझ कर सब भरम को, करो दूर दुःख गंध ॥७॥ तूं०

वृत्ति ब्रह्माकार करके, भोग तूं परमानन्द ॥८॥ तूं०

१ तूं ही सत स्वरूप और तूं ही आनन्द और चित् स्वरूप है २ स्थित बैठ कर ३ दुःख से रहित मीठा आनन्द ४ दुःख सुख, सर्दी, गर्मी से रहित ५ गुह्य भेद.

---

१० राग कालिंगड़ा ताल केरवा.

ठोकर[1] खा खा ठाकर डिट्ठा[2] ठाकर ठीकरे[3] माहिं ।

१ चोट २ देखा ३ मट्टी के टुकड़े,

ठीकर भजदा[४] टुटदा सड़दा ठाकर इकसे थांहि ॥
ठौर ठौर विच ठैहरया[५] ठाकर ठाकर बाहर नांहि ।
ठग ठीक ठाकर ही ठाकर ठाकर ही जहां तहां ॥
ठाकर राम नचावे नाचे वैह जांदा[६] जां वांहि ॥

४ टूटता ५ जगह ६ जहां बठाना चाहो अथवा बैठना चाहे वहां ही बैठ जाता है ।

---

११ राग धनासरी ताल दादरा.

जिस को हैं कहते खुदा हम हि तो हैं ।
मालके[१] अर्ज़-ओ-समा हम ही तो हैं ॥
तालबाने[२] .हक़ जिसे हैं ढूंडते ।
अर्श[३] पर वह दिलरुबा[४] हम ही तो हैं ॥
.तूर[५] को सुरमा कीया इक आन[६] में ।

१ पृथ्वि और आकाश के मालक २ सचाई के जिज्ञासू (चाहने वाले ढूंडने वाले) ३ आकाश ४ माशूक़ प्यारा ५ पहाड़ का नाम है ६ घडी

नूँर मूसा को दीया हम ही तो हैं ॥
तिशनः-एँ-दीदारे लब के वास्ते ।
चशमः-एँ-आवे बक़ा हम ही तो हैं ॥
नाँर में माँह में काँकव में सदा ।
मिहँर में जलँवा नुमा हम ही तो हैं ॥
बोसँतौने नूर से वैहरे खँलील ।
नार को गुलशँन कीया हम ही तो हैं ॥
नूँह की कशती को .तूफां से बचा ।
पार बेड़ा कर दीया हम ही तो हैं ॥

७ प्रकाश (अर्थात जिस ने यह हज़रत मूसा को पहाड़ तूर पर दर्शन दीये वह हम ही तो हैं) ८ दर्शन के प्यासों की प्यास बुजाने के वास्ते ९ अमृत का चशमा हम ही तो है १० अग्नि ११ चांद १२ सतारे १३ सूरज १४ आसमान प्रकाशमान १५ प्रकाशस्वरूप के बागीचे से १६ सच्चे .आशक़ के वास्ते १७ बाग़ अर्थात (जिस यार ने आग को बाग में बदल दीया वह हम ही तो हैं) १८ पैगम्बर का नाम.

मर्दो[19] ज़न पीरो[20] जवां वैहशो-त्यूर[21]।
औलियां[22]-ओ-अंबियां[23] हम हि तो हैं ॥
खाको वादो आवो[24] आतश और खला।
जुमलों[25] मा दर जुमलों[26] मा हम ही तो हैं ॥
.उक़्द:-ओ वहदत[27] पसन्दों के लीये।
नाखुने मुश्किल[28] कुशा हम ही तो हैं ॥
कौन किस को सिर झुकाता अपने आप।
जो झुका जिसको झुका हम ही तो है ॥

१९ स्त्री पुरुष २० बूढ़ा जवान २१ हैवान और पक्षी २२ अवतार २३ नवी २४ पृथ्वि, हवा, पानी, आग और आकाश २५ सब मुझ में (हम में) २६ और सब हम २७ अद्वैत के मसलों को पसन्द करने वालों के लीये २८ मुशकल हल करने वाले नाखुन (.जीये)

---

१२ राग पर्ज. ताल केरवा.

खुदाई कहता है जिस को .आलम[1]।

1 जहान, दुन्या.

सो यह भी है इक खयाल मेरा ॥
बदलना सूरत हर एक ढंग[2] से ।
हर एक दम में है .हाल मेरा ॥
कहीं हूं ज़ाहर कहीं हूं मज़हर[3] ।
कहीं हूं दीद[4] और कहीं हूं .हैरत[5] ॥
नज़र है मेरी नसीब मुझ को ।
हुवा है मिलना मुहाल[6] मेरा ॥
तलिस्मे[7] इसरारे गंजे मखफी[8] ।
कहुं न सीने[9] को अपने क्योंकर ॥
.अयां[10] हुवा .हाले हरे दो .आलम[11] ।
हुवा जो ज़ाहर कमाल मेरा ॥
अलस्तु कोलू[12] बला की रमज़ें[13] ।

२ तरीक़ा ३ दृश्य की कान, विम्व ४ दृष्टि ५ अश्चर्य ६ मुशकल ७ जादू ८ छुपे हुवे खज़ाने के भेद (गुह्य पदार्थ) ९ दिल १० ज़ाहर, खुला, ११ दोनो जहानों का हाल १२ सुक्रात (Socrates) अफलातू के नाम १३ गुह्य उपदेश, इशारे.

न पूच्छ मुझ से वर्तन[14] तू हरगिज़ ॥
हूं आप मशगूल[15] आप शागिल[16] ।
जवाब खुद है सवाल मेरा ॥

१४ कवि का खताव (नाम) १५ मसरूफ १६ काम में लगाने वाला.

---

१३ राग झंजोटी ताल दादरा.

१ मैं न बन्दाः न खुदा था मुझे मालूम न था ।
दोनों इल्लत[1] से जुदा था मुझे मालूम न था ॥१॥
२ शकले हैरत हुई आयीना[2] दिल में पैदा ।
मानीये[3] शाने[4] सफा था मुझे मालूम न था ॥ २ ॥
३ देखता था मैं जिसे हो के नदीदाः[5] हर सू ।
मेरी आंखों में छुपा था मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥

१ सबब (इस जगह नाम से मुराद है) २ दिल के शीशे ३ बिम्ब, असली स्वरूप ४ प्रतिबिम्ब ५ न ज़ाहर, छुपा हुवा.

४ आप ही आप हूं यहां ता॒लिबो मत॒लूब है कौन ।
मैं जो .आशक़ हूं कहा था मुझे मा॒लूम न था ॥४॥

५ वजह मा॒लूम हूई तुझ से न मिलने की सनम ।
मैं ही खुद पर्दा बना था मुझे मा॒लूम न था ॥५॥

६ बा॒द मुद्दत जो हूवा वस्ल खुला रोजे वत॒न ।
वासिले .हक़ मैं सदा था मुझे मा॒लूम न था ॥६॥

६ जिज्ञासू ७ इच्छित पदार्थ ८ ऐ प्यारे ! ९ काल १० मेल, मुलाक़ात ११ भेद, घुंडी १२ सत् का पाने वाला (सत् को प्राप्त हुये)

पंक्तिवार अर्थ.

१ यह मुझे मा॒लूम नहीं था कि मैं न जीव हूं न खुदा हूं और न मुझे यह मा॒लूम था कि मैं दोनों नामो से परे हूं.

२ दिल में (शीशारूपी अन्तःकरण में) हैरानी की सूरत प्रगट हुई मगर यह मुझे मा॒लूम न था कि साफ़ शकलों का कारण (बिम्ब) मैं हूं.

३ जिस को मैं ज़ाहर न देखता था वह मेरी आंखों में छुपा

हुवा था यह मालूम न था.

४ सब कुच्छ मैं आप ही आप हूं, जिज्ञासू और चाहने वाला पदार्थ कोई नहीं, मैं ने जो कहा था कि मैं आशक़ हूं यह मुझे मालूम न था.

५ ऐ प्यारे ! तुझ से जब ना मिलने की वजह मालूम हूई (तो देखा) कि मैं ही खुद (इसमें) पर्दा बना हुवा था यह मुझे मालूम न था.

६ कुच्छ काल पश्चात जब मुलाक़ात हुई (दर्शन हुवे) तो अपने घर का भेद खुल गया (वह यह) कि सतस्वरूप को मैं सदा प्राप्त हुवे २ था मुझे मालूम न था.

---

१४ राग झंजोटी ताल दादरा.

शमा[1]रू जल्वा[2]कुना था मुझे मालूम न था
साफ पर्दे में अयां[3] था मुझे मालूम न था } टेक

गुल[4] में बुलबुल में हर इक शाख में हर पत्ते में।

१ दीपक की लाट (मुख) २ रौशन, प्रकाशमान ३ ज़ाहर, स्पष्ट ४ पुष्प.

जावजा उस का निशां था मुझे मालूम न था ॥ १ ॥
एक मुद्दत दैहरो हरमं में ढूंडा नाहक ।
वह दर कल्ब निहां था मुझे मालूम न था ॥ २ ॥
सच तो यह है कि सिवा यार के जो कुछ था हयात ।
वैहम था शक था गुमां था मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥
है ग़लत, हस्ति-ए-मौहूम को जो समझे थे ।
हर वतन अपना जहां था मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥

५ हर स्थान ६ मंदर ७ मस्जद ८ निष्फल, बे फायदाः ९ अन्दर १० हृदय दिल ११ छुपा हुवा १२ जिन्दाः, प्राण. रखता हुवा १३ भ्रम १४ कल्पित वस्तु, कल्पित अपने देह, प्राण. १५ देश, घर, यहां कवि के नाम से भी मुराद है. १६ मुलक,

---

१५ राग काफी ताल गजल.

मुझ को देखो ! मैं क्या हूं तन तन्हा आया हूं ।
मतला-ए-नूरे खुदा हूं तन तन्हा आया हूं ॥ १ ॥

१ अकेला २ प्रगट होने की जगह ३ ईश्वर का प्रकाश (ज्ञान)

मुझ को .आशक़ कहो म़ाशूक़ कहो इशक़ कहो ।
जा बजा जल्वा नुमा हूं तन तन्हा आया हूं ॥२॥
मैं ही मसजूदो मेलायक हूं वशकले[6] आदम ।
मज़हरे[7] खास ख़ुदा हूं तन तन्हा आया हूं ॥ ३ ॥
लामकां अपना मकां है सो तमाशा के लीये ।
मैं तो पर्दे में छुपा हूं तन तन्हा आया हूं ॥ ४ ॥
हूं भी, हां भी अनलहक़ है यह भी मञ्ज़ल अपनी ।
शम्से[10] .इर्फां की ज़ियां हूं तन तन्हा आया हूं ॥ ५ ॥
किस को ढूंढूं किसे पावूं मैं—बताओ साहिब ।
आप ही आप में छुपा हूं तनतन्हा आया हूं ॥ ६ ॥

४ ज़ाहर, प्रगट ५ मैं देवताओं का पूजनीय हूं अर्थात देवतागण मेरी उपासना करते है ६ पुरुष की सूरत में ७ स्वयं ईश्वर के प्रगट करने वाला ८ देश रहत ९ अहम् ब्रह्मास्मि, " मैं ईश्वर (ब्रह्म) हूं १० ज्ञान के सूरज का प्रकाश.

१६ राग तिलंग ताल केरवा.

कहां जाऊं ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूं क्या मैं ।
मैं इक तूफ़ां क्यामत का हूं पुर हैरत[1] तमाशा मैं ॥
मैं वातन[2] मैं .अयां[3] ज़ेरो[4] ज़बर[5] चप[6] रास्त[7] पेशो[8] पस[9] ।
जहां मैं हर मकां[10] मैं हर ज़मां[11] हूंगा सदा था मैं ॥
नहीं कुच्छ जो नहीं मैं हूं इधर मैं हूं उधर मैं हूं ।
मैं चाहूं क्या किसे ढूंढूं सबों में ताना वाना मैं ॥
वह वैहरे हुस्नो[12] खूबी हूं हुबाब[13] हैं क़ाफ[14] और कैलास ।
उड़ा इक मौज[15] से क़तरा बना तब मिहर[16] आसा मैं ॥
ज़र[17]–ओ–निमत मेरी किरणों में धोखा था सुराब[18] ऐसा ।
तजल्ली[19] नूर है मेरा कि राम .अहमद हूं ईसा मैं ॥

१ हैरानी से भरा हुवा २ अन्दर, ३ ज़ाहर ४ नीचे ५ उपर ६ बायां ७ दायां ८ आगे ९ पीछे १० देश ११ काल १२ सुंदरता का समुद्र १३ बुलबुला १४ कोह काफ पर्वत १५ लैहर १६ सूरज जैसा १७ धन और दौलत १८ धूप में रेत का मैदान जो पानी भान हो १९ तेज़ प्रकाश.

१७ राग तिलंग केरवा ताल.

मैं हूं वह ज़ात नोपैदा किनारो मुतलको वेहद
कि जिस के समझने में .अक़ले कुल भी तिफले नोंदां हैं।
कोई मुझ को खुदा माने कोई भगवान माने है
मेरी हर सिफत वन्ती है मेरा हर नाम शॉयां है॥
कोई वुत खाना में पूजे हरम में कोई गिर्जा में
मुझे वुतखाना–ओ–मसजद कीसा तीनों यक्सां है।
कोई सूरत मुझे माने कोई मुतलक़ पिहचाने है
कोई खालक़ पुकारे है कोई कहता यह इन्सां है॥
मेरी हस्ती में यकताई दूई हर्गज़ नहीं वनती
सिवा मेरे न था–होगा न है यह रमंज़े इर्फां है॥

१ न उत्पन्न होने वाली वस्तू २ विलकुल अनंत ३ बुद्धि
४ नादान बच्चा ५ .आम. ज़ाहर (छूपा हुवा) ६ क़ावा (मसजद)
७ गिर्जाघर ८ अद्वैत ९ मेरे विगैर १० ज्ञानीयों की रमज़

१८ राग सिंधोरा ताल दीपचंदी.

न दुशमन है कोई अपना न सांजन[1] ही हमारे हैं। } टेक
हमारी ज़ाते मुतलक़ से हूवे यह सब पसारे हैं ॥ }

न हम हैं देह मन बुद्धि नहीं हम जीव नै[3] ईश्वर[2]।
बले इक कुन[4] हमारी से बने यह रूप सारे हैं ॥

हमारी ज़ात[5] नूरानी[6] रहे इक हाल पर दायम[7]।
कि जिस की चमक से चमकें यह मिहर-ओ-मांह संतारे हैं ॥

हर इक हस्ती[11] की है हस्ती[12] हमारी ज़ात पर क़ायम।
हमारी नज़र पड़ने से नज़र आते नज़ारे[13] हैं ॥

अंगे मुख्तलिफ[14] नाम-ओ-शकल जो देमक मारे है।
हमारे नूर[16] के शोले[17] से उठते यह शरारे हैं ॥

१ मित्र, २ आत्मा, असल स्वरूप, ३ नहीं ४ आज्ञा, हुक्म, इशारह ५ स्वरूप असली, आत्मा ६ प्रकाश स्वरूप ७ नित, हमेशा ८ सूरज ९ और १० चंद्रमा ११ वस्तू १२ वस्तू पना, जान १३ नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ १४ नाना प्रकार के नाम और रूप १५ चमके है. १६ अपने स्वरूप (आतमां) के अग्नि रूपी पर्वत की १७ लाट १८ अंगारे.

१९ राग जंगला ताल धुमाली.

बाग़े[1] जहां के गुल[2] हैं या ख़ार[3] हैं तो हम हैं।
गर यार हैं तो हम हैं अग़यार[4] हैं तो हम हैं॥ } टेक

दरया-एँ-मार्फ़त[5] के देखा तो हम हैं साहिल[6]।
गर वार हैं तो हम हैं वर पार हैं तो हम हैं॥

वाबस्तः[7] है हमीं से गर जब्र[8] है वगर क़दर[9]।
मजबूर हैं तो हम हैं मुख़तार हैं तो हम हैं।

मेरा ही हुसन[10] जग में हर चंद मौजज़न[11] है
तिस पर भी तेरे तिशनः-एँ[12]-दीदार हैं तो हम हैं॥

फैला के दामे[13] उलफ़त घिरते घिराते[14] हम हैं।
गर सैद[15] हैं तो हम हैं सय्याद[16] हैं तो हम हैं॥

१ दुन्या के बाग़ के २ फूल ३ कांटा ४ दुशमन ५ आत्मज्ञान का दरया (समुद्र) ६ तट (किनारा) ७ बन्धा हुवा है, संबन्ध रखता है ८ ज़बरदस्ती ९ इख़त्यार, ताक़त १० सौन्दर्यता ११ लैहरें मार रहा है १२ देखने के प्यासे १३ मोह का जाल १४ फंसते फंसाते १५ शकार १६ शकारी.

अपना ही देखते हैं हम बन्दोबस्त यारो।
गर दाँद हैं तो हम हैं फर्याद हैं तो हम हैं ॥

१७ इन्साफ .अदालत.

---

२० भैरवी ग़ज़ल.

दिल को जब ग़ैर[1] से सफा देखा। }
आप को अपना दिलरुबा[2] देखा॥ } टेक

पी लीया जाम[3] बाद:-ऐ-वहदत[4]।
ख्वेश[5]-ओ[6]-वेगानाँ[7] आशना[8] देखा॥

जिस ने है ज़ात[9] अपनी को जाना।
आप को .हक़ से कब जुदा देखा॥

रमज़े रहबर[10] को अपने जब समझा।

१ दूसरे से २ माशूक़ (प्यारा) ३ प्याला ४ अद्वैत रूपी मद [शराब] का ५ अपना ६ और ७ बेगाना दूसरा ८ दोस्त मित्र ९ सत् स्वरूप १० गुरू के उपदेश.

न कोई ग़ैरे[11] व-मासवा[12] देखा ॥
करके बाज़ार गर्म कसरत[13] का ।
आप को अपने में छुपा देखा ॥
ग़ैर का इस्म गरचि है मशहूर ।
न निशां उस का न पता देखा ॥
जब से दर्शन है राम का पाया ।
ऐ राम ! क्या कहूं कि क्या देखा ॥

११ अपने से अलग कोई न देखा १२ नानत्व १३ नाम,

---

२१ भैरवीं ग़ज़ल.

यार को हम ने जा[1] बजा देखा ।
कहीं बन्दाः कहीं खुदा देखा ॥
सूरते गुल[2] में खिलखिला के हंसा ।
शकले बुलबुल[3] में चैहचहा देखा ॥

१ जगह बजगह २ फूल की सूरत ३ बुलबुल की शकल में.

कहीं है बादशाहे तख्ते[4] नशीं ।
कहीं कासा[5] लीये गदा[6] देखा ॥
कहीं आबद[7] बना कहीं ज़ाहिद[8] ।
कहीं रिंदो[9] का पेशवा[10] देखा ॥
करके दावा कहीं अनलहक़[11] का ।
बर सरे[12] दार वह खिचा देखा ॥
देखता आप है सुने है आप ।
न कोई उस के मासवा[13] देखा ॥
बलकि यह बोलना भी तकल्लुफ[14] है ।
हम ने उस को सुना है या देखा ॥

४ तखत पर बैठा हुवा ५ भिष्या का प्याला, खप्पर ६ फकीर ७ पूजा पाठी ८ पवित्रता शुद्धि वर्तने वाला ९ मस्त अलमस्त १० सरदार ११ मैं खुदा हूं (शिवोऽहं) १२ सूली के सिरे पर १३ अन्य दूसरा १४ ज्यादा, यूं ही

२२ झंजोटी ताल ठुमरी.

भाग तिन्हां दे अच्छे । जिन्हां नूं राम मिले (टेक)

जब 'मैं' सी तां दिलबर ना सी ।
'मैं' निकसी पिया घट घट वासी ॥
खसम मरे घर वस्से, भाग तिन्हां० ॥ १

जद 'मैं' मार पिछां वल सुट्टीयां ।
प्रेम नगर चढ़ सेज़े सुत्तीयां ॥
इसक़ हुलारे दस्से, भाग तिन्हां० ॥ २

चादर फूक शरह दी सेकां ।
अक्खीयां खोल दिलबर नूं वेखां ॥
भरम धुब्हे सब नस्से, भाग तिन्हां० ॥ ३

ढूंड ढूंड के .उमर गंवाई । जां घर अपने झाती पाई ॥
राम संज्जे राम खब्बे, भाग तिन्हां० ॥ ४

१ भागी, निकल गयी २ अहंकार ३ उनके ४ फैंका ५ ज़ोर दखलावे ६ कर्म कांड ७ तापां ८ भागे ९ झांकी ली १० दायें ११ बायें.

पंक्तिवार अर्थ।

१ जब अहंकार अन्दर था तब यार (स्वरूप का अनुभव) अन्दर न था, मगर जब अहंकार निकल गया तो ईश्वर घट २ में बसा नज़र आया, शरीर का खावन्द (पति रूपी) अहंकार जब मर जाता है तब ही यह घर वस्ता है क्योंकि स्वरूप का अनुभव तबही होता है ॥ बेशक उन के नसीब बड़े अच्छे हैं जिनको राम घट घट में नज़र आता मिलता है ॥

२ जब अहंकार को मार कर अपने पीछे फैंक दीया तो प्रेम नगर (भक्ति) के बिस्तरे पर सोना नसीब हुवा उस समय यारका .इशक़ (प्रेम) अपना ज़ोर दखलाने लग पड़ा ॥ बेशक वह उत्तम भागी हैं जिन को इस तरह राम मिलजावे.

३ जब मैं कर्म कांड की चादर (पर्दे) को ज्ञान अग्नि से जलाकर उस की आग तापने लगा तो यार (अपना स्वरूप) उसी वक्त नज़र आने लग पड़ा, जब मैं ने ज्ञान चक्षू खोलीं फिर सब शक शुभे नाश हो गये ॥ बेशक उन के भाग्य बड़े अच्छे है जिनको राम इस तरह नज़र आये।

४ पाहिले ढूंड ढूंड के मैं ने .उमर गंबाई। मगर जब मैंने अपने घर के अन्दर झांकी ली तो राम (मेरा स्वरूप) दायें और बायें

नज़र पड़ा ॥ बेशक उन के नसीब अच्छे हैं जिनको राम इस तरह मिल गया ॥

---

२३ राग बिहाग ताल दादरा.

मिक़राज़े[1] मौज दामने[2] दरया कतर गयी। }
वहदत[3] का बुर्क़ा फट गया सारी सतर[4] गयी ॥ } टेक

दरयाए[5] बेखुदी पै जो बादे[6] खुदी चली।
कसरत की मौज हो के वह सारे पसर गयी ॥
इस्मो[9] सिफत के शौक़ ने ऐसा कीया[10] रज़ील,।
गुमनामी[11] वे सफाती[12] की सारी क़दर[13] गयी ॥
जामा[14]: वजूद पैहन के बाज़ारे[15] दैहर में,।

१ लैहर की कैंची २ दरया के पल्ले (चादर) ३ एकता का पर्दा ४ भेद, परदा दूर हो गया ५ बेखुदी (अहंकार रहत) के समुद्र अथवा धारा पर ६ अहंकृत रूपी वायू ७ नानत्व की लैहर ८ सर्व ओर फैल गयी ९ नाम रूप १० कमीना, नीच ११ छुपी हुई १२ निर्गुणता १३ इज़्ज़त १४ शारीरक चोला (शरीर रूपी लिबास) १५ समय (ज़माने) के बाजार में.

ज़ातो सिफ़ात[16] अपनी की सारी खवर गयी ॥
फ़रज़न्दो[17] ज़नो माल की महब्बत में होके ग़र्क़ ।
इन्सान के वजूद[18] की सारी वक़र[19] गयी ॥
शहवत[20] तमा[21]–ओ–खशम[22]–ओ–तकब्बर[23] में आ फंसे ।
यकताई[24] ज़ात की जो शरम थी उतर गयी ॥
यह करलीया यह करता हूं यह कल करूंगा मैं ।
इस फिकरो इन्तज़ार में शामो सहर[25] गयी ॥
बाक़ी रही को दिल क़ी सफाई में सर्फ़ कर ।
आरायशे[26] वजूद में सारी गुज़र गयी ॥
भूले थे देख दुन्या की चीज़ों को हम यहां ।
हादी[27] ने इक तमांचा दीया होश फिर गयी ॥

१६ असली स्वरूप और उसके गुण १७ पुत्र, स्त्री और धन १८ चोला (शरीर) १९ इज्ज़त २० विषय कामना २१ लालच २२ क्रोध २३ अहंकार २४ आत्मा की लासानी, अद्वतीयपन की २५ रात्री और दिन (संध्याकाल और प्रातः काल) २६ शरीर के सज़ाने में २७ रास्ता बताने वाला, शिक्षा देनेवाला गुरू.

गफ़लत की नींद में जो त[२८]अय्युन की ख्वाब थी ।
बे[२९]दार जब हुए तो न जाना किधर गयी ॥
माशूक़ की तलाश में फिरते थे दर बदर ।
नज़र आया बे [३०]नक़ाब दूई की नज़र गयी ॥
दिलदार का वसाल[३१] हुवा दिल में जब हुसूल[३२]।
दिलदार ही नज़र पड़ा दीदा[३३] जिधर गयी ॥
साक़ी[३४] ने भर के जाम[३५] दीया मार्फ़त[३६] का जब ।
दस्तार[३७] भूली होश गया यादे[३८] सर गयी ॥

२८ बंध, क़ैद कर देने वाला स्वप्ना २९ जाग्रत हुई ३० जब द्वैत दृष्टि दूर हो गयी तो अपना असली स्वरूप विना परदे के नज़र आ गया ३१ मेल मुलाकात अर्थात अनुभव ३२ प्राप्त ३३ दृष्टि ३४ (प्रेम रूपी) शराब पलाने वाला ३५ (प्रेम) पियाला ३६ आत्मक ज्ञान ३७ पगड़ी (दुन्या की इज्ज़त की) ३८ सिर की याददाश्त. अर्थात अपने शरीर की खबर भी गुम हो गयी.

२४ गज़ल भैरवी.

१ है लैहर एक .आलम[1] वैहरे[2] समन्द्र में।
है वृदो[3] बाश सारी उस के ज़हूर में ॥
२ मिटती है लैहर जिस दम वोही तो वैहर है।
हर चार सूं[4] है शोला मत देख .तूर[5] में॥

१ जहान २ आनन्द का समुद्र ३ रहायश ४ तर्फ ५ आग का पहाड़.

---

१ दुन्या आनन्द के समुद्र में एक लैहर है और उस आनन्दघन समुद्र के ज़हूर में इस जहान की रहायश है।

२ जिस समय यह लैहर मिट जाती है उसी समय वही लैहर समुद्र हो जाती है। चारो तर्फ लाट है पहाड़ में ही मत देख अर्थात चारों ओर प्रकाश है सिर्फ तूर के पहाड पर (जहां मूसा नें आग की लाट देखी थी) सिर्फ वहां पर ही मत देख.

---

२५ प्रश्न.

मेरा राम आराम है किस जां[1]? देख कर उस को जी[2] करूं ठंडा।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है? क्या वह महदूद[3] और यकं जा[4] है

१ जगह २ दिल. ३ परिछिन्न ४ एक जगह.

जुमला मोतर्ज़ा

चाह क्या चान्दनी में गंगा है दूध हीरों के रंग रंगा है ॥
साफ़ बातन से आबे सीमीं वर मीठी २ सुरों से गागा कर।
लुत्फ़ रावी का आज लाती है यूं पता राम का सुनाती है ॥

१ अन्दर २ चान्दी की शकलवाला जल ३ दरया का नाम है जो लाहौर में वेहता है.

---

२६ जवाब

देखो मौजूद सब जगह है राम मोह वादल हुवा है उस का धाम
चलकि है ठीक ठीक बात तो यह उस में है बूदो बाशे आलमे सेह
वह अमूरत है मूरती उस की किस तरह होसके ? कहां ? कैसी ?
कुल्ले शैऽनें मुहीत है आकाश मूर्ती में न आ सके परकाश
जो है उस एक ही की मूरत है जिस तरफ़ झांकें उस की सूरत है

१ चान्द २ तीनों लोको की उस में स्थिति औ रहायश है ३ कुल दुन्या को घेरे हुवे अर्थात सर्व व्यापक.

२७ राग कानड़ा ताल क़ुग़ले.

खिला समझ कर फूल बुलबुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी॥
जिसे फूल समझी थी साया ही था।
यह झपटी तो तड़ शीशा सिर पर लगा॥
जो दायें को झांका वुही गुल खिला।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था॥
मुक़ाबल[1] उड़ी मुंह की[2] खाई वहां।
जो नीचे गिरी चोट आयी वहां॥
क़फ़स[3] के था हर सिंमत[4] शीशा लगा।
खिला फूल मर्कज़[5] में था वाह वा॥
उठा सिर को जिस आन पीछे मुड़ी।
तो खंद:[6] था गुल आंख उस से लड़ी॥
चली, लैंक[7] दिल में कि धोखा न हो।

१ सामने २ मुंह को चोट आई ३ पिन्जरा ४ तर्फ ५ दरमियान ६ खिला हुवा ७ लेकिन, किन्तु.

थी पहिले जहां रुख कीया उधर को ॥
मिला गुल हूई मस्त-ओ-दिलशाद थी।
क़फ़स था न शीशे वह आज़ाद थी॥
यही हाल इनसान तेरा हुवा।
क़फ़स में है दुन्या के घेरा हुवा॥
भटकता है जिस के लीये दर वदर।
वह आराम है क़ल्वं में जेल्वः गर॥

८ खुश ९ पुरुष १० अन्दर दिल ११ स्थित॥ यह एक बुलबुल की हालत से पुरुष की हालत बताई है॥ यह पक्षी पिन्जरे में क़ैद था, उस के चारों तरफ शीशा लगा हुवा था और पिन्जरे के बीच में फूल लटका हूवा था जिस पर यह बुलबुल आप बैठी थी मगर उसको भूलकर चारों तरफ जो फूल का प्रतिबिम्ब पड़ता था उसको फूल समझ दौड़ी और चोट खाई.

---

२८ ग़ज़ल राग पील.

पड़ी जो रही एक मुद्दत ज़मीं में।

छुरी तेज़ आहन की मिट्टी ने खाई ॥
करे काटना फांसना किस तरह अब । ·
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई ॥
हुवा जब ज़मीं खुद यह लोहा तो बस फिर ।
न आतश सही सिर पै नै चोट आई ॥
छुरी है यह दिल, इस को रहने दो बेखुद ।
यहां तक कि मिट जाये नामे जुदाई ॥
पड़ा ही रहे ज़ाते मुतलक़ में बेखुद ।
खबर तक न लो, है इसी में भलाई ॥
"मेरा तेरा" का चीरना फाड़ना सब ।
उड़े। हो दूई की न मुतलक़ समाई ॥
न गुस्सा जलाये मुसीबत की नै चोट ।
मिटे सब तअल्लुक़ । खुदाई खुदाई ॥
जिसे मान बैठे थे घर यार भाई ।

१ लोहा २ स्वस्वरूप ३ नहीं ४ सम्बन्ध.

वह घर से भुलाने की थी एक फाँई[5] ॥
भुला घर को मंज़ल में घर कर लीया जब ।
तो निज बादशाही की करदी सफाई ॥
हवा के बगोलो से जब दिल को बांधा ।
छुटी ना उमेदी की मुंह पर हवाई ॥
कंवल मर्दुमे[6] चश्म । सूरज । बते[7] आब ।
तऽल्लुक़ की आलूदगी[8] थी न राई[9] ॥
जो सच पूछो सैरो तमाशा[10] भी कब था ।
न थी दूसरी शै[11] न देखी दिखाई ॥
थी दौलत की दुन्या में जिस की दुहाई[12] ।
जो खोला गृह[13] को तो पाँई[14] न पाई ॥
कीये हर सेह[15] हालत के गरचिः नज़ारे ।
वले राम तन्हा था मुतलक अकाई[16] ॥

५ क़ैद, फांसा ६ आंख की पुतली ७ पानी की बतख़ ८ लेप, लिबरना ९ ज़रा सी १० सैर अरु खेल ११ वस्तू १२ शोर १३ गांठ १४ एक पैसे का तीसरा भाग १५ तीनो दशा १६ एक अद्वतीय.

२९ शंकराभरण ताल कैरवा.

जां तूं दिल दीयां चशमां खोलें हू अल्लाह हू अल्लाह बोलें ।
मैं मौला कि मारें चीक्ष, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ १ टेक

जाम शराबे वहदत वाला पी पी हर दम रहो मतवाला ।
पी मैं वारी ला के डीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ २
गिरजा तसबीह जंजू तोड़ें, दीन दुनी वल्लों मुंह मोड़ें ।
ज़ात पाक नूं ला न लीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ३
जे तैनूं राम मिलन दा चा, ला लै छाती लग्गा दा ।
नाम लोहा दा घरग्गा पीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ४
सुन सुन सुन लै राम दुहाई, बे अन्तः क्यों अन्त है चाई ।
मालिके कुल, तूं मंग न भीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ५
न दुन्या दी खेः उडा हा हा कार न शोर मचा ।
छड रोना हस गाओ ते गीत, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ६
चुक सुट [illegible] [illegible] वाला, अख्यां विचों कड छड जाला ।
तूं ही तूं [illegible] [illegible], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ७

पंक्तिवार अर्थ.

१ जब तूं अपने दिल की आंख खोलने लगे तो मैं अल्लाह हूं मैं अल्लाह हुं बोलने लग पड़े ! और चीखें मारे कि मैं ब्रह्म हूं और तुमें यह स्पष्ट अनुभव होने लगपड़े कि ब्रह्म गले की नाड़ी से भी अधिक नज़दीक है। अर्थात् घट के अन्दर है या तूं खुद है ॥ १

२ ऐ प्यारे ! एकता की खुशी रूपी शराब का प्याला हर दम भी पी कर मतवाला हो, और डीक लगा कर (एक घूंट से) पी क्योंकि अल्लाह (अपना स्वरूप) गले कीरग से भी अधिक नज़दीक है अर्थात ईश्वर तेरे घट अन्दर है २

३ मन्दर, माला और जंजू तो तूं तोड़ रहा है और धर्म अर्थ इत्यादि से तूं मुंह मोड़ रहा है, ऐ प्यारे ! अपने शुद्ध स्वरूप को इसतरह धब्बा मत लगा क्योंकि वह (स्वरूप) तेरे समीप है ॥

४ अगर तुम को ईश्वर के पाने (मिलने) की इच्छा है (तो जितना ज़ोर लगता है लगाले, वह बाहर नहीं मिलेगा क्योंकि जैसे लोहा लोहे के बर्तन (पीक) से कुछ अलग नहीं है बलकि लोहे का ही नाम पीक धरा हुवा है (एसे ईश्वर ही तू है) वह तेरे से भिन्न नहीं है) बलकि तेरी शांह रग सेभी अधिक समीप है ॥

५ खूब राम की दुहाई सुन ले, ऐ प्यारे ! अनन्त हो कर तू

अन्त में (परिच्छिन्न) क्यों होता है? और कुलका मालक हो कर तू भिक्षारी क्यों बनता है, ईश्वर तो तेरे अधिक समीप है

६ न तो दुन्या की तूं धूल उड़ा और ना ही तूं हा हा करके शोर मचा, रोना छोड़ बलकि हस और गा क्योंकि ईश्वर तो तेरे गले की नाड़ी से भी अधिक समीप है ॥

५ द्वैत का पर्दा तूं दूर करदे और आंखों से अज्ञानरूपी जाला (पर्दा) बाहर फैंक क्योंकि तूं ही तूं (एक)? सिर्फ सिर्फ है और तेर कोइ भी तेरे बराबर नहीं (बलकि ईश्वर भी तू ही है) तेरे गले की नाड़ी सेभी अधिक समीप है ॥ ७

---

३० राग शंकराभरण ताल दादरा.

की करदा नी की करदा तुसी पुछोसां दिलबर की करदा। (टेक)

इकसे घर विच वसदयां रसदयां नहीं हुंदा विच परदा की करदा० १.

विच मसीत नमाज़ गुज़ारे बुतखाने जा वरदा की करदा० २

आप इको कोइ लाख घर अन्दर मालक हर घर घर दा की करदा० ३

मैं जितवल देखां उतवल ओही हर इक दी संगतकरदा
की करदा० ४

मूसा ते फरऔन वना के दो होके क्यो लड़दा ॥
की करदा० ५

---

१ मतलव एक ही घर में रहते हुये पर्दा नहीं हुवा करता (मगर मेरा स्वरूप मेरे दिल रूपी घर में रहते हुवे पर्दे में छुपा हुवा है) इसलीये ए लोगो! तुम इस दिल्वर (प्यारे आत्मा) को पुछो कि यह क्या (लुकन छिपन, खेल) कर रहा है

२ कहीं तो मसजद में छुप कर वैठा रहता है और उस के आगे नमाज़ होती है और कहीं मंदरों में दाखल हुवा है जहां उस की पूजा हो रही है इस लीयें ऐ लोगो! दिल्वर को पूछो कि क्या कर रहा है ॥

३ आप खुद तो ऐक (अद्वतीय) है मगर लाखों घरों (दिलो) के अन्दर दाखल हुवा २ हर एक घर का मालक हुवा २ है, इस लीयें ऐ लोगो तुम दरयाफत करो कि यह दिल्वर (प्यारा) क्या कर रहा है

४ जिधर मैं देखता हूं उधर दिल्बर ही नज़र आता है और हर एक के साथ हुवा २ वुही (मिला बैठा) नज़र आता है। इस लीये ऐ लोगो! आप दर्याफत करो दिल्बर (ईश्वर) यह क्या कर रहा है

५ मुसलमानों में हज़रत मुसा और हज़रत फरौन (जिन में खूब झगड़ा इत्यादि हुवा था) इन दोनों को बनाकर और इसतरह से आप दो होकर यह (दिल्बर) क्यों लड़ता है और लड़ाता है इस लीये ऐ लोगो! आप दरयाफत करो कि यह दिल्बर क्या करता है

३१

विना ज्ञान जीव कोइ मुक्त नहीं पावे ॥ (टेक)
चाहे धार माला चाहे बान्ध मृग छाला।
चाहे तिलक छाप चाहे भसम तूं रमावे ॥ १ ॥ विना०
चाहे रचके मन्दर मठ पत्थरों के लावे ठठ।
चाहे जड पदारथों को सीस नित निवावे ॥ २ ॥ विना०
चाहे वजा गाल चाहे शंख और वजा घड़्याल।
चाहे ढप चाहे डौरू झांझ तूं वजावे ॥ ३ ॥ विना ज्ञान०

चाहे फिर तू गया प्रयाग काशी में जा प्राणा त्याग।
चाहे गंगा यमुना चाहे सागर में नहावे ॥ ४ ॥ विना ज्ञान०
द्वारका अरु रामेश्वर बद्रीनाथ परवत पर।
चाहे जगन नाथ में तूं झूठो भात खावे ॥ ५ ॥ विना ज्ञान०
चाहे जटा सीस वढा जोगी हो चाहे कान फड़ा।
चाहे यह पाखंड रूप लाख तूं बना वे ॥ ६ ॥ विना ज्ञान०
ज्ञानियों का कर ले संग मूर्खों की तज दे भंग।
फिर तुझे मुक्ति का साधन ठीक आवे ॥ विना ज्ञान०

१ तीर्थों के नाम हैं २ गंगा सागर से मुराद है

३२

मक्के गया गल्ल मुकदी नाहीं जे न मनो मुकाईये।
गंगा गयां कुच्छ ज्ञान न आवे भावें सौ सौ डुब्बे लाईये।
गैया गयां कुच्छ गति न होवे भावें लख लख पिंड वट पाईये

१ बात, धंधा २ अगर ३ खतम करें ४ तीर्थ का नाम है

प्रयाग गयां शान्ति न आवे भावें वेह वेह मूंड मुंडाईये।
दयाल दास जैड़ी वस्त अन्दर होवे ओहनूं वाहर क्यों-
कर पाईये ॥ १ ॥

५ दस को.

ज्ञानी की अवस्था.

राग भैरवी ताल रूपक

नसीमे[1] बहारी[2] चमन सब खिला, अभी छींटे दे दे के
बादल चला

गुलो[3]! बोसा लो! चान्दनी का मिला, जवां[4] नाज़नी इक
सरापा[5] बला

हूई खुश। मिला तख़लिया[6] क्या भला, क़ीब आई घूरी
हंसी खिलखिला

न जादू से लेकिन ज़रा वह हिला, निगह से दीया
काम[7] को झट जला

१ बसन्त ऋतु की ठण्डी वायू २ बाग़. ३ पुष्प ४ जवान
नाज़ुक स्त्री ५ अति सुन्दर ६ एकान्त ७ काम देव, वीर्य

सकी जब न सूरज में दीवा जला, परी बन गयी खुद मुजस्सम हिया

कि सब हुस्न की जान में ही तो हूं।
मेहरो मांह के प्राण में ही तो हूं॥ १॥

हज़ारों जमा पूजा सेवा को थे, थे राजे चवर मोर छल कर रहे

थे दीवान धोते क़दम शौक़ से, थे खिदमत में हाज़र मेंदेह खां खडे

ऋषि तुम हो अवतार सब से बड़े, यह सब देख बोला लगा केहंकहे

८ हया सेमर गयी (अर्थात जब ज्ञान वान रूपी सूरज में अपनी कामना, बदमाशी का दीपक न जला सकी अथवा ज्ञान वान उसके सौन्दर्य पेन से फंदे में न आसका तो खुद शरमिंदा होगयी) ९ सुंदरता १० सूरज और चांद ११ तारीफ करने वाले १२ हंस कर बोला.

बड़ा ही नहीं बलकि छोटा भी हूं।
न महदूद[13] कीजीयेगा सब मैं ही हूं ॥ २ ॥

बुरे तौर थे लोग सब छेड़ते, ठठोली से थे फबतीयां घड़ रहे
तड़ा तड़ तड़ा तड़ वह पत्थर जड़े, लहू के नशां सिर पै रुखैं[14] पै पड़े
प्यैापे[15] थे ज़खम और सदमें कड़े, थे [16]दीदे अजब मुसकाहट[17] भरे
कि इस खेल की जान मैं ही तो हूं।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥ ३ ॥

समा नीम[18] शब माह था जनवरी, हिमालय की बर्फ़ें स्याह रात थी

१३ क़ैद (परिछिन्न) न कीजीयेगा १४ चेहरे पर १५ लगातार १६ आंखें १७ हंसी से भरे हुवे १८ आधी रात का समय.

बरफ की लगी उस घड़ी इक झड़ी, थमी [19]बर्फ़ बारी तो आन्धी चली
बदन की तो [20]गत [21]बेद्मजनूं सी थी, पै दिल में थी ताकत लबों पर हंसी

कि सर्दी की भी जान मैं ही तो हूं।
[22]अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥ ४ ॥

[23]समां दोपैहर [24]माहे था जून का, जगह की जो पूछो। [25]ख़ते उस्तवा
तमाज़त ने लू की दीया सब जला, हरारत से था रेग भी भूनता

१९ बरफ का बरसना बन्द हुवा. २० हालत २१ सूखे हुवे पतल बैंत के दरख़्त का नाम है २२ हॅट-बुल २३ चारों तत्व (पृथ्वि जल वायू आकाश) २४ समय, काल २५ मास, महीना २६ दुन्या के दरमियान (बराबरी हम्वारी) लकीर अर्थात पृथ्वि का मध्य हिस्सा जहां बड़ी गर्मी होती है

बदन मोम सां था पिघलता पड़ा, पै लब से था खन्दां[27] परोया हुवा

कि गर्मी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥५॥

बीयाबां[28] तनहा लैंको[29] दक़ गज़ब, इधर मेदा[30] खाली उधर खुश्क लब

उठाई नगह साह्मने। ऐ अ.जब! लड़ी आंख इक शेरे[31] गुर्रा से तब

यह तेज़ी से घूरा! गया शेर दब, जलाले जुमाली[32] था चितवन[33] में अब

कि शेरों की भी जान मैं ही तो हूं।
सभी खल्क़[34] के प्राण मैं ही तो हूं ॥६॥

२७ हंसी मुसकुहट वाला. २८ जंगल. २९ बड़ा भारी गुंजान. ३० पेट ३१ तुंद भ्यानक शेर ३२ निज मस्ती का जलाल (तेज़) ३३ निगाह, दृष्टि ३४ खलकृत, लोग

चला मंझधारा में किश्ती घिरी, यह कहता था तूफ़ां
कि हूं आखरी
थपेड़ों से झट पट चटां वह चिरी, उधर बिजली भी वह
गिरी वह गिरी
था थाये हूये वांसे[35] ज्यूं वांसरी, तवस्सम[36] में जुरअत[37] भरी
थी निरी
कि तूफ़ां की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥७॥
बदन दर्दों पेचश से सीमाब[38] था, तपे सख़्तो रेज़श से बेताब था
नशा ज्ञान का [39]ज्यूं मैये नाब था, वह गाता था। गोया
मर्ज़ ख़्वाब[40] था
मिटा जिस्म जो नक़्श बर आब[41] था, न बिगड़ा मेरा
कुच्छ कि खुद आब था

३५ चप्पा बेड़ी के चलाने वाला ३६ मुसक्राहट-हंसी ३७ दलेरी ३८ पारा हूवा २ था ३९. अंगूर की शराब की तरह ४० बीमारी स्वप्नमात्र थी. ४१ पानी के ऊपर नक़श की तरह

जहां भर के अंदाने[४२] खूबां मैं हूं।
मैं हूं राम हर एक की जां में हूं ॥८॥

४२ सुंदर पुरुषों के शरीर.

ज्ञानी की दृष्टि

२ राग कालिंगडा ताल केरवा.

जो खुदा को देखना हो, तो मैं देखता हूं तुम को
मैं तो देखता हूं तुम को, जो खुदा को देखना हो } टेक

यह हिजाबे[१] साज़ो सामां, यह नकाबे[२] यासो[३] हिरमां[४]
यह गलाफे[५] नंगो नामूस, वह दमागो दिल का फानूस
वह मनो शुमा का पर्दा, वह लिबासे चुस्त कर्दा
वह हया की सब्ज़ काई, वह फना स्याह रजाई
यह लफाफा जामा: बुर्का[६], यह उतार सितर[७] तुम को
जो बरहना: कर के झांका, तो तुम ही सफा खुदा हो
॥ जो खुदा को० १

१ शर्म, आड़ २ पर्दा ३ मायूसी, ४ ना उमेदी ५ पर्दा, चादर ६ पर्दा ७ नंगा

ऐ नसीमे शौक़! जा के, वह उड़ा दे ज़ुल्फ रुख से
ऐ सबाये इल्म! जा कर, दे हटा वह ख्वाब चादर
अरे बादे तुन्द मस्ती! दे मटा अंबर की हस्ती
ऐ नज़रके ज्ञान गोले! यह फसील झट गिरा दे
कि हो जैहल भसम इक़ दम, जले वैहम हो यह आलम
जो हो चार सू तरन्नम, कि हैं हम खुदा, खुदा हम
॥ जो खुदा को० २

न यह तेग़ में है ताक़त, न यह तोप में लियाक़त
न है बर्क़ में यह याँरा, न है ज़ैहर ही का चारा
न यह कारे तुन्द तूफां, न है ज़ोर शेरे ग़ुर्रान
कोई जज़्बाः है न शहवत, कोई ताना[१५] नै शरारत
जो तुझे हलाने आयें

८ शौक (जिज्ञासा) की पवन ९ ज्ञान की जिज्ञासा रूपी वायू
१० बादल ११ धीमी धीमी वर्षा, मंध मंध स्वर से राग गाना
१२ बिजली १३ ताकत बहादरी १४ तुंद शेर १५ नहीं

जो तुझे हलाने आयें तो हों राख भसम हो जायें
वह खुदाई [16]दीदे खोलो कि हों दूर सब बलायें
॥ जो खुदा को० ३

वह पहाड़ी नाले चम चम, वह बहारी अब्र छम छम
वह चमकते चान्द तारे, हैं तेरे ही रूप प्यारे!
दिले [17]अन्दलीब में खूनू, रुखे गुल का रंगे [18]गुलगूं
वह शफ़क़ के सुर्ख [20]इशवे, हैं तेरे ही लाल पट्ठे
है तुम्हारा धाम तो राम, ज़रा घर को मुंह तो मोड़ो
कि रहीम राम हो तुम, तुम ही तो खुद खुदा हो
॥ जो खुदा को० ४

१६ ब्रह्म दृष्टि १७ बुलबुल का दिल १८ सुरख रंग १९ बादल में गुलाली उदय अस्त के समय जो होती है २० नखरे, इशारे

मतलब:—

यह साज़ और सामान का पर्दा. (यह सर्व असबाब जिस में कि तुम छुपे हुवे हो), और यह ना उमेदी और मायूसी की चादर (जो न मिलने सबब जिस में तुम ढके हुवे हो), और यह इज़्ज़त अरु बेशरमी का पोश, और दिल व दमाग रूपी फानूस (जिस के अन्दर आप कैद हुवे छुपे हो) और 'मैं' अरु(और) 'तुम' की भेद दृष्टि (जिससे असली अपना आप गुम हुवा है) और जो परिछिन्न करने वाली पोशाक है, और वह हया या शर्मीलेपनकी चादर (जो घासकी तरह अपने ऊपर छाई हुई है), और वह शुन्य अन्धकार (अज्ञान जिस से स्वस्वरूप ढ़का हुवा है), (इन तमाम पर्दों का बना हुवा) जो लफाफा, उसको अरु सर्व लिबास (तमाम पर्दे) उतार कर मैं ने जब तुमको नंगा (नगन) कर के देखा तो मालूम हुवा कि तुम ही साफ ईश्वर हो (पस इसी लीये मैं कहता हूं किः—अगर खुदा को देखना हो तो मैं देखता हूं तुम को)

२ ऐ अपने स्वरूप (प्यारे) को मिलने की .शौक (जिज्ञासा) रूपी वायू! उन पर्दों को (कि जिन में मेरा स्वरूप ढ़का हुवा है) जा कर उड़ा दे॥ ऐ ज्ञानसे सुगन्धित पवन! वह चादर

रूपी स्वप्न (कि जिस में लेटे हुवे मैं अपने स्वरूपको भूले हुवे हूं) जा कर हटा दे ॥ ऐ आनन्द से भरी हुई (निजानन्द रूपी) तेज़ वायु ! उस बादल की मौजूदगी को (कि जिसके होने से मेरा प्रकाश स्वरूप आत्मा ढका रहता है) दूर या नाश कर दे ॥ ऐ (आत्म) दृष्टिके ज्ञान गोले (उस अज्ञानकी) फसील (चार दीवारी) को (कि जिसने मेरे निज स्वरूप को छुपा रखा है) जा कर झट गिरा दे । ताकि अज्ञान झट भस्म (राख) हो जाये और संसार रूपी वैहम अर्थात भेद दृष्टि झट जल जावे और चारों तरफ आनन्दकी वर्षा हो, या यह कि आनन्द ध्वनी का आलाप होता रहे कि "खुदा हम हैं", 'हम खुदा हैं' (इस लीये मैं कहता हूं कि अगर खुदा को देखना हो तो मैं तुम को देखता हूं)

३ तल्वार में भी यह ताक़त नहीं (कि तुझ को अपने स्थान से हला सके) और न ही तोप में ऐसी ल्याक़त (क़ाबलीयत) है ॥ और न बिजली में यह शक्ती है (कि तुझको अपनी जगहसे हटा सके) और न जैहर ही इस का इलाज है ॥ और न ही यह तेज़ सखत तूफान का काम है (कि तुझे परे कर सके) और न बड़े तुन्द मज़ाज वाले शेर का बल यह काम कर सकता है ॥ और न

कोई ऐसा विषयानन्द या विषय व्यसन ऐसा है (कि तुझको अपने मुकाम से हला सके) और न कोई बोली टटोली या चा- लाकी यह काम कर सकती है ॥ क्योंकि अगर वह तुझ को कदापि हलाने के लिये आयें, तो वह खुद भस्म हो जायेंगे ॥ इस लीये ऐ प्यारे! वह ईश्वर चक्षू खोलो कि सब तरहकी बलायें दूर हो जायें (इस लीये मैं कहता हूं कि अगर खुदाको देखना हो तो मैं तुम को (वही) देखता हूं)

४ वह चम चम करते बैहने वाले पर्वत के नदी नाले, और छम छम बरसने वाली श्रावणकी वर्षा, वह चमकते हुवे चांद और तारे, ऐ प्यारे! यह सब तेरे ही प्रेय रूप हैं ॥ बुलबुल के दिल के अन्दर (प्रेम भरा) खून (इशक़) और पुष्पके मुखका उत्तम रंग (जिस के वास्ते बुलबुल तरसती है) ॥ और वह सा- यं प्रातः काल (समय) की लाली (Twilight) के इशारे (नखरे) ऐ प्यारे (लाल पट्ठे)! यह सब तेरे ही क़शमे (खेल) हैं ॥ तुम्हारा असली घर तो राम है, ज़रा कृपा करके अपने असली घर की तरफ मुंह तो मोड़ो ॥ क्योंकि रहीम (कृपालू) राम तुम ही तो खुद हो और तुम ही स्वयं ईश्वर हो (इस लीये मैं कहता हूं कि अगर मैं ने ईश्वर को देखना हो तो मैं तुमको (वही) देखता हूं)

रौशनी की घातें.

३ राग देश ताल धमार

(जनूने नूर)

मैं पड़ा था पैहलू[1] में राम के। दोनों एक नींद में लेटे थे
मेरा सीना[2] सीने पै उस के था। मेरा सांस उस का
तो सांस था
आये चुपके चुपके से रौशनी। दीये बोसे[3] दीदों[4] पै
नाज़ से
लम्बी पतली लाल सी उंगलीयों से। खुशी से गुद-
गुदा दीया
कुच्छ तुम को आज दखाऊंगी, मैं दखाऊंगी। ऐसा
कह के हाथ झुला दीया!

१. तरफ. २ छाती. ३ चुम्मी (यहां छूने से मुराद है).
४ आंखे.

यह जगा दीया कि सुला दीया। जाने किस बला में
फंसा दीया
ऐलो! क्या ही नक़्शा जमा दीया। कैसा रंग जादू
रचा दीया।
चली निखर कर हमें साथ ले। करी सैर हाथों में हाथ ले
मची खेल आंखों में आंख दे। गुल वलवेला सा
बपा दीया
इक शोर गौग़ा उठा दीया। निज धाम को तो भुला दीया!
मुंह राम से तो मुड़ा दीया। आरामे जान को मिटा दीया
थक हार कर झख मार कर। हर मूँ से बोला पुकार कर
अरी नाबकारह रौशनी। अरी चकमा तू ने भुला दीया।
खंदी किरणें (बाल) तेरी सफेद हैं। बालो में रंग
भरे है तू

५ शोर. ६ जान के आराम. ७ बाल. ८ बेहुदाः ९ ताने से
पुकारना.

गुलगूंगा मुंह पै मले है तू । नटनी ने रूप बना दीया ।
रूख देखीये तो है फ़ूक तेरा । दिल गर्दिशों से है शॅक़ तेरा

तू उड़ती पयैया से धूल है । रथ रॉम ने जो चला दीया
कहो ! किस जवानी के ज़ोर हर । तू ने हम को आके उठा दीया

यूं कह के क़िस्सा समेट कर । दिल जानू में यार लपेट कर
फिर लम्बी ताने में पढ़ गया । गोया गैर राम जला दीया

अभी रात भर भी न बीती थी । कि लौ रोशनी को हवा लगी

१० उबटना, अर्थात सुर्खी इत्यादि जो औरतें अपने मुंह पर मला करती हैं ११ चेहरा, मुंह. १२ पीला, मुरझाया हुवा. १३ ज़माने के चक्कर. १४ टूटा हुवा, फटा हुवा. १५ कवि का नाम है. १६ कथा कहानी. १७ राम से भिन्न या अन्य.

नये नखरे टखरे से प्यार से । मेरे चशमखाना[18] को वो[19] कीया
कुछ आज तुम को दखाऊंगी । मैं दखाऊंगी, ऐसा कह के हाथ नचा दीया
कहूं क्या? जी ! भंरे[20] में आ गये । कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दीया
लड़ भिड़ के आखर शाम को । कैह अलवदाः सब काम को
आगोश[21] में ले राम को । तैंने[22] उस के मन में छुपा दीया
लेकिन फिर आई रौशनी । लो! दम दलासा चल गया
और फिर वोही शैतानीयां । वैसी ही कारस्तानीया[23]
हंसने में और खंसने में फिर । दिन भर को यूंही बता दीया
वेहूदाः टाल मटोलों, जी । यारों[24] का फिर उकता[25] गया

१८ चक्षु के खाने को. १९ खोला. २० पेच, दाओ. २१ बगल. २२ शरीर. २३ चालाकिया. २४ दिल. २५ तंग आगया.

हम सो गये जाग उठे फिर। यूं ही अलॅहाज़ल क्यास
वाँदा: न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ा कीया
थकने न पाई रौशनी। मामूल पर हाज़र थी यह
उमरों पें उमरें होगयीं। इस का त्वातॅर दौर था
किस धुन में सब इक़रार थे। क्यों दिन बदिन यह
मदॉर थे?

किस बात के दरपै[31] थी यह?। मस्तो खरावे मै[32] थी यह
यह तो मुइम्मा[33] न खुला। सदीयों का अर्सा[34] हो गया
हर बात जो समझी अजब। पास जा देखा तो तब
खाली सुहाना ढोल था। धोका था फितना[35] गौल[36] था
सब गुंगो[37] कॅर[38] अश्जार[39] थे। चॅप[40] रास्त सब अग्यार[41] थे

२६ इत्यादि. २७ इक़रार. २८ पूरा कीया. २९ लगातार (नित्य), ३० सुलाह और दोस्ती करना या खातर त्वाज़ो: करना. ३१ किस बात की ढूंड में थी? ३२ शराब. ३३ भेद, मुशकल. ३४ काल, समय. ३५ फसाद, शोर, दगा. ३६ भूत, जिन्न. ३७ गूंगे. ३८ बोले, बैहरे. ३९ दरखत. ४० बायां, दायां. ४१ अन्य लोग, दुशमन (ना वाकफ)

सब यार दिल पर बार[42] थे । और बेठकाना कार था
अपना तो हर शब[43] रूठ जाना । रौशनी का फिर मनाना
आज और कल और रोज़ो शब की । क़ैद ही में तलमलाना

सब मेहनतें तो थीं फ़ज़ूल । और कार नाहमवार था
वह रौशनी का साथ चलना । अपना न हरगज़ उस को तकना
वह रौशनी के जी[44] की हसरत[45] । हम को न परवाह बलकि नफरत

सूदो[46] ज़ियां, बीमो रजा[47] । की रगड़ कारेज़ार[48] था
यूंही रफता रफता पड़े कभी । कभी उठ खड़े थे मरे कभी

४२ बोझ. ४३ रात. ४४ दिल. ४५ अफसोस. ४६ नफा, नुकसान. ४७ डर अरु उमेद, या उर, भय. ४८ लड़ाइ.

कभी शिकमे मादॅर घर हुवा । कभी जॅन से बोसो[51]
किनार था

बढ़ना कभी घटना कभी । मद्दो जज़ॅर दुशावर था
गर्ज़ इन्तज़ारो कशॉकशी । दिन रात सीना फगॅार था
क्या ज़िन्दगी यह है । वॅगोले की तरह पेचां[55] रहें ?
और कोरॅ[56] सग बन कर । शिकॅारे बाद में हैरां रहें ?
लो आखरश आया वह दिन । इक़रार पूरा होगया
सदियों की मंज़ल कट गयी । सब कार पूरा होगया
हां । रौशनी है सुरखरू । तेरा वादः आज वॅफा हुवा
तेरे सदके सदके मैं नाज़ॅनीं । कुल भेद आज फॅदा हुवा

४९ मां का पेट (गर्भ). ५० बीबी, स्त्री. ५१ चूमना इत्यादि.
५१ बढना घटना, या ऊंचे नीचे, तरक्की तनज्ज़ल. ५२ खेंचा तानी.
५३ दिल का (छाती) फाड़ना. ५४ हवा का गोला. ५५ पेच खाते हुवे. ५६ अन्धा कुत्ता. ५७ हवा के शिकारमें. ५८ पूरा.
५९ ऐ प्यारी. ६० कुर्बान.

उमरों का उक़्दा[६१] हल हूवा । कुफ़्लो गिरह[६२] सब खुल गये

सब क़बज़ो तंगी उड़ गयी । पाप और शुभे सब ढुल गये

सब ख़्वाबे[६३] दूई मिट गया । दीदे[६४] अजब यह खुल गये !

ऐ रौशनी ! ऐ रोशनी ! खुश हो । मैं तेरा यार हूं

खावन्द घर वाला हूं मैं । पुश्तो[६५] पनाह सर्कार हूं

वह राम जो मा'बूद[६६] था । साया था मेरे नूर[६७] का

क्या रौशनी क्या राम इक । शो'ला[६८] है मेरे तूर[६९] का

इन आंसूवों के तार के । सिहरे से चिहरा खिल गया

क्या लुत़्फ शादी मर्ग है । हर शै[७०] से शादी वाह ! वाह !

६१ भेद, मसला, मुशकल. ६२ ताला और कुञ्जी (या गांठ). ६३ द्वैत रूप स्वप्ना. ६४ चक्षु. ६५ पीठ, आधार. ६६ पूजा कीया गया, पूजनीय. ६७ प्रकाश. ६८ लाट अग्नीकी ६९ अग्नी का पहाड़. ७० वस्तू.

हां ! मुजँदः[71] वाद ऐ सांप सँग[72] ! ऐ ज़ाँग[73] मौंही[74] चील गिद !
इस जिस्म से करलो ज़ियाफ़त, पेट भर भर वाह वाह !
आनन्द के चशमे के नौंके[75] पर, यह जिस्म इक वंद था
वह वैह गया वंदेख़ुदी[76], दरया वहा है वाह वाह !
सव फ़र्ज़ कर्ज़ और गर्ज़ के, इमराँज़[77] यक दम उड़ गये
हल फिर गया ज़ेरो ज़बर[78] पर, और सुहागा वाह वाह !
दुन्या के दल वादल उठे थे, नज़र ग़लत अन्दाज़[79] से
लो इक नगाह से चुक गया, सारा सियापा वाह वाह !
तन नूर से भरपूर हो, मामूर[80] हो मसरूर[81] हो
वह उड़ गया जाता रहा, पुर नूर[82] हो काफ़ूर[83] हो
अब शव कहां ? और दिन कहां ?, फ़र्दा[84] है नै इमरोज़[85] है

७१ खुशखवरी. ७२ कुत्ता. ७३ कौवा, काग. ७४ मच्छी. ७५ मूंह.. ७६ अहंकार का वन्द. ७७ मर्ज़ बीमारीयें. ७८ नीचे ऊंचे. ७९ गलत ढंग से. ८० भरा हुवा. ८१ खुश. ८२ प्रकाश से भरपूर. ८३ उड़ जाये. ८४ कल. ८५ आज.

है इक सरूरे लाँतग़य्यर, ऐशँ है ने सोज़ँ है
उठना कहां? सोना कहां?, आना कहां? जाना कहां?
मुझ वैहरे नूँरो सरूर में, खोना कहां? पाना कहां?
मैं नूर हूं मैं नूर हूं, मैं नूर का भी नूर हूं
तारों में हूं सूरज में हूं, नज़दिक से नज़दिक हूं और
दूर से भी दूर हूं
मैं मांदनो मखज़न हूं मैं, मंवों हूं चेंशमा-ए नूर का
आराम गाँह आरॉम देह हूं, रौशनी का नूर का
मेरी तंजल्ली है यह नूरे, अ़क़लो नूरे अंनसरी

८६ न बदलने वाला आनन्द, विकार रहित आनन्द. ८७ विषय आराम, आराम विषय से. ८८ जलन दुःख. ८९ आनन्द और प्रकाश का समुद्र. ९० कान और खज़ोनकी जगह. ९१ चशमा, सूत, आगाज़, निकास, जहां से कुच्छ वस्तू निकले. ९२ प्रकाश का चशमा (निकास). ९३ आराम की जगह. ९४ आराम देनेवाला. ९५ तेज. ९६ पंच भौतक प्रकाश अर्थात सूरज अरु चांद अरु अग्नि का तेज

मुझ से दरख़्शां हैं यह कुल, अर्जरामे चर्खे चम्बरी
हां ? ए मुबारक रौशनी ! ऐ नूरे जां ! ऐ प्यारी "मैं"
तू, राम और मैं एक हैं, हां एक हैं। हां एक हैं !
हर चश्म हर शै हर बशर, हर फ़हम हर मफ़हूम मैं
नाज़िरे नज़र मंज़ूर मैं, आलिम हूं मैं मालूम मैं
हर आंख मेरी आंख है, हर एक दिल है दिल मेरा
हां ! बुलबुलो गुल मिहरो माह, की आंख में है तिल मेरा
वहशत भरे आहू का दिल, शेरे बबर का कहर का
दिल आशके बेदिलका प्यारे, यार का और दहर का

९७ चमकते है. ९८ आकाश के तारे सूरज इत्यादि, वृत वाले आशमें सूरज चान्द इत्यादि. ९९ प्राण के प्रकाशक. १०० चक्षु १०१ जीवजन्तु १०२ बुद्धि समझ. १०३ समझाई गयी वस्तु. १०४ देखने वाला. १०५ दृश्य. १०६ बुलबुल पक्षी और फूल. १०७ सूरज और चान्द. १०८ भैय (नफरत, डर). १०९ मृग ११० बड़ा ज़बरदस्त, ताकतवाला. १११ ज़माना

अमृत भरे स्वामी का दिल, और मारे पुर[112] अज़
जैहर का

यह सब तजल्ली[113] है मेरी, या लैहर मेरे बैहर[114] का
इक बुलबुला है मुझ में सब, ईजादे[115] नौ, ईजादे[116] नौ
है इक भंवर मुझ में यह मर्गे[117] नागहां और ज़ादे[118] नौ
सोये पड़े बच्चे को वह, जाली उठा कर घूरना
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[119] का वह वसूरना
वह दो बजे शब[120] को शफाखाना में तिशना[121] मरीज़ को
उठ कर पलाना सोडावाटर, काट अपनी नींद को
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गंग में
छींटे उड़ाना, गुल मचाना, गोते खाना रंग में

अर्थात ज़माना साज़ का. ११२ जैहर से मरे हुवे सांप का. ११३ तेज. ११४ समुद्र. ११५ नयी बनाई हुई. ११६ नयी तरक्की. ११७ इतफाकिया मौत. ११८ नयी पैदायश. ११९ लड़का. १२० रात. १२१ पियासा बीमार.

वह मां से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना

वालिद[122] से पिटना और चलाते हुए आंखों को मलना

कालज के साइंस[123] रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना

बारूद और गोलों से सफ़ दर[124] सफ़ सपाहें तोड़ना

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं ॥ टेक

गर्मी का मौसम, सुबह दम बदम, साअत[125] है दो या तीन का

खिड़की में दीवा देखते हो, टमटमाता टीन का

दीवे पे परवाने गिरते हैं, बेखुदी में बार बार

बेचाराह लड़का कर रहा है, .इल्म पर जां को निसार[126]

बेचारे तालब .इल्म के, चेहरे की ज़र्दी है मेरी

१२२ पिता १२३ सायिंस विद्याका कमरा १२४ क़तार पीछे क़तार १२५ घड़ी १२६ कुर्बान

बे नींद लम्बे सांस और आहों की सरदी है मेरी
इन सब चालौं में हम ही हैं, यह मैं ही हूं। यह हम ही हैं
है लैहलहाता खेत, पुर्वा[127] चलरही है ठुम ठुमक
गाढ़े की धोती लाल चीरा, चौधरी की लट लटक!
जोशे जवानी! मस्त अलगोजा[128] बजाना उछलना!
मुगदर घुमाना, कुशती लड़ना, बिछड़ना और कुचलना!
छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार
वह टांग पर धर टांग पड़ना, बोझ ऊपर हो सवार
शिद्दत[129] की गर्मी, चील[130] अंडे को समय, सिर दुपैहर
जा खेत में हल का चलाना, [illegible] पड़ना [illegible] तर बतर
और सिर पै लोटा छाछ का, कुछ [illegible]टियां कुछ साग धर
भत्ता उठा कुत्ते को ले, औरत का आ[illegible] पेंठ कर

१२७ पूरब दिशा से चलती हुई वायू १२८ बांसरी की एक किस्म है १२९ अत्यन्त १३० बड़ी तेज़ धूप जिस समय चील अंडे दीया करती है १३१ पसीना से मुराद है

इन सब चालों में हम हीं हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं
दुलहन का दिल से पास आना, ऊपर से रुकना
झिजक जाना
शर्मो हया का .इश्क़ के, चंगाल[132] में रह रह के जाना
वह माहे गुलरू[133] के गले में, डाल बाँह प्यार से
ठण्डे चशमों के किनारे, बोसाँ[134] बाज़ी यार से
हां! और वह चुपके से छिप कर, आड़ में अश्जार[135] में
बेदाम खुफिया पुलिस बनना, राम की सर्कार के
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ॥
वह इस तरफ खा खा के मरना, उस तरफ फाकों से गुम!
वह बिलबलाना जेल में, जंगल में फिरना सुम बुक्कुम[136]

१३२ पंजा १३३ पुष्प जैसा सुंदर माशूक़ (दोस्त) १३४ चुमा लेना (चूमना) १३५ दरखत १३६ बौला गूंगा

और वह गद्देले कुर्सियां, तकिये बिछौने, बग्गीयां
सब मादरे सुस्ती[137] बवासीर, अरु ज़ुकाम और हिचकियां
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ॥
वह रेल में या तार घर में, महल कुवारिन टीन में
रूम अम्रीका ईरान् में, जापान में या चीन में
सिसकना दुःखड़े सुनाना, खून बहाना ज़ार ज़ार
वह खिलखिलाना केहकहों, और चेहचहों में बार बार
वह वक़त पर बारश न लाना, हिंद में या सिंध में
फिर राम को गाली सुनाना, तंग हो कर हिंद में
वह धूप से सबको मसाले [138] मुर्ग बिरयां भूनना
बादल की [139] सौंदी को किनारी[140] चांदनी से गूंदना
(चुप हो के खानी गालियां सालेसे इस शशुपाल से)[141]
खुश हो सलीबो [142] दौरे पर, चढ़ना मुबारक हाल से

१३७ सुस्ती की माता १३८ भुने हुवे पक्षी की तरह १३९ चादर १४० झालर १४१ इस फ़िक़रे से मतलब कृष्ण का है १४२ सूळी और फांसी (इस में मंसूर से मुराद है जो सूली.

यह कुल तमाशे हैं मेरे यह सब मेरी करतूत है
*इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं॥

दीया गया था)

*इस से आगे अलैहदा हिस्सा कर के दूसर सफे पर जुदा लिख दीया गया है

ज्ञानी का वसले आम अर्थात सर्व से अभेदता.

४ राग सारंग ताल धमार.

मोहताज के बीमार के पापी के और नादार के
हम लैब-ओ-हम बगल हूं मैं, हमराज हूं बेयार का
सुंसान शब दरया किनारे हैं खड़े डट करतो हम

१ गरीब. २ मुफलस. ३ बिलकुल नज़दीक. ४ साथ साथ (एक कख में). ५ भेद जानने वाला. ६ ना वाकफ.

अरु कैदे तख्त[7] ताज में, गर हैं पड़े जकड़े तो हम
ससते से ससते हैं तो हम, मैहंगे से मैहंगे हैं तो हम
ताज़ा से ताज़ा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम
वाहद[8] हूं मुझ को मेरा ही सजदा[9]ः सलाम है
मेरी नमस्ते मुझ को है, और राम राम है
जानते हो? आशको माशूक़ जब होते है एक
बेखुदः मेरी ही छाती पर बहम[10] सोते हैं एक
पुन्य में और पाप में, हर बाल सांस और मांस में
दूर कर आंखो से परदाः, देख जल्वा[11]ः घास में
कुच्छ सुना तुम ने? अजब चालें मेरी चालाकीयां
बे हजाबाना[12] इश्वे[13], लाधड़क बेबाकीयां[14]
हां करोड़ो ऐब जुर्म, अफाले[15] नेक, अमाले[16] जिशत

७ ताज, राजगद्दी की कैद. ८ अकेला. ९ बंदगी (उपासना) १० अकट्ठे. ११ ईश्वर के दर्शन. १२ बगैर परदे के. १३ नाज़ नखरे. १४ नडर पना. १५ पुन्य कर्म नेक काम. १६ बुरे कर्म.

मुझ में मुतसव्वर हैं दोज़ख , मैकदा: , मसजद बहिश्त
मार देना झूट बकना, चोर यारी और सितम
कुल जहां के ऐब रिंदाना पड़े करते हैं हम
ऐ ज़मी के बादशाहो ! पंडितो म्हेज़ंगारो !
ऐ पुलीस ! ऐ मुद्दै ! वकील ! हाकम ! ऐ मेरे यारो !
लो बता देते है तुम को राज़ खुफ़या आज हम
अपने मुंह से आप ही इकरार खुद करते हैं हम
" ख्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूं मैं
सब की मलकीयत को मकबूज़ात को और शान को "
यह सितम यारो ! कि हरगज़ भी तो सैह सकता नहीं
ग़ैर खुद के ज़िकर को, या नाम को कि नशान को

१७ वैहम कीये गये, आरोपत कीये गये. १८ शराब खाना. १९ स्वर्ग. २० मस्ताना हो कर. २१ शुद्ध साफ रहेने वाले कर्म काण्डी. २२ छुपा हुवा (गुह्यतम) भेद. २३ सर्व भूमी इत्यादि के कबजे (पृथ्वी संबन्धी मलकीयत.)

खुद कुशी[२४] करते हैं सब कानून तंनेकीहो[२५] जरह
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफान को
कुल जहां बस एक खर्राटा है मस्ती में मेरा:
ऐ गज़ब! सच कर दखाता हूं मैं इस बहोतान[२६] को
क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो "मुझे पकडो" ३ कोई
रिंद मस्तों का शहंशाह हूं, मुझे पकड़ो मुझे पकड़ो मुझे
पकड़ो कोई
सीनां[२८] ज़ोरी और चोरी, छेड़ छाड़ अटखेलीयां
चुटकीयां सीनामें भरता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥३॥
खा के माखन दिल चुरा कर, वह गया, मैं वह गया
मार कर मैं हाथ हाथों पर यह जाता हूं! मुझे
पकड़ो कोई ॥३॥

२४ आत्महत्या (अपने आप को मारना). २५ कानुन को साफ करना, फैसला, ऐब से खाली करना. २६ झूट, मिथ्या. २७ मुझे पकडो ३ इस इबारत को तीन दफ़ा सारी की सारी पढ़ो. २८ सारा ज़ोर लगा कर.

रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूं मैं
बांसरी में गा बुलाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
आईयेगा, लो उड़ा दीजीयेगा मेरे जिस्म को
नाम मिट जाने से मिलता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
दस्तो पा[29] गोशो[30] दीदाः, मिसल दस्ताना उतार
हुलिया सूरत को मटाता हूं, लो! मुझे पकड़ो कोई ॥
सांप जैसे कैंचली को, फेंक नामो नंग को
बे सिलेह[31] के बस में आता हूं, लो! मुझे पकड़ो कोई ॥
नट गया! वह नट गया! नट कर भला जाये कहां
मुंह तो फेरो! यह खड़ा हूं! लो! मुझे पकड़ो कोई ॥
आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जावोगे
आप को जकड़ो! अगर चाहो, मुझे पकड़ो कोई ॥

२९ हाथ और पाऊं. ३० कानं और आंख. ३१ हत्थ्यार रहित, बगर किसी सामान और हत्थ्यार के.

आतशे[३१] सोजां हूं मुझ में पुन्य क्या और पाप क्या
कौन पकड़ेगा मुझे ? और हां ! मेरा पकड़ेगा क्या

३२ जलाने वाली आग.

ज्ञानीका प्रण जो सर्व से अभेद होनेके सबब स्वभावक हो जाता है.

५ राग जंगला ताल चलंत

हम नंगे उमर बतायेंगे, भारत पर वारे जायेंगे
सूखे चने चबायेंगे, भाईयों को पार लघायेंगे
रूखी रोटी खायेंगे, गरीबों के दुःख मिटायेंगे
गाली ताना[१] खायेंगे, आनन्द की झलक दिखायेंगे
सूलों पर नंगे जायेंगे, पर ब्रह्म विद्या फैलायेंगे[२]

१ बोली टटोली २ समझायेंगे, उपदेश करेंगे

ज्ञानी का निश्चय-व-हिम्मत.

६ राग परज ताल ग़ज़ल.

गरचि क़ुतब[1] जगह से टले तो टल जाये
गरचि बैहर[2] भी जुगनू[3] की दुम से जल जाये
हमालय बाद[4] की ठोकर से गो फिसिल जाये
और आफताब[5] भी क़बले[6] अरूज ढ़ल[7] जाये
मगर न साहबे हिम्मत[8] का हौंसला टूटे
कभी न भोले से अपनी जेबीं[9] पर बल आये

१ ध्रुव तारा २ समुद्र ३ रातको चमकने वाल कीड़ा जो उड़ता भी है ४ वायू ५ सूरज ६ निकलने (चढ़ने) से पैहिले ७ नाश हो जाने से मुराद है ८ हिम्मत वाला पुरुष ९ पेशानी, मस्तक

ज्ञानी का घर (महल)

७ राग पहाड़ी ताल धुमाली

सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पर सुहानी[1] मखमल है

१ दिल को भाने वाली.

दिन को सूरज की महफल है, शव को तारों की सभा वावा
जव झूम के यहां घँन आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं
चशमे तंबूर वजाते हैं, गाती है मॅलहार हवा वावा
यां पंछी मिल कर गाते हैं, पीतॅम के संदेस सुनाते हैं
यां रूप अनूप दखाते हैं, फल फूल और वॅर्ग ज़ॉ वावा
धन दौलत आनी जानी है, यह दुन्या राम कहानी है
यह आ़लम आ़लम फानी है, वाकी़ है ज़ाते खुदा वावा

२ रात ३ वादलों के समूह ४ राग जिस के गाने से वर्षा हो
५ प्यारे ६ पत्ता पत्ती ७ घास ८ सत स्वरूप

ज्ञानी को स्वप्न.

८ राग कल्याण ताल तीन

घर में घर कर

क़ल ख्वाव एक़ देखा, मैं काम कर रहा था
वैलों को हांकता था, और हल चला रहा था

मेहनत से सेर होकर वर्ज़िश से शेर होकर
यह जी में अपने आई "बस यार अब चलो घर"
घर के लीये थी मेहनत, घर के लीये थे बाहर
झट पट सनान करके, पोशाक कर के दर पर
घर की तरफ़ मैं लपका, पा शौक़ से उठा कर
तेज़ी से डंग बढ़ाकर, जल्दी में गड़ बड़ा कर
कि लो धौड़ धूप ही ने यह मचा दीया तहय्युर
वह ख़्वाब झट उड़ाया, यह पाओं घर में आया
बेदार ख़ुद को पाया, ले यार घर में घर कर
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया
क्या ख़ूब था तमाशा, यह ख़्वाब कैसा आया
बन बन में राम ढूंडा, मैं राम ख़ुद बन आया
मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया
अब सब घरों का हूं घर, ऐ राम! घर में घर कर

१ रज कर, तृप्त. २ दिल ३ पाओं ४ क़दम ५ हैरानगी, परेशानगी, अश्चर्यता ६ स्वप्न ७ जागना

ज्ञानी की सैर.

१ राग बिहाग ताल तीन.

मैं सैर करने निकला ओढ़े अंबर[1] की चादर
पर्वत में चल रहा था हवा के बाज़ूओं[2] पर
मतवाला[3] झूमता था हर तरफ़ घूमता था
झरने नदी-ओ-नाले पैहचान कर पुकारे
नेचर[4] से गूंज उठी उस वेद की ध्वनी की
"तत्त्वमसि त्वमसि"[5] तू ही है जान सब की
यह नज़ारा प्यारा प्यारा तेरा ही है पसारा[6]
जो कुच्छ भी हम बने हैं यह रूप बस तो तू है
सीनों में फिर हमारे है मुनअ़कस[7] तो तू है
जो कुच्छ भी हम बने हैं यह रूप बस तो तू है

1 बादल. २ परं. ३ मस्त. ४ प्रकृति, क़ुदरत. ५ वह (ब्रह्म, मालक) तू है, तू है. ६ फैलाओ, तेरी ही है यह सृष्टि. ७ बिम्बित, अक्स हुवा.

यह सुन जो मैं ने झांका, नीचे को सीधा तांका
हर आबशारो[8] चश्मा: गुलो बर्ग[9] का करिश्मा:
अल्वाने[10] नौ दर नौ, अश्खास[12] जिन्स हरे[13] नौ
हर रंग में तो मैं था, हर संग[14] में तो मैं था
मां मोमता[15] की मारी जाती है वारी न्यारी
शौहर[16] को पाके दुल्हन[17] सौंपे है अपना तन मन
मुद्दत का बिछड़ा बच्चा रोता है मां को मिलना
बे इख्तियार मेरा दिलो जां वह ही निकला
वह गुदाज़े[18] फरहत आमेज़[19], वह दर्दे दिल दिलावेज़[20]
पुर सोज़[21] राहते जां[22], लज़्ज़त भरे वह अरमां[23]

८ झरना. ९ फूल और पत्ते का जादू. १० किस्म २ में किस्म किस्म के रंग. १२ पुरुष. १३ हर तरह के. १४ पत्थर अथवा मेल. १५ मोह. १६ पति. १७ स्त्री. १८ दिल का पिघलना. १९ आराम या ठंडक से भरा हुवा. २० दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुःख जो दिल को भाव है २१ तासीर वाली. २२ ज़िन्दगी का आराम. २३ अफसोस आर्ज़ू, पछतावा.

वैह निकले जेबे[२४] दिल से, वसले [२५]रंजों में बदले
मेंह बरसा मोतीयों का, तूफान आंसूंओं का, झिम !
झिम ! झिम !

२४ दिल की जेब अथवा दिल के खाने या कोटड़ी से. २५ यह तमाम (दर्द इत्यादि) से निजानन्द का अनुभव देह निकला अर्थात यह तमात दुःख दर्द आत्मा साक्षातकार में बदल गये ॥

ज्ञानी की सैर.

१० राग कल्याण ताल तीन

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझमें मैं राम में हूं
बगैर सूरत अजब है जलवा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
मरकाय हुसना इशक हूं मैं, मुझी में राजो न्याज सब हैं
हूं अपनी सूरत पै आप शैदा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं

१ ज़हूर प्रकाश, दर्शन २ सुन्दरता और प्रेम की पोथी (ज़खीरा) ३ गुह्य और खाहश, ज़रूरत ४ आशक

ज़माना आयीना राम का है, हर एक सूरत से वह पैदा है
जो चश्मे हक्बीं खुली तो देखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है?
हुबाबो दर्या का है तमाशा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
सबब बताऊं मैं दर्जद का क्या? है क्या जो दरपर्दा देखता हूं
सदा यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आयीना में खुद आयीनागर
अजब तहय्युर हुवा यह कैसा? कि यार मुझ में मैं यार में हूं

५ शीशा. ६. आत्म दृष्टि. ७ बुलबुला और दरया. ८ अत्यन्तानन्द, हैरानी, निजानन्द. ९. पर्दे के पीछे. १०. आवाज़. ११. शीशा बनानेवाला, सकन्दर से मुराद भी है. १२ आश्चर्य.

मक़ाम पूछो तो लाॅमकां[13] था, न रामही था न मैं वहां था
लीया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझ में मैं
राम में हूं

अललॅत्तातर[14] है पाक जल्वा, कि दिल बना तूरे[15] बेक़ सीना
तड़प के दिल यूं पुकार ऊठा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
जहाज़ दरयामें और दरया जहाज़में भी तो देखिये आज
यह जिस्म[16] कश्ती[17] है राम दरया, है राम मुझ में मैं
राम में हूं

१३ देश रहित. १४ लगातार. १५ बिजली के पहाड़ की छाती
की तरह. १६ शरीर. १७ नाओ.

बाह्य वर्षा से अन्तरीय आनन्द की वर्षा का मुक़ाबला.

११ राग बिहाग ताल दादरा.

"चार तरफ से अबर[1] की वाह! उठी थी क्या घटा!

१ बादल

बिजली की जगमगाहटें, राद रहा था गड़गड़ा
बरसे था मेंह भी झूम झूम, छाजो उमंड उमंड पड़ा
झोंके हवा के ले गये होशे बदन को वह उड़ा
हर रगे जाँ में नूर था, नग़मा था ज़ोर शोर का
अब्र बरों से था सिवाय दिल में सरूर बरसता
आबे ह्यात की झड़ी ज़ोर जो रोज़ो शब पड़ी
फ़िक्रो ख्याल बेह गये, टूटी दूई की झोंपड़ी

२ बिजलीकी कड़क ३ मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े ज़ोर से वर्षा हूई ४ शरीर के होश ५ प्राण के हर हिस्से मै ६ अवाज़ ७ आनन्द ८ अमृत ९ दिन रात जो ज़ोर से पड़ी तो १० द्वैत की झोंपड़ी जो दिल में क़ायम थी सब बैह गयी

ज्ञानी की उदारता औ वेपरवाही.

१२ राग पीलू ताल दीपचंदी.

न है कुच्छ तमन्ना[1] न कुच्छ जुस्तजू[2] है
कि वहदत[3] में साकी[4] न सागर[5] न वू[6] है
मिलीं दिल को आंखें जभी मारफत की
जिधर देखता हूं सनम[7] रूबरू[8] है
गुलिस्तान[9] में जा कर हर इक गुल[10] को देखा
तो मेरी ही रंगत-ओ-मेरी ही वू है
मेरा तेरा उठा हूये एक ही सब
रही कुच्छ न हसरत[11] न कुच्छ आर्जू[12] है

१ खाहश (इच्छा) २ तलाश, ढूंड ३ एकता ४ आनन्द रूपी शराब पलाने वाला ५ पियाला ६ आत्म ज्ञान की ७ प्यारा (अपना स्वरूप) ८ सनमुख ९ बाग १० पुष्प ११ अफसोस १२ उमेद, खाहश

ज्ञानी की ताऽल्लुकी

१२ राग यमन कल्यान ताल चलन्त.

न कोई तालेब[1] हुवा हमारा, न हम ने दिल से किसी
को चाहा
न हम ने देखीं ख़ुशी की लैहरें, न दर्दों ग़म से कभी
कराह
न हम ने बोया न हम ने काटा, न हम ने जोता न
हम ने गाहा
ऊठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही
फिर अहाहा
न बाप बेटा न दोस्त दुश्मन, न आशक़ और सनम[3]
किसी के
अजब तरह की हुई फ़रागत न कोई हमारा न हम
किसी के

१ चाहने वाला, ढूण्डने वाला. २ नफ़रत. ३ दोस्त, (माशूक़.)

अभी हमारी बड़ी दुकां थीं, अभी हमारा बड़ा कैसब था
कहीं खुशामद कहीं द्रामद, कहीं ख़ैाज़ो कहीं अदब था
बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफ़ात और बड़ा हसब और
बड़ा नसंब था
खुदी के मिटते ही फीर जो देखा, न कुच्छ हसब था
न कुच्छ नसब था
अजब कुँरशमे ही हो रहे हैं, मज़े की रद-ओ बदल है
हर दम
यह क्या तमाशा है यार हर सूं, यह भेद क्या है अहा
अहाहा

४ पेशा. ५ खातर. ६ उत्तम कुल. ७ तमाशे (नाज़ो अदा.)
८ विकार, तबदीलीयें. ९ तरफ.

ज्ञानी को मुबारकबादी.

१४ राग भैरवी ताल चलन्त.

नज़र आया है हर सू[1] मेह[2] जमाल अपना मुबारक हो[3]
"वह मैं हूं" इस खुशी में दिल का भर आना
मुबारक हो

यह उरयानी[4] रूखे खुरशीद[5] की खुद पर्दा हायल[6] थी
हुवा अब फाहश पर्दा[7] सितर[8] उड़ जाना मुबारक हो

यह जिस्मो इस्म का कांटा जो वे ढव सा खटकता था
खलश[9] सब मिट गयी कांटा निकल जाना मुबारक हो
तमसखर[10] से हुये थे क़द साढ़े तीन हाथों में

१ हर तरफ २ चांद की सुन्दरता वाला (अपना प्रकाश) ३ स्वस्ति हो ४ प्रकटताई, ज़ाहर होना, निकलना ५ सूरज का मुख (अर्थात अपना आत्मा) ६ ढके हूये थी ७ पर्दा ८ नाम रूप ९ झगड़ा, चोट १० ठट्ठे से, हसी से

वले[11] अब वुसअत[12] फिक्रो तखैय्यल[13] से भी बढ़ जाना
मुबारक हो
अजब तस्खीर[14] आलम गीर[15] लाई सल्तनत आली[16]
मेह-[17]ओ-माही का फ़रमां[18] को बजा लाना मुबारक हो
न खैदशः[19] हर्ज का मुतलिक़[20] न अंदेशा खलल[21] बाकी
[22]फुरेरे का बलंदी पर यह लैहराना मुबारक हो
तअल्लुक़ से बरी[23] होना हरूफे[24] राम की मानन्द
हर इक पैहलू[25] से नुक़ता[26] दाग़ मिट जाना मुबारक हो

११ किन्तु १२ सीमा १३ फिक्रो ख्याल १४ फतह, विजय १५ जहान का क़ाबू करना १६ बड़ी भारी १७ सूरज और चांद १८ हुक्म का मानना १९ डर २० बिल्कुल २१ फसाद तुबाही २२ झंडा २३ आज़ाद २४ राम के हरफ़ (बरंगे र आ मं) २५ तरफ २६ बिन्दु

---

१५ राग भैरवी ताल दादरा

ईशावास्योपनिषद के आठवें मंत्र का भावार्थ कविता में परोया हुवा है

है मुहीतो[1] मनज़्ज़ा-ओ-[2] बे बदनां,[3] रंगो पै[4] है कहां

हमः[5] बीं हमः[6] दान

वह बरी[7] है गुनाहों से रिंदे ज़मान,[8] बदो नेक[9] का उस में

नहीं है निशां

वह बज़ुर्गे बज़ुर्गां[10] है राहते जां,[11] वह है वाला से वाला[12]

व नूरे जहां[13]

वही खुद है जिनां[14] व बेरूं[15] ज़ बियां, दीये उस ने

अज़ल[16] में हैं रंगो शां[17]

1 सर्व व्यापक. २ पाक, शुद्ध. ३ बदन से (शरीरसे) राहित ४ नाड़ी हड्डी पावों रहत. ५ सर्व दर्शी ६ सर्वज्ञ. ७ आज़ाद ८ ज़माने का रिंद मस्त. ९ बुरे और नेक. १० महां से महान्. ११ प्राणों का आराम. १२ ऊंच से ऊंचे. १३ दुन्या का नूर. प्रकाश) १४ स्वर्ग. १५ वर्णन रहत. १६ अनादि काल से १७ नाना प्रकार के रंग रूप.

यही राम है दीदों[18] में सब के निहां[19], यही राम है वेहर[20]
में वरं[21] में अयां[22]

१८ आंखोंमें १९ छुपा हुवा २० समुद्र २१ पृथ्वी २२ जाहर.

बीमारी में ज्ञानी की अवस्था.

१६ राग भैरव ताल शूल.

वाह वा[1] ऐ तप व रेजश ! वाह वा
ह्व्वाजा ऐ दर्दो पेचश ! वाह वा
ऐ बलाये नागहानी[2] ! वाह वा
वैल्कम, ऐ मर्गे जवानी[3] ! वाह वा
यह भंवर यह कैहर वर्पा[4] ? वाह वा
बैहरे मिहरे राम में[5] क्या वाह वा

१ बहुत अच्छा, बहुत खूब २ अचानक आने वाली आफत ३ युवा में मृतु ४ ईश्वरीय कोप, गज़ब ५ सूरज रूपी राम के समुद्र में, अर्थात राम के प्रकाश स्वरूप में यह सब लैहरें मारते हैं.

खांड का कुत्ता गधा चूहा बिल्ला[6]
मुंह में डालो ज़ायक़ाः है खांड का
पगड़ी पाजामा दुपट्टा अंगरखा
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था
दामनी तोड़ी व माला को घड़ा
पर निगाहे हक़[7] में है वही तिल्ला[8]
मोतियाबिन्द दिल की आंखों से हटा
मर्ज़ो सिहत[9] ऐन राहत[10] राम था

६ बिल्ली का पुरुष ७ ज्ञान दृष्टि, आत्मिक दृष्टि ८ सुवर्ण, सोना
९ तन्दुरुस्ती १० आराम

ज्ञानी का नाच

१७ राग नट नारायण ताल दीपचंदी.

नाचूं मैं नटराज रे, नाचूं मैं महाराज. (टेक)
सूरज नाचूं तारे नाचूं, नाचूं बन महताब[1] रे ॥१॥ नाचूं०

१ चांद.

तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे ॥ नाचूं० २

²बादर नाचूं वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु ³नाव रे ॥ नाचूं० ३

जर्रह नाचूं समुद्र नाचूं, नाचूं ⁴बेघेरा काज रे ॥ नाचूं० ४

घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पाया दाज रे ॥ नाचूं० ५

राग गीत सब होवत हर दम, नाचूं पूरा साज रे ॥ नाचूं० ६

राम ही नाचत राम ही बाजत, नाचूं हो निर्लाज रे ॥ नाचूं० ७

२ बादल. ३ जहाज़, बेड़ी. ४ निकम्मा काम.

त्याग (फ़क़ीरी.)

राग शंकराचरण ताल धुमाली.

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है
जो घर रखे सो घर घर में रोवे है ॥ टेक
जो राज तजे वह महाराज करे है
धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है
सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे[1] है
जो जान तजे वह कभी नहीं मरे है
जो पलंग तजे वह फूलों पै सोवे है
जो घर रखे वह घर घर में रोवे है ॥ १ ॥
जो पर[2] दारा को तजे, वह पावे रानी
अरु झूट वचन दे त्याग, सिद्ध हो बानी

१ दूर करना २ दूसरे पुरुष की स्त्री

जो दुरबुद्धि को तजे, वही है ज्ञानी
मन से त्यागी हो, रिद्धि[3] मिले मन मानी
जो सर्व तजे उसी का सब कुछ होवे है
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है ॥ २ ॥
जो इच्छा नहीं करे वह इच्छा पावे
अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे
नहीं मांगे तो फल पावे जो मन भावे
है त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे
जो मैला होकर रहे, वह दिल धोवे है
जो घर[4] रक्खे वह घर घर में रोवे है ॥ ३ ॥

३ रिद्धी सिद्धी से मुराद है ४ घर से मुराद यहां प्राकृत अहंकार से है,

---

२ लॉनी, राग धनासरी ताल धुमाली.

नहीं मिले हर धन त्यागे नहीं मिले राम, जान तजे
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे

सुत दारा या कुटंब त्यागे, या अपना घर बार तजें
नहीं मिले है प्रभु कदापि, जग का सब व्यवहार तजे
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी आहार तजे
वस्त्र त्यागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे
तो भी हर नहीं मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे ॥
नारायण तो० १

तजे पलंग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे
जात की इज्जत, नाम और तेज और कुलकी सारी
चाल तजे
बन में निशिदिन विचरे और दुन्या का जंजाल तजे
देह को अपनी चोह जलावे, शरीर की भी खाल तजे
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तौभी, चाहे वह अपनी शान तजे ॥
नारायण तो० २

रहे मौन बोले नहीं मुखसे, अपनी सारी बात तजे

१ बेटा स्त्री. २ दिन रात, हमेशा.

बालपन से योग ले चाहे तात[३] तजे या मात तजे
शिखा सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम जात तजे
कभी जीव को न मारे और घात तजे अपघात तजे
इतना तजे तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजे ॥
नारायण तो० ३

रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शैन[५] तजे
कष्ट उठावे रहे बेचैनी, सुख और सारी चैन तजे
मीठा हो कर बोले सब से, कडुवे अपने बैन[६] तजे
इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन[७] तजे
बनारसी उसे मिलें नहीं हर, चाहे सकल जहान तजे ॥
नारायण तो०

३ पिता ४ रक्षा करना, बचाना ५ सोना, बिस्रा ६ शब्द, बानी, वाक्य ७ रात.

---

३ राग सोहनी ताल गज़ल.

फक़ीरी ख़ुदा को प्यारी है, अमीरी कौन विचारी है (टेक)
वदन पर खाक सो है अकसीर, फक़ीरों की है यही जागीर
हाथ बांधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वज़ीर
सदा यह सच हमारी है, गदा की ख़ुदा से यारी है ॥१
फक़ीरी ख़ुदा०

है उन का नाम सुनो दरवेश, कोई नहीं पाये उन से पेश
ख़ुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष
कभी तो गिरयाँ-ओ-ज़ारी है, कभी चश्मों में ख़ुमारी है॥
फक़ीरी० २

है उन का रुतवा बहुत वलन्द, ख़ुदा के तेयीं हुवा यह पसन्द
बादशाह से भी है दो चन्द, उन्हें मत बुरा कहो हर चंद
उन की दिल पर स्वारी है, ऐसी कहीं नहीं तय्यारी है
फक़ीरी० ३

१ रसायन, सब से बढ़ कर दारू २ आवाज़ ३ फक़ीर ४ फ़क़ीर ५ रोना पीटना ६ आंख ७ मस्ती

चीथड़े शाल से हैं आ़ला, चशम हंरताल से हैं आ़ला
चने भी दाल से हैं आ़ला, चलन हर चाल से आ़ला
ज़खम जो दिल पर कारी है, वही ख़ुद मरहम विचारी है
फक़ीरी० ४

पाओं में पड़ा जो है छाला, वह है मोतयों से भी आ़ला
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे जंमशेद से भी आ़ला
अगर कोई हंफ़त हज़ारी है, वह भी उन का भिषारी है
फक़ीरी० ५

मकां लॆमकॉं फक़ीरों का, निशां वे निशॉं फक़ीरों का
फक़र है निंहॉं फक़ीरों का, ख़ुदा है ईमान फक़ीरों का
ताक़त सबर वह भारी है, मौत भी उन से हारी है
फक़ीरी० ६

८ संसम ९ सखत १० जमशेद बादशाह का प्याला ११ लकब, खताब होता है जिस से सात हज़ार सपाहीयों का अफसर मुराद होती है १२ देश रहित १३ छुपा हुवा, गुप्त

चढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गयी खाल तो क्या
परवाह
आ गया माल तो क्या परवाह, हूये कङ्गाल तो क्या
परवाह
खुदा ही जेनाब वारी है, फक़र की यही क़ैरारी है

१४ महान १५ स्थिति

---

४ काफी दीपचंदी.

मेरा मन लगा फकीरीमें (टेक)
डंडा कूंडा लीया बगलमें, चारों चक्र जगीरी में ॥ मे० १
मंग तंग के टुकड़ा खांदे, चाल चलें अमीरी में ॥ मे० २
जो सुख देखियो राम संगतमें, नहीं है वज़ीरीमें ॥ मे० ३

---

५ आनन्द भैरवी ताल गज़ल.

न ग़म दुन्या का है मुझ को न दुन्या से कनारा है
न लेना है न देना है न हीला है न चारा है

१ अलैहदगी २ बहाना

न अपने से महब्बत है, न नफरत ग़ैर से मुझ को
सबों को ज़ाते हैंक देखुं, यही मेरा नज़ाराः है
न शाही में मैं शैदा हूं, गँदाई में न ग़म मुझ को
जो मिल जावे सोई अच्छा, वही मेरा गुज़ारा है
न कुफ़र इस्लाम से फारग़, न मिल्लतं से ग़रज़ मुझ को
न हिन्दु गिँवरो मुसल्म हूं, सबों से पंथ न्यारा है ॥

३ असल स्वरुप ४ आशक़, लौलीन ५ फक़ीरी ६ मत, मतान्तर
७ आग के पूजने वाला पार्सी लोग

जोगी (साधू) का सच्चा रूप (चरित्र)

७ ग़ज़ल.

प्यारों ! क्या कहूं अहवाल की अपने परेशानी ?
लगा ढलने मेरी आंखों से इक दिन खुद बखुद पानी
यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी
कि जिस की हो रही है यह जो हर इक जा सैनाखानी

१ सारे हाल (अवस्था सारी) २ जगह (देश) ३ स्तुति

किसी सूरत से उस को देखीये "कैसा है वह
जानी" ॥ १ ॥

चढ़ा इस फिक्र का दरया, भरा इस जोश में आकर
कि इक इक लैहर उस की ने, ले उड़ाया हवा ऊपर
कँरार-ओ-होश-ओ-अक़्ल-ओ-सब्र-ओ-दानिश बैह गये
यक्सर

अकेला रह गया आजिज़, ग्रीबो बेकैस—ओ—बेपर
लगा रोने कि इस मुशकल की हो अब कैसे आसानी ? ॥२॥

यह सूरत थी, कि जी में इशक़ ने यह बात ला डाली
मंगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफनी रंगा डाली
विना मुंदरे गले के बीच सेली बरमला डाली
लगा मुंह पर भवूत और शकल जोगी की बना डाली
हुवा अवधूत जोगी, जोगीयों में आप गुर ज्ञानी ॥ ३ ॥

४ प्यारा दिल्बर. ५ ठैहराओ, धीर्यता (शान्ति, चैन) ६ ओ से मुराद हर जगह "और" से है ७ अक़्ल, समझ ८ अकेहे ९ जिस का कोइ न हो, लाचार १० दिल ११ फक़ीरी पुशाक

उठाई चाह[12] की झोली, पियाला चश्म[13] का खप्पर
बना कर इशक़ का कंठा, तलब[14] का सिर रख चक्कर
मुंडासा[15] गेरुवा बान्धा, रखा त्रिशूल कान्धे पर
लगा जोगी हो फिरने ढूंडता उस यार को घर घर
दुकां बाज़ार-ओ-कूचा ढूंडने की दिल में फिर ठानी ॥४॥
लगी थी दिल में इक आतश[16], धूवां उठता था आहों का
तमाशे के लीये हैलका[17], बन्धा था साथ लोगों का
तलब थी यार की और गरम था बाज़ार बातों का
न कुछ सिर की खबर थी और न था कुछ होश पाओं का
न कुछ भोजन का अन्देशा[18], न कुछ फिकरे अमल[19] पानी ॥ ५ ॥
फिर इस जोग का ठैहरा अजब कुछ आन कर नक़शा

१२ इच्छा १३ चक्षु. १४ ढूंडना १५ सिर पर फक़ीरी पगड़ी १६ आग १७ घेरा (पुरुषों का समूह) १८ ख्याल, फिक़र १९ भांग गांजे को फक़ीर अमल पानी कहते है.

जो आया साम्हने मेरे, तो कहता उस से " सुनता जा
कहो प्यारे! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा ? "
जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उस से और कुछ पूछा
वगैर यूंही लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी ॥६॥

कभी माला से कहता था, लगा कर जप से " ऐ माला!
हुआ हूं जब से मैं जोगी, तू ही उस यार को बतला"
कभी घबरा के हंसता था, कभी ले स्वांस रोता था
लबों से आह, आंखो से वहा पड़ता था दरया सा
अजब जंजाल में चक्कर के डाले है परेशानी ॥ ७ ॥

कोई कहता था " बावा जी! इधर आओ, इधर वैठो,
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक वैठो सस्ताओ,
जो कुछ दरकार हो 'मेवा मठाई' हुक्म फरमाओ "
न कहना उस से " लै आओ " न कहना उस से
" मत लाओ "

खबर हरगिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न वेगानी ॥८॥

२० और अगर २१ टाल मटोल देना.

बड़ी दुब्धा में था उस दम, कहां जाऊं? कहां देखूं?
किसे देखूं? किसे पूछूं? किधर जाऊं? कहां ढूंढूं?
करूं तदबीर क्या? जिस से मैं उस दिलदार को पाऊं
निशां हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था[22] जूं मजनूं
अजब दरया-ए-हैरत की हुई थी आ के तुग्यानी[23] ॥९॥
उसी को ढूंडता फिरता हुवा, मसजद में जा पहुंचा
जो देखा[24] वां भी है रोज़ो नमाज़ों का ही इक चर्चा
कोई जुब्बे[25] में अटका है कोई डाढ़ी में है उलझा
तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखर वां से घबराया
चला रोता हुवा बाहर ब अहवाले[26] परेशानी ॥१०॥
यही दिल में कहा " टुक मद्रस्से को झांकीये चल कर
भला शायद उसी में हो, नज़र आजाये वह दिल्बर "
गया जब वहां तो देखी, वाह वा! कुछ और भी[27] बदतर

२२ तरह, मानन्द २३ तूफ़ान २४ वहां से मुराद है २५ चोग़ा, लबादाः फ़क़ीरों का लबास २६ परेशानी की हालत (अवस्था) में २७ अधिक बुरी अवस्था

कतावें खुल रहीं हैं, मच रही है शोरो .गुल यक्सर
हरइक मसलेपै फाज़ल कर रहे हैं वैहसे नफ़सानी ॥११॥
चला जब वहां से घबरा कर, तो फिर यह आगयी जी में
कि यह जोगह[29] तो देखी, अब चलो टुक दैरें[30] भी देखें
गया जब वां तो देखा मूर्त और घंटों की झिङ्कारें
पुकारा तब तो रो कर "आह! किस पत्थर से सिर मारें?"
कहीं मिलता नहीं वह शोख काफर दुशमने जानी ॥१२॥
कहा दिल ने कि "अब टुक तीरथों की सैर भी कीजे
भला वह दिलरुबा[31] शायद इसी जागह पै मिलजावे"
बहुत तीरथ मनाये और कीये दर्शन भी बहुतेरे
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वां से
महब्बत छोड़ कर बस्ती की, ली राहे बियाबानी ॥१३॥
गया जब दैशत[32]-ओ-सैहरा[33] में तो रोया "आह! क्या करीये?

२८ अपने अपने ख्याल पर झगड़ा २९ स्थान, जगह से मुराद है ३० मंदर ३१ प्यारा माशूक़ ३२ जंगल ३३ बन, बियाबान्

कहां तक हिजूर[३४] में उस शोख के रो रो के दिन भरीये?
किधर जाईये और किस के ऊपर आश्रा धरीये?
यही वेहतर है अब तो डूबीये या ज़ैहर खा मरीये
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी "१४"
रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दशत में नाला[३५]
ग्रीवो वेकसो तन्हा मुसाफर वेवतन हैरान्
पहाड़ों से भी सिर पटका, फिरा शैहरों में हो गिरियां[३६]
फिरा भूखा प्यासा ढूंडता दिल्बर को सरगर्दान्[३७]
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी १५
पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था
लगीं थीं दिल की आंखें यार से, और जी निकलता था
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था
वले मैहबूव[३८] से कुछ हाय! मेरा वस न चलता था
पड़े वहते थे आंसू लौलागूं[३९] लाले वदखशानी[४०] ॥१६॥

३४ जुदायगी ३५ रोते हुवे ३६ रोता हुवा, रुदन करता हुवा ३७ परेशान् ३८ प्यारा माशूक (स्वस्वरूप) ३९ लाल (सुर्ख) पुष्प की तरह ४० वदखशां देश का ज्वाहर, हीरा.

जब इस अहवाल को पहुंचा, तो वह महबूब बेपरवाह
वहीं सौ बेक़रारी से मेरी बालीन[41] पै आ पहुंचा
उठा कर सिर मेरा ज़ानू[42] पै अपने रख के फरमाया
कहा "ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जाँ[43]"
अयां[44] हैं इस घड़ी करते तेरे पै भेद पिन्हानी[45] ॥१७॥
यह सुन रब "पैहले हम आशक़ को अपने आज़माते हैं
'जलाते हैं' 'सताते हैं' 'रुलाते हैं' 'बुलाते हैं'
हर इक अहवाल में जब खूब साबित[46] उस को पाते हैं
उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुंह दिखाते हैं ॥
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी" ॥१८॥
सदा[47] महबूब की आई जुंहीं कानों में वां[48] सेरे
बदन में आ गया जी, और वहीं दुःख दर्द सब भूले
फिर आंखें खोल कर दिलबर के मुंह पर टुक नज़र कर के

४१ सरहाना, तकिया ४२ घुटने ४३ जगह ४४ ज़ाहर करना, खोल देना ४५ गुप्त, छुपा हुवा ४६ पक्का, पुख़ता ४७ आवाज़ ४८ वहां, उस स्थान पर

ज़मीन-ओ-आस्मान् चौदेह तँवक़[49] के खुल गये पर्दे
मिटी इक आन में सब कुछ खरावी और परेशानी ॥१९॥
हूई जब आ के यँकताई[50], दूई का उठ गया पर्दा
जो कुछ वेह्म-ओ-दग़ा थे, उड़ गये इक दम में हो पौरा[51]
नज़ीर उस दिन से हम ने फिर जो देखा खूब हर इक जा
वुही देखा, वुही समझा, वुही जाना, वुही पाया,
बरावर हो गये हिन्दू मुसलमान्, गिँब्र[52] नँसरानी[53] ॥२०॥

४९ १४ लोक ५० अभेदता ५१ टुकड़े ५२ पारसी लोग ५३ ईसाई लोग

जंगल का जोगी

७ राग भैरव ताल तीन.

जंगल में जोगी बसता है, गाह रोता है गाह हसता है
दिल उस का कहीं न फसता है तन मन में चैन बरसता है
(हर हर हर ओम। हर हर हर ओम) टेक १

कभी

खुश फिरता नंग मलंगा है, नैनो में बैहती गंगा है
जो आजाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है॥ हर० २

गाता मौला मतवाला है, जब देखो भोला भाला है
मन मनका उस की माला है, तन उस का एक शिवाला
है॥ हर० ३

नहीं परवाह मरनें जीने की, है याद न खाने पीने की
कुछ दिन की सुद्धि न महीने की, है पवन रुमाल पसीने
की॥ हर० ४

पास इस के पंछी आते हैं, और दरया गीत सुनाते हैं
बादल अशनान कराते हैं, वृंछ उस के रिशते नाते हैं
हर० ५

गुलनार शफ़क़ वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी
जोगी की निगाह हैरान गहरी, को तकती रह रह कर
है परी॥ हर० ६

२ ब्रह्मज्ञानी, ईश्वर ३ मस्त ४ पक्षी ५ वृक्ष, दरखत ६ अनार के रंग वाली लाली आकाश में सूरज के उदय अस्त समय जो होती है

वह चांद चटकता गुँल जो खिला, इस मिहर की जोत
से फूल झड़ा
फव्वारह फरहत का उछला, पुहार का जग पर नूर
पड़ा ॥ हर० ७

७ फूल ८ सूरज ९ खुशी, आनन्द १० पुछाड़, बाछड़

---

८ राग पर्ज ताल धुमाली

हमन से मत मिलो लोगो, हमन खफ़ती दिवाने हैं
खुशी का राह त्यागा है, कठिन में जा समाने हैं ॥ टेक
तजी खिदमत वज़ीरी की, पाई लज्ज़त फक़ीरी की
चढ़े किशती सबूरी की, फक़र के यह मुकाने हैं ॥ हमन० १
हमन दिन रैनं सोते हैं, वसल में जान खोते हैं
कभी सूलों पै सोते हैं, बिरहों के यह निशाने हैं ॥ हमन० २

१ पागल (मस्त) २ सबर संतोष ३ हालत, दर्जा ४ रात
५ मेल, स्वरूप का अनुभव ७ जुदाई, अलैहदगी

---

९ सोहनी ताल दीपचंदी.

हर आन हंसी हर आन खुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा।
जब आशक़ मस्त फ़कीर हुवे, फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥ टेक.

हैं आशक़ और माशूक़ जहां, वहां शाह वज़ीरी है बाबा।
न रोना है न धोना है, न दर्दे असीरी है बाबा ॥
दिन रात बहारें चोहलें हैं, अरु इशक़ सफ़ीरी है बाबा।
जो आशक़ होय सो जाने है, यह भेद फ़क़ीरी है बाबा॥ १. टेक
है चाह फ़क़त इक दिलबर की, फिर और किसी की चाह नहीं।
इक राह उसी से रखतें हैं, फिर और किसी से राह नहीं॥
यां जितना रंज-तरद्दद है, हम एक से भी आगाह नहीं।

१ समय २ प्रेमी ३ उदासी ४ प्यारा दिलबर ५ क़ैद होने की दर्द ६ जैसे बुलबुल पक्षी पुष्प का (प्रेमी) आशक़ है और प्रेम में बोलता रहता है ऐसे ही (अपने दिल्बर के) नाम पुकारते रहने वाला. इशक़ (प्रेम) ७ इस दुन्या में ८ फ़िक्र ९ वाक़फ़

कुछ मरने का संदेह[10] नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥ २ ॥ हर०

कुछ ज़ुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद[11] नहीं, फर्याद नहीं।

कुछ कैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कुछ जब्र[12] नहीं, आज़ाद नहीं ॥

शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं।

हैं जितनी बातें दुन्या की, सब भूल गये कुछ याद नहीं ॥ ३ ॥ हर०

जिस सिम्त[13] नज़र भर देखे हैं, उस दिलबर की फुलवारी है।

कहीं सबज़ी की हरयाली है, कहीं फूलों की गुलकारी[14] है ॥

दिन रात मग्न खुश बैठे हैं, अरु आस उसी की भारी है।

बस आप ही वह दातारी[15] है, अरु आप ही वह भंडारी है ॥ ४ ॥ हर०

१० डर ११ इन्साफ १२ सख्ती, मजबूरी १३ तरफ १४ बेल बूटों को लगाना १५ सब कुच्छ देने वाला, सब का दाता.

निस ईशरत[16] है निस फरहत[17] है, निस राहत[18] है निस शादी[19] है।
निस मेहरोकरम[21] है दिलवर[22] का, निस खूबी खूब मुरादी[23] है।
जब उमडा दरया उलफत[24] का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारक बादी है ॥ ५ ॥ हर०

है तन तो गुल के रंग बना, अरु मुंह पर हर दम लाली है।
जुज़[25] ऐशो तरब[26] कुछ और नहीं, जिस दिन से सुर्त[27] संभाली है ॥
होंटों में राग तमाशे का, अरु गत पर बजती ताली है।
हर रोज़ बसन्त अरु होली है, और हर इक रात दिवाली है ॥ ६ ॥ हर०

१६ खुश दिली, खुश हालत १७ खुशी, आनन्द १८ आराम, शान्ति १९ आनन्द, खुशी २० सर्वदा, हमेशा २१ प्रेम (महब्बत) और कृपा २२ प्यारा २३ मनशा के मुताबक़ २४ प्रेम २५ बिना, सिवाये २६ खुश दिली, आनन्द, राग रंग २७ होश.

हम .आशक जिस सनम के हैं, वह दिल्वर सव से .आला है।
उस ने ही हम को जी वरवशा, उस ने ही हमको
पाला है॥
दिल अपना भोला भाला है, और .इशक वड़ा मतवाला है॥
क्या कहे और नजीर आगे? अव कौन समझने
वाला है॥ ७॥

२८ प्यारा २९ उत्तम ३० प्राण, जिन्दगी ३१ दृष्टान्त, मिसाल, मुराद कवि के नाम से भी है

अलवदा

(नोट) जव स्वामी राम तीरथजीने गृहस्थ छोड़ा था उसी दिन यह कविता राम महाराज से लिखी गयी थी, और लौहर के वाज़ार २ में घूमते समय और रेल पर स्वार होते समय गाई गयी थी॥ जिस से सब सम्बान्धियोंको आखरी समय की (रुखसत) अलवदा की गयी

१० राग पीलू ताल दीपचंदी

अलवदा मेरी रैयाज़ी! अलवदा

१ रुखसत हो २ गणित

अलवदा ए प्यारी रावी[3]! अलवदा
अलवदा ऐ ऐहले खाना[4]! अलवदा
अलवदा मासूमे नादां[5]! अलवदा
अलवदा ऐ दोस्तो दुशमन! अलवदा
अलवदा ऐ शीतो-ओशन[6]! अलवदा
अलवदा ऐ कुतबो तद्रीस[7]! अलवदा
अलवदा ऐ खूबो तक़दीस! अलवदा
अलवदा ऐ दिल! खुदा! ले अलवदा
अलवदा राम! अलवदा, ऐ अलवदा!

३ रावी दरया का नाम है जो लाहौर में बहता है ४ घर के लोगो ५ नादान बच्चे ६ सर्दी अरु गर्मी ७ किताब (पुस्तक) और पाठशाला (मदरस्सा) ८ अच्छा, बुरा ९ ऐ दिल तुझ को भी रुखसत हो, ऐ खुदा (ईश्वर) तुझ को भी रुखसत हो १० ऐ रुखसत के शब्द तुझ को भी रुखसत हो.

---

११ राग यमन कल्यान, ताल चलन्त

न बाप बेटा न दोस्त दुशमन, न आशक़ और सनम[1] किसी को।

१ प्यारा, माशूक़

अजब तरह की हुई फ़ेरागत, न कोई हमारा न हम किसी के॥
टेक

न कोई तालिब हुवा हमारा न हम ने दिल से किसीको चाहा।
न हम ने देखीं खुशी की लैहरें न दर्दो ग़म से कभी कराहा।
न हम ने बोया न हम ने काटा न हम ने जोता न हम ने गाहा।
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही
फिर अहाहा ॥ १ ॥ टेक

यह बात कल की है जो हमारा कोई था अपना कोई बेगाना।
कहें थे नाते, कहें थे पोते, कहें थे दादा, कहें थे नाना।
किसी पै फटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना।
उठा जो दिल से भरम का थाना, तो फिर जभी से यह
हम ने जाना ॥ २ ॥ टेक

अभी हमारी बड़ी दुकान थी, अभी हमारा बड़ा कसब था।
कहीं खुशामद कहीं दरामद कहीं त्वाज़ोः कहीं अदब था।

२ फ़ुरसत ३ चाहने वाला ४ नफरत ५ मुकाम, घर ६ आनेका सतकार ७ खातर दारी

बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफात और बड़ा हसब और बड़ा नसब था ।
खुदी के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ नसब था ॥ ३ ॥ टेक
अभी यह ढब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं पै जा के पड़िये ।
किसी से हक पर फसाद करिये, किसी से नाहक लड़ाई लड़िये ।
अभी यह धुन थी दिल अपने में, "कहीं बिगाड़िये कहीं झगड़िये"
दूई के उठते ही फिर यह देखा, कि अब जो लड़िये तो किस से लड़िये ॥ ४ ॥ टेक

८ बज़ुर्गी मर्तबा से मुराद है ९ खान्दान, नसल १० अहंकार ११ सचाई १२ ख्याल

१२ राग जंगला ताल धुमाली, या राग बिहाल ताल चलंत.

त्याग का फल.

अपने मज़े की ख़ातर गुल[1] छोड़ ही दीये जब।
रूये ज़मीं[2] के गुलशन[3] मेरे ही बन गये सब॥
जितने ज़बां के रस थे कुल तर्क कर दीये जब।
बस जायके जहां[4] के मेरे ही बन गये सब॥
ख़ुद के लीये जो मुझ से दीदों[5] की दीद छूटी।
खुद हुसन के तमाशे मेरे ही बन गये सब॥
अपने लीये जो छोड़ी ख़ाहश हवाखोरी की।
बादे सबा[6] के झोंके मेरे ही बन गये सब॥
निज[7] की ग़रज़ से छोड़ा सुनने की आर्ज़ू को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब॥
जब बेहतरी के अपनी फ़िकरो ख़याल छूटे।

१ फूल २ तमाम पृथ्वि भर के ३ बाग़ ४ दुन्या के ५ आंखें की दृष्टि ६ पर्वा, हवा ७ अपनी

फ़िक्रो खयाले रंगीं मेरे ही बन गये सब ॥
आहा ! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो ईस्म पर ही ॥
यह दस्तो पा हैं सब के, आंखे यह हैं तो सब की।
दुन्या के जिस्म लेकिन मेरे ही बन गये सब ॥

८ आनन्द दायक, सुन्दर, विचित्र ख्याल ९ शरीर और नाम
१० हाथ, पाओं

---

१३ राग धनासरी ताल धुमाली.

वाह वाह रे मौज फकीरां की (टेक)
कभी चबावें चना चबीना, कभी लपट लें खीरां की
वाह वाह रे० १
कभी तो ओढें शाल दुशाला, कभी गुदड़ियां लीरां की
वाह वाह रे० २
कभी तो सोवें रंग महल में, कभी गली अहीरां की
वाह वाह रे० ३

१ पेहनें. २ नीच जाति के लोग.

मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीरां की
वाह वाह रे०४

३ तरंग लेहर.

---

१४ कुंडलियां

एक फ़क़ीरी ला मेज़हब, दूसरो ज्ञान अथाह
उभय रतन ढग जिन्हों के, तिन को क्या परवाह
तिन को क्या परवाह, वस्तू जिस पाई अमोलक
कौन तिन्हों को कमी, अटोट धन जिन घर गोलक
कह गिरिधर कवि राय, भ्रान्त जिन दीनी छेक
सो क्यों होवे दीन, ब्रह्म वर्त जिन के एक ॥१॥

१ पन्थ रहित २ अनन्त ३ न खतम होने वाला

जंगल में मंगल तुझे, [1]जे तूं होवें फ़क़र
खिदमत तेरी सब करें, जे छोड़े दिल के मकर
दिल के छोड़ें मकर, फ़क़ीरी का रंग लागे

१ अगर

मूल² सहित संसार, रोग सगरो भ्रम भागे
कह गिरिधर कविराय, कुफ़र के तोड़ो संगल
जहां इच्छा तहां रहो, नगर हो अथवा जंगल ॥२॥

२ अज्ञान रूपी जड़ समेत

---

१५ राग पहाड़ी ताल दादरा

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं (टेक)
जो फक़र में पूरे हैं, वह हर हाल में खुश हैं।
हर काम में हर दाम² में हर चाल में खुश हैं।
गर माल दीया यार ने, तो माल में खुश हैं।
बेज़र³ जो कीया, तो उसी अहवाल⁴ में खुश हैं।
इफलास⁵ में इदबार⁶ में इकबाल⁷ में खुश हैं }
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं } ॥ १ ॥

१ त्याग २ कीमत, अथवा जाल ३ निरधन, गरीब ४ अवस्था, हालत ५ गरीबी ६ बोझ किसी तरह का, कमनसीब, बुरे भाग्य वाला ७ बदभागी, अच्छी किस्मत वाला

चेहरे पे है मलाल न जिगरमें असरे गम।
माथे पे कहीं चीनें न अब्रू में कहीं खम।
शिकवाः न जुबांन पर, न कभी चश्म हुई नम।
गम में भी वही ऐश, अलम में भी वही दम।
हर बात, हर औकात, हर अफ़ाल में खुश हैं ॥२॥ पूरे०
गर यार की मर्जी हुई, सिर जोड़ के बैठे।
घर बार छुड़ाया, तो वहीं छोड़ के बैठे।
मोड़ा उन्हें जिधर, वहीं मुंह मोड़ के बैठे।
गुदड़ी जो सिलाई, तो वुही ओढ़ के बैठे।
और शाल उढ़ाई, तो उसी शाल में खुश हैं ॥३॥ पूरे०
गर उस ने दीया गम, तो उसी गम में रहे खुश।
मातम जो दीया, तो उसी मातम में रहे खुश।

८ रंज, उदासी ९ फिक्र गम का असर १० वल, वट, त्योरी ११ टेढ़ापन, तिर्छापन १२ उलाहनाः, शकायत १३ आंसू भरना, अश्रूपात १४ खुशी, खुशदिली १५ रंज, दुःखावस्था १६ समय, काल १७ काम १८ रोना पीटना

खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे खुश।
जिस तरह रखा उस ने, उस आ़लम[19] में रहे खुश।
दुःख दर्द में आफात[20] में जंजाल में खुश हैं ॥४॥ पूरे०
जीने का न अन्दोह[21] है न मरने का ज़रा ग़म।
यक्सां है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आ़लम[22]।
वाक़फ न बरस से न महीने से वह इक दम।
शब[23] की न मुसीबत न कभी रोज़[24] का मातम।
दिन रात घड़ी पैहर मह[25]-ओ-साल में खुश हैं ॥५॥ पूरे०
गर उस ने उढ़ाया तो लीया ओढ़ दोशाला।
कम्बल जो दीया तो वुही कांधे पे संभाला।
चादर जो उढ़ाई तो वुही हो गयी बाला[26]।
बंधवाई लंगोटी तो वुही हंस के कहा, "ला"।
पोशाक में, दस्तार[27] में, रोमाल में खुश हैं ॥६॥ पूरे०

१९ अवस्था, हालत २० मुसीबत २१ ग़म २२ हालत २३ रात २४ दिन २५ मास, महीना २६ सुंदर, जेवर २७ पगड़ी

गर खाट बछाने को मिली, खाट में सोये।
दुकां में सुलाया, तो जा हाट में सोये।
रस्ते में कहा "सो", तो जा बाट में सोये।
गर टाट बछाने को दीया, टाट में सोये।
और खाल बछा दी, तो उसी खाल में खुश हैं॥७॥ पूरे०
पानी जो मिला, पी लीया जिस तौर का पाया।
रोटी जो मिली, तो कीया रोटी में गुज़ारा।
दी भूख, गर यार ने, तो भूख को मारा।
दिल शाद रहे, कर के कड़ाके पै कड़ाका[28]।
और छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं॥८॥ पूरे०
गर उस ने कहा "सैर करो जा के जहां[29] की"
तो फिरने लगे जंगलो बर, मार के झांकी।
कुछ दश्तो[30] वियाबां में खबर तन की न जाँ की।
और फिर जो कहा "सैर करो हुसनेबुतां[31] की"

२८ निराहार २९ देश पृथ्वि, बन से भी मुराद है ३० जंगल
३१ प्यारों (पुरुषों) की सुंदरता

तो चश्म[32]-ओ-रुख-ओ-ज़ुल्फ़[33]-ओ-ख़त्त-ओ-ख़ाल[34] में खुश हैं ॥९॥ पूरे०

कुछ उन को तलब[35] घर की न वाहर से उन्हें काम।
तक्या की न ख़्वाहश, न विस्तर से उन्हें काम।
अस्थल[36] की हवस[37] दिल में न मंदर से उन्हें काम।
मुफ़लस[38] से न मतलब न तवंगर[39] से उन्हें काम।
मैदान में बाज़ार में चौपाल में खुश हैं ॥१०॥ पूरे०

३२ आंख ३३ वाल ३४ वज़ा कता ३५ ज़रूरत ३६ फक़ीरों के रहने की जगह, (खानक़ाह) ३७ शौक़, लालच, इच्छा ३८ ग़रीब, तंगदस्त ३९ अमीर ४० मंडर

---

१६ राग विलावल ताल रूपक.

गर है फ़क़ीर तो तूं न रख यहां किसी से मेल।
न तूंबड़ी न वेल पड़ा अपने सिर पै खेल॥ (टेक)
जितने तू देखता है यह फल फूल पात वेल

१ फक़ीर के पात्रों के नाम है

सब अपने अपने काम की हैं कर रहे झमेल
नातां है यां सो नाथ, जो रिश्ता[२] है सो नकेल
जो ग़म पड़े तो उसको तू अपने ही तन पर झेल ॥ १ गर है०
जब तू हुआ फ़क़ीर तो नाता किसी से क्या
छोड़ा कुटम्ब तो फिर रहा रिशता किसी से क्या
मतलब भला फ़क़ीर को बाबा किसी से क्या
दिलबर को अपने छोड़ के मिलना किसी से क्या ॥ २ गर है०
तेरी न यह ज़मीन है न तेरा यह आस्मान्
तेरा न घर न बार न तेरा यह जिस्मो जां[३]
उस के स्वाय कि जिस पै हूवा तू फ़क़ीर यां
कोई तेरा रफ़ीक़[४] न साथी न मिहरबान् ॥ ३ गर है०
यह उलफ़तें[५] कि साथ तेरे आठ पैहर हैं
यह उलफतें नहीं हैं मेरी जां! यह क़हर[६] हैं
जितने यह शैहर देखे हैं, जादू के शैहर हैं

२ सम्बन्ध ३ शरीर और प्राण ४ मित्र, दोस्त ५ मोह ६ ग़ुस्सा, क्रोध

जितनी मिठाईयां हैं मेरी जां! वह ज़हर हैं ॥ ४ गर है०

खूबां के यह जो चांद से मुंह पर खिले हैं बाल

मारा है तेरे वास्ते सय्याद ने यह जाल

यह बाल बाल अब है तेरी जान का वबाल

फंसियो खुदा के वास्ते इस में न देख भाल॥ ५ गर है०

जिस का तू है फ़क़ीर उसी को समझ तू यार

मांगे तो मांग उस से क्या नक़द क्या उधार

देवे तो ले वही जो न देवे तो दम न मार

इस के सिवाय किसि से न रख अपना कारो बार ॥ गर है० ६

क्या फायदा: अगर तू हुवा नाम को फ़क़ीर

हो कर फ़क़ीर तो भी रहा चाल में अंसीर

ऐसा ही था तो फ़क़र को नाहक़ कीया असीर

हम तो इसी सखुन के हैं क़ायल मीयां नज़ीर

७ सुन्दर पुरुष अथवा स्त्री ८ शिकारी ९ दुःख, बोझ १० क़ैद
११ क़ौल, इक़रार, वादा १२ कवि का नाम है

गर है फक़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल ।
न तूंबडी न बेल पड़ा अपने सिर पै खेल ॥

---

१७ राग जंगला.

लाज मूल न आइया, नाम धराया फक़ीर ॥ टेक
रातीं रातीं वदियां करेंदा, दिन नूं सदावें पीर॥१॥ला०
अपना भारा चाय न सकदा, लोकां वधावें धीर॥२॥ला०
कुड़म कुटुंव दी फाही फस्या, गल विच पा लिया
लीर ॥ ३ ॥ ला०
आखिर नतीज़ा मिलेगा पियारे, रोवेंगा नीरो नीर४ला०

मतलब

टेक ! फक़ीर नाम धरा कर तुझे (इन कामों से) शर्म नहीं आती.

(१) रात के समय छुप कर तूं बुराइयां करता है और दिन को महात्मा या गुरु कहलाता है; इस से तुझे शर्म नहीं आती.

(२) अपने अन्दर तो गम फिकर का इतना बोझ भरा पड़ा है कि उस को तूं उठा ही नहीं सकता और लोगों को धीरज

दला रहा है। इस बात से तुझे शर्म नहीं आती.

(३) कई तरह से चेलों का कुटुंब (परीवार) बनाकर आप तो तूं उस मे फंसा हुवा है और अपने गले में भगवे रंग के कपड़े पाकर सन्यासी (बे सबन्धी) बना रहा है॥

(४) खैर, इन तमाम करतूतों का तुझ को अन्त में खूब नतीजा मिलेगा और ज़ार ज़ार तुम को रोना पढ़ेगा॥

---

१८ राग शंकराभरण ताल केरवा

फकीरा ! आपे अल्लाह हो, आपे अल्लाह हो, मेरे प्यारे !
आपे अल्लाह हो (टेक)
आपे लाढ़ा आपे लाढ़ी आपे मापे हो। आपे मापे हो॥
फकीरा। १
आप वधायां आप स्यापे, आप अलापे हो २॥ फ० २
रांझा तूं हीं, तूं हीं रांझा, भुल्ल हीर न वेले रो २॥ फ० ३
तेरे जेहा सानू एथे ओथे, कोई न जापे हो २॥ फ० ४
घुंड कड क्यों चन्न मुंह उत्ते, ओहले रहों खलो॥ २
मेरे प्यारे। आपे ५

तूं हीं सब दी जान प्यारी, तैनूं तानाः लगे न कोय २
मेरे प्यारे । आपे० ६
बोली तानाः यारी सेवा, जो देखें तूं सो २ मेरे प्यारे!
आपे० ७
सूली सलीब जैहर दे मुके, कदे न मुकदा जो २॥फ०८
बुक्कल विच वड़ यार जो सुत्ते, ओथे तेरी लो २॥फ०९
तूं ही मस्ती विच शरावां, हर गुल दी खुशबो २ ॥
फकीरा आपे० १०
राग रंग दी मिठी सुर तूं, लैं कलेजा टो २॥ फ० ११
लाह लीडे यूसफ घुट मिल लै, दूई दे पट ढो २॥फ०१२
आठों अर्श तेरा नूर चमकदा, होर भी उच्चा हो२॥फ०१३
यह दुन्या तेरे नौंहां दे विच, हथ गल ते रख न रो २
फकीरा० १४
जे रब भालें बाहर किधर, ऐस गड़ों मुंह धो ॥२फ०१५
तूं मौला नहीं वन्दा चंदा, झूठ दी छड दे खो २॥फ०१६

पवन इन्द्र तेरी पंडां ढोंदे, क्यों तैनूं किते न ढोर॥फ०१७

काहनूं पया खेड़दा हैं भौं भौं विल्लीयां, वैठ नचल्ला हो॥

फकीरा० १८

तेरे तारे सूरज थैं थैं नचदे, तूं वेह जा कर चौ २॥फ०१९

पचे न तैनूं सुख वेओड़क, इहो गिरानी खो २॥फ०२०

दुःख हरता ते सुख करता, तैनूं ताप गये कद पोह २॥

फकीरा आपे० २१

चोर न पैंये, तैनूं भूत न चमड़े, होर गयो क्यों हो २॥

फकीरा आपे० २२

तूं साक्षी केढ़ी केह्यां मारें, हुन थक कर चल्यां हैं सौं, २

॥ मेरे प्यारे आपे० २३

खुल्यां तैनूं भौ न खांदे, लुक लुक कैद न हो २ मे०२४

वहदत नूं कर कसरत देखें, गयों भैंगा किधरों हो २॥

मेरे प्यारे आपे० २५

ताज तखत छड उट्टी मल्ली, ऐस गल्लों तूं रो २॥फ०२६

छड के घर दीयां खंडां खीरां, की लोड़ चवावें तो॰ २
॥ मरजानियां! आपे॰ २७

तेरे घट विच राम वसेन्दा, हाय! कुट २ भर न भो॰॥ फ॰ २८
राम रहीम सव वन्दे तेरे, तैथों वड़ा न कोय २ ॥फ॰ २९
आप भागीरथ आप ही तीरथ, वन गंगा मल धोय २ ॥
पर्दे फाहश होवीं रव करके, नंगा सूरज हो २॥फ॰ ३१
छड मौहरा सुन राम धुहाई, अपना आप न कोह २॥फ॰ ३२

मतलब पंक्ति वार :—१ ऐ फ़क़ीर (साधू)! तू आप ईश्वर हो, अर्थात तू आप ब्रह्म है ऐसा अनुभव कर ॥ क्योंकि तू आप ही पति है और तू आप ही स्त्री है और आप ही पित्रौ (वालदैन) है, इसलीये आप (ईश्वर) अपने में अनुभव कर ॥

२ तू आप ही वधाई आप ही रोना और आलापना रूप है, इसलीये आप (ईश्वर) अपने में अनुभव कर ॥

३ तू हीं आप रांझा (आशक़) है और तेरी प्यारी (हीर) तेरी वग़ल में है, उस को वाहर मत ढूंड और न उस की तालाश में (उसे अपने साथ भूल कर) जंगल में रो । ए फ़क़ीर! आप ईश्वर अपने आप अनुभव कर ॥

४ ऐ प्यारे! तेरे जैसा यहां और वहां कोई नज़र नहीं आता (तूं ही १ अद्वतीय स्वरूप हैं) इसलीये ऐ साधू! तू आप ही ब्रह्म है, ऐसे अनुभव कर ॥

५ अपने चांद जैसे सुन्दर मुखड़े पर अपने हाथ से पर्दा डाल कर चुपके एक तरफ क्यों खड़ा हो रहा है? ऐ प्यारे! ज़रा बाहर आ, क्योंकि तू आप ही ईश्वर है, ऐसा अपने आप को अनुभव कर ॥

६ तूं खुद सब की प्यारी जान है तुझ को इसलीये कोई बोली ठठोली असर नहीं करती, इस लीये प्यारे! तू आप ही अपने आप को ब्रह्म स्वरूप अनुभव कर ॥

७ और जो बोली ठठोली, मित्रता और सेवा हम देखते हैं वह भी सब तू है, इसलीय आप ही ईश्वर हो ॥

८ फांसी, सूली, ज़हर इन तमाम के असर से भी जो खतम नहीं होता वह तू है, ऐ प्यारे! ऐसा अनुभव कर ॥

९ अगर शरीर रूपी कपड़े की बग़ल (दिल के) अन्दर हम सोये तो वहां (स्वप्नावस्था) में भी ऐ प्यारे! तेरा ही प्रकाश विद्यमान देखा ॥ इसलिये ऐ साधू! अपने ही स्वरूप को अनुभव कर ॥

१० तू ही शराब के अन्दर मस्ती रूप है और तू ही हर

पुष्प की खुशबू है, इसलीये प्यारे! आप स्वरूप अनुभव कर ॥

११ राग रंग की जो मीठी सुर कलेजे (दिल) को मोह लेती है वह भी तू हैं, ऐसा अनुभव कर ॥

१२ अज्ञान रूपी कपड़ों को उतार दे और नंगा (शुद्ध सफटक) हो कर अपने यूसफ रूपी प्यारे (आत्मदेव) को घुट कर मिल (खूब अभेद हो) और द्वैत को बिलकुल नाश कर ॥ ऐ प्यारे! ऐसे ईश्वर हो ॥

१३ आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश चमक रहा है और तू प्यारे! इस से भी अधिक ऊंचे हो, और अधिक ऊंचा हो कर अपने असली स्वरूप को अनुभव कर । ऐसे तू ईश्वर साक्षात हो ॥

१४ यह तमाम दुन्या तो तेरे नाखनों का करतब है, मुफत में मुख पर हाथ रखकर मत रो (सिरफ अपने स्वरूप को याद कर) ऐसे समृण से साक्षात अपने को अनुभव कर

१५ अगर तू ईश्वर को कहीं बाहर ढूंड रहा है तो इस कोशश से मुंह को मोड़ और अपने अन्दर पीछे हट क्योंकि अपना स्वरूप अपने अन्दर अनुभव होता है ॥ ऐसे तु प्यारे ईश्वर हो ॥

१६ तूं तो खुद सब का मालक (मौला) है और नौकर

नहीं, नौकर बनने की झूठी आदत को प्यारे! छोड़ और इस तरह अपना असली स्वरूप समृण और अनुभव करके तू आप ईश्वर हो ॥

१७ वायू और इन्द्र देवता यह सब तेरा बोझ ढो रहे हैं (अर्थात सेवा कर रहे हैं) मगर तुझ को नहीं कहीं ढो सक्ते? अर्थात तुझे कहीं नहीं लेजा सकते ॥ इस लीये स्वरूपको अनुभव कर

१८ ए प्यारे! काहे को यह घुमन घेरीया (छुपन लुकन) तू खेल रहा है? इन खेलों से बाज़ आकर (मुंह मोड़ कर) शान्त हो कर बैठ, और अपने स्वरूप में स्थित हो, ऐसे आप साक्षात ईश्वर हो ॥

१९ तेरे हुक्म से तो तारे इधर उधर नाचते हैं, तू तो खुद कुटस्थ होकर बैठ (अर्थात तू तो खेल से न खेला जा) और अपने स्वरूप में स्थित हो। ऐसे तू आप साक्षात ईश्वर हो॥

२० तुझ को शायद अनन्त सुख (आनन्द) हज़म नहीं होता जिस से तू दुन्या की राख उड़ाने को तय्यार हो जाता है। ऐ प्यारे! ऐसी बदहज़मी को दूर कर और अपने निजानन्द में स्थित हो। ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

२१ तू तो खुद दुःख के दूर करनेवाला और सुख के देनेवाला है, इस लीये तुझ को भला तीन ताप दुन्या के कहां? इस

लीये अपने स्वरूप का अनुभव कर और साक्षात ईश्वर हो ॥

२२ तुझ को कोई चोर नहीं लेजा सकता और ना ही कोई भूत पशाच तुझ को डरा सकता है ना अपना असर कर सकता है ॥ तू फिर और (भिन्य) क्यों हो रहा है? अपने स्वरूप म आ, वहां स्थिति कर, और साक्षात ईश्वर हो ॥

२३ तू तो खुद साक्षी है, और कौन से भारी काम कर रहा है जिस से तू थक कर सोने लगा है ? ऐ प्यारे ! क्यों सोने लग पड़ा है ? उठ जाग अपने स्वरूप में स्थित हो और ऐसे साक्षात ईश्वर बन ॥

२४ आज़ाद होने से तुझ को कोई भूत इत्यादि तो नहीं खाते, फिर तू छुप छुप कर क़ैद क्यों हो रहा है ? उठ आजाद हो और अपने स्वरूप में आ, और साक्षात ईश्वर हो ॥

२५ एकता को तू बहु करके देखता है, तेरी दृष्टि भेंगी क्यों हो गयी है । अपनी दृष्टि को ठीक कर और अपने स्वरूप को अनुभव कर, ऐसे तब तू ईश्वर हो ॥

२६ अपने स्वरूप रूपी ताज और तखत को छोड़ कर तूं ने टुटी कुटया मल ली है इस बेवकूफी पर तू रो ॥ और खूब रो कर अपने स्वरूप रूपी तखत पर बैठ और साक्षात ईश्वर हो ॥

२७ अपने घर का निजानन्द छोड़ कर तू घास फूस क्यों चुवाने लगा है? ऐ प्यारे! किसवास्ते तोह (घास) तू चबा रहा है? अपने निजानन्द की तरफ मुंह मोड़ और स्वयं ईश्वर हो ॥

२८ तेरे अन्दर राम आप वस रहा है। हाय वहां (राम की जगह पर) अब घास कूट कूट कर मत भर, ऐ प्यारे! क्यों घर (दिल) अन्दर ईश्वर ध्यान की जगह (विषय वासना रूपी) तोह (भूसा) भर रहा है? अपने अन्दर स्वरूप का ध्यान और अनुभव कर, और ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

२९ राम और रहीम यह सब तेरे वन्दे (चाकर, सेवाकारी) हैं और तुझसे बड़ा (मालिक) और कोई नहीं है। जब तुझसे बड़ा और कोई नहीं है तो फिर तु आप बन्दा क्यों बना फिरता है? (अर्थात आप अपने को बन्दा क्यों मान रहा है) ऐ प्यारे! तू आप मालक है और अपने आप को मालक सबका अनुभव कर और ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

३० तू आप ही भागीरथ है (जो भागीरथी गंगा को स्वर्ग से नीचे लाया है) और आप ही तीरथ है, इसलीये आप हीं गंगा बन कर अपनी मैल तू धो, और ऐसे आप ईश्वर को अनुभव कर ॥

३१ ईश्वर करके तेरे सब पर्दे दूर हों, और तू सूरज की तरह नंगा हो (ताकि तेरे नंगा होने से सारी दुन्यां प्रकाशमान

हो) और ऐसे तू साक्षात ईश्वर हुवा नज़र आवे ॥

३२ (दुन्या रूपी शत्रंज के जो खेलने के मोहरे हैं इन विषय रूपी) मोहरों को छोड़, और राम की पुकार (दुहाई) को सुन ! (राम कहता है) कि इन (विषय पदार्थों) मोहरों में फंसने से कहीं अपने आप को मत मार, इन को छोड़ कर अपने स्वरूप और स्वराज में स्थिति कर, और वहां स्थित हुवा साक्षात ईश्वर हो ॥

---

(१९) साईं की नदा

यह दुन्या जाये गुज़श्तन है, साईं की है यह सदा बाबा ॥ टेक०

यहां जो है रूए रफतन है, तू इस में दिल न लगा बाबा ॥ १ ॥ यह०

ज्ञानी न रहे ध्यानी न रहे, जो जो थे लासानी न रहे।
थे आखर को फ़ानी न रहे, फ़ानी को कहां बक़ा बाबा ॥ २ ॥ यह०

थे कैसे कैसे शाह ज़िमीं, थे कैसे कैसे महल संगीन्।

१ गुज़रने (पास से चले जाने) का स्थान २ आवाज़, पुकार ३. चले जाने वाला, स्थिर न रहने वाला ४ नाश होने वाला ५ स्थिर रहना, नित्य रहना ६ पृथ्वि के राजा ७ पत्थर के महल

हैं आज कहां वह मकान-ओ-मकीं, न निशान रहा
न पता बाबा ॥ ३ ॥ यह०

न वह शूर रहे न वह वीर रहे, न वह शाह रहे न वज़ीर रहे।
न अमीर रहे न फ़क़ीर रहे, मौला का नाम रहा
बाबा ॥ ४ ॥ यह०

जो चीज़ यहां है फ़ानी है, जो शै है आनी जानी है।
दुन्या वह राम कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला
बाबा ॥ ५ ॥ यह०

माल इंमाल को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं।
जो देते हैं सो पाते हैं, है यूंहि तार लगा बाबा ॥ ६ ॥ यह०

आने जाने का यहां तार लगा, दुन्या है इक बाज़ार लगा।
दिल इस में न तूं ज़िनेहार लगा, कब निकला वह जो
फंसा बाबा ॥ ७ ॥ यह०

यां मर्द वोही कहलाते हैं, जो जाकर फिर नहीं आते हैं।

८ जगह व अस्थान ९ सूरमा, बहादर १० कर्म, पुरुषारथ
११ कदाचित्

जो आते हैं और जाते हैं, वह मर्द नहीं असला[12] बावा
॥ ८ ॥ यह०

क्यों उमर अवस[13] तू ने खोई, कुछ कर ले अब भी
खुदा जोई[14]।

मैं कहता हूं तुझ से यहां कोई, न रहा, न रहा, न रहा
बावा ॥ ९ ॥ यह०

तैह कर तैह कर विस्तर अपना, बान्ध् उठ कर रख्ते[15] सफर
अपना।

दुन्या की सराय को घर अपना, तूं ने है ग़लत समझा
बावा ॥ १० ॥ यह०

क्या घोड़े बेच[16] के सोया है, क्या वक्त रायगां[17] खोया है।
जो सोया है वह रोया है, कहते हैं मर्दे खुदा बावा
॥ ११ ॥ यह०

१२ असल, ठीक, नेक पुरुष १३ बेफायदः, नकम्मी, १४ ईश्वर का ढूंढना, ईश्वर प्राप्तिकी जिज्ञासा १५ सफर (चलने का) सर्व अस्बाब १६ अर्थात बे खबर घन शुषुप्ति में सोया है १७ बे फायदाः, फ़ज़ूल

जितना यह माल खज़ाना है, और तू ने अपना माना है।
सब छोड़ के यहां से जाना है, करता है इकट्ठा क्या
बाबा ॥ १२ ॥ यह०

क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हूं झूठी माया है।
यह चलती फिरती छाया है, क्या है .इतबार इस का
बाबा ॥ १३ ॥ यह०

दुन्या को न कहो तूं मेरी है, ग़ाफ़ल दुन्या कब तेरी है।
साईं की जैसे फेरी है, फिरता है तूं इस जा[18] बाबा
॥ १४ ॥ यह०

यह मुल्को माल, यह जाहो हशम[19], यह ख्वेशो अक़ारब[20]
जो हैं बहम।
सब जीते जी के हैं हमदम[21], फिर चलना है तन्हा[22]
बाबा० ॥ १५ ॥ यह०

१८ जगह, दुन्या १९ दरजा भरु रुतबा २० अपने संबन्धी, रिशतेदार और हमसाया २१ साथ प्राप्त हुवे २ २२ अकेले

जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसो पाँर[२३] गुज़रते हैं।
जो जीते जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा
॥ १६ ॥ यह०

२३ मुराद है, कि जो जीते जी परमेश्वर को प्राप्त हो कर जीवनमुक्त हो जाते हैं ॥

निजानन्द (खुदमस्ती)

१ राग शंकराभरण ताल धुमाली

अक़ल नक़ल नहीं चाहे हम को पागल पन दरकार
हमें इक पागल पन दरकार ॥ टेक

छोड़ पुवाड़े झगड़े सारे ग़ोता वहृदत अन्दर मार ॥
हमें इक० १

लाख उपाओ करले प्यारे, कदे न मिलसी यार ॥ हमें० २

बेख़ुद होजा देख तमाशा, आपे ख़ुद दिलदार ॥ हमें० ३

१ एकता, अद्वैत २ कभी भी ३ अहंकार रहित ४ आशक़ माशूक़ (प्यारा)

---

२ लावनी ताल धुमाली

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त कोई तूती मैना सूए में
कोई खान मस्त पैरान मस्त कोई राग रागनी दुहे में
कोई अमल मस्त कोई रमल मस्त कोई शतरंज चौपट जूए में
इक ख़ुद मस्ती विन और मस्त सब पड़े अविद्या कूए में ॥ १

कोई अकल मस्त कोई शकल मस्त कोई चंचलताई हांसी में
कोई वेद मस्त केतव मस्त कोई मक्के में कोई कांसी में
कोई ग्राम मस्त कोई धाम मस्त कोई सेवक में कोई दासी में
इक खुद मस्ती विन और मस्त सव वन्धे अविद्या फांसी में ॥२
कोई पाठ मस्त कोई ठाठ मस्त कोई भैरों में कोई काली में
कोई ग्रन्थ मस्त कोई पन्थ मस्त कोई श्वेत[1] पीत[2] रंग लाली में
कोई काम मस्त कोई खाम मस्त कोई पूर्ण में कोई खाली में
इक खुद मस्ती विन और मस्त सव वन्धे आविद्या जाली में ॥३
कोई हाट मस्त कोई घाट मस्त कोई वन पर्वत औजाड़ा[3] में
कोई जात मस्त कोई पात मस्त कोई तात भ्रात सुत दारा में
कोई कर्म मस्त कोई धर्म मस्त कोई मसजद ठाकरद्वारा में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सव वहे अविद्या धारा में ॥४
कोई साक मस्त कोई खाक मस्त कोई खासे में कोई मलमल में
कोई योग मस्त कोई भोग मस्त कोई इस्थाति में कोई
चलचल में

१ सुफेद. २ ज़र्द. ३ उजाड़, बियाबान.

कोई ऋद्धि मस्त कोई सिद्धि मस्त कोई लेन देन की कल कल में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फंसे अविद्या दल दल में ॥ ८ ॥

कोई उर्ध मस्त कोई अर्ध मस्त कोई बाहर में कोई अन्तर में
कोई देश मस्त बदेश मस्त कोई औशध में कोई मन्त्र में
कोई आप मस्त कोई ताप मस्त कोई नाटक चेटक तन्त्र में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फंसे अविद्या जन्त्र में ॥ ६

कोई पुष्ट मस्त कोई तुष्ट मस्त कोई दीर्घ में कोई छोटे में
कोई गुफा मस्त कोई सुफा मस्त कोई तूंबे में कोई लोटे में
कोई ज्ञान मस्त कोई ध्यान मस्त कोई असली में कोई खोटे में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में ॥ ७

४ नीचे. ५ ठीक अरोग्य. ६ प्रसन्नचित्त.

---

३ राग झंजोटी ताल तीन

आ दे मुक़ाम उत्ते आ मेरे प्यारया ! (टेक)

पा गल असली पागल हो जा, मस्त अलस्त सफा मेरे
प्यारया ! आ दे मुक़ाम०१

ज़ाहर सूरत दौला मौला, बातन खास खुदा मेरे
प्यारया ! आ दे मुक़ाम०२

पुस्तक पोथी सुट गंगा विच, दम दम अलख जगा मेरे
प्यारया ! आ दे०३

सैली टोपी ला दे सिर तों, रुण्ड मुंड होजा मेरे
प्यारया ! आ दे०४

इज़्ज़त फोकी फूक दुन्या दी, अक्क धतूरा खा मेरे
प्यारया ! आ दे०५

झगड़े झेड़े फैसल रिंदा, लेखा पाक चुका मेरे प्यारया !
आ दे०६

लड़का बग़ल ढण्डोरा किहाँ, ढूण्डन किते न जा मेरे
प्यारया ! आ दे०७

१ रमज़ (असली वस्तू) २ भोला भाला ३ अन्दरसे ४ फैंक
५ इज़्ज़त की (दुन्या की) पगड़ी, टोपी ६ साफ़, बे बाक़ ७ कैसा

तेरी बुक्कल विच प्यारा लेटे, खोल तनी गल ला मेरे
प्यारया ! आ दे०८

आपे भुल भुलावें आपे, आपे बने खुदा मेरे प्यारया !
आ दे०९

पर्दे फाड़ टूंई दे सारे, इक्को इक दिखा मेरे प्यारया !
आ दे०१०

८ बग़ल, गोद ९ द्वैत.

---

४ राग भैरवी ताल दादरा

गर हम ने दिल सनम को दीया, फिर किसी को क्या
इसलाम छोड़ कुफर लीया, फिर किसी को क्या
हमने तो अपना आप गिरेवां कीया है चाक
आप ही सीया सीया न सीया, फिर किसी को क्या
आंखें हमारी लाल सनम, कुच्छ नशा पीया ?

१ प्यारा २ मुसलमानी धर्म ३ अपना कपड़ा या चोगा
४ फाड़ना

आप हीं पीया पीया न पीया, फिर किसी को क्या
अपनी तो ज़िंदगानी मीयां मिसल हुबावं है
गो खिज़र लाख वरस जीया, फिर किसी को क्या
दुन्या में हमने आ के भला या बुरा कीया
जो कुच्छ कीया सो हमने कीया, फिर किसी को क्या

५ बुदबुदे की तरह, सदश बुलबुले के ६ मुसलमानों में पानी के देवता का नाम है

---

५ राग मांड ताल घुमाली.

भला हुवा हर वीसरो सिर से टरी वला।
जैसे थे वैसे भये अब कुच्छ कहा न जाय॥
मुख से जपूं न कर जपूं उर से जपूं न राम।
राम सदा हम को भजे हम पावें विश्राम॥
राम मरे तो हम मरे? हमरी मरे वला।
सत्य पुरुषों का वालकाः मरे न मारा जाय॥

१ भूल गया २ हाथ ३ दिल अथवा नाभि से ४ आराम

हद टप्पे सो औलिया[5] वेहद टप्पे सो पीर।
हद वेहद दोनों टप्पे, वा का नाम फक़ीर॥
हद हद कर दे सव गये वेहद गया न कोय।
हद वेहद मैदान में रहयो कवीरा सोय॥
मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर[6]।
पीछे पीछे हर फिरे, कहत कवीर कवीर॥

५ पैग़म्वर ६ जल

६ राग मांड ताल दादरा

१. आप में यार देख कर, आयीना[1] पुर सफा कि यूं
मारे खुशी के क्या कहें, शशदर[2] सा रह गया कि यूं
२ रोके जो इल्तमास[3] की, दिल से न भूलयो कभी
पर्दा हटा दूई मिटा, उस ने भुला दीया कि यूं
३ मैं ने कहा कि रंज-ओ-ग़म, मिटते हैं किसतरह कहो
सीना लगा के सीने से, माह ने वता दीया कि यूं

१ साफ शीशा २ अश्चर्य ३ .अर्ज़

४ गर्मी हो इस बला कि हाय, भुनते हों जिस से मर्दों ज़न
अपनी ही आब-ओ-ताब है, खुद हि हूं देखता कि यूं
५ दुन्या-ओ-आक़ेबत बना चाह वा जो जहल ने कीया
तारों सा मिहरे राम ने पल में उड़ा दीया कि यूं

४ स्त्री पुरुष ५ तेज़ और दमक (चमक) ६ लोक और परलोक ७ अविद्या ८ सूरज

पंक्तिवार अर्थ.

१ जैसे साफ शीशे में वस्तू पूरी तरह नज़र आती है इस तरह अपने (दिल) अन्दर यार (स्वरूप) को देख कर ऐसा हैरान (अश्चर्य) हो गया कि खुशी के मारे (मुंह से) कुच्छ न बोला गया (बोल सका)

२ जब मैं ने उस स्वरूप (यार) से रो कर अर्ज़ करी "कि मुझे कभी न भूलना" तो उस ने द्वैत का पर्दा बीच से हटा दीया और मेरे से अभेद होकर अर्थात मेरा ही स्वरूप बन कर उस ने मेरे को झट भुला दिया (क्यों कि यादगीरी तो द्वैत में होती है)

३ मैं ने उस यार से कहा कि रंज और ग़म कैसे मिटते हैं, तो उस ने छाती से छाती मिलाकर (अर्थात अभेद होकर) कहा कि ऐसे दूर होते हैं, और तरह नहीं

४ इस ग़ज़ब की गर्मी हो कि दाने की तरह पुरुष और स्त्री भुन रहे हों, मगर मैं ऐसा देखता हूं कि मेरी हि यह चमक दमक (तेज़) है और मैं खुद हूं

५ लोक और परलोक जो कुच्छ अविद्या (अज्ञान) ने बनाया था, मेरे राम ने उस को ऐसे उड़ा दीया जैसे सूरज तारों को उड़ा देता है

७ ग़ज़ल ताल दादरा.

हस्ती-ओ-.इल्म हूं मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा
किबरयाई-ओ-खुदाई, है फ़कत काम मेरा
चशमे लैला हूं, दिले कैस,-व-दस्ते फ़रहाद

१ सत् चिदानन्द मैं हूं २ बु.जुर्गी, इक़्बालमन्दी ३ सिर्फ़ ४ लैली की आंख ५ मजनू का दिल (लैली मजनू दो .आशक़ माशूक़ पंजाब देश में हुवे हैं) ६ (शीरीं का .आशक़) फ़र्हाद का हाथ (जिस ने पहाड़ को फोड़ डाला)

बोसाँ[7] देना हो तो दे ले, है लबे[8] जाम मेरा
गोशे[9] गुल हुं रुखे[10] यूसफ, दमे[11] ईसो सरे[12] सरमद
तेरे [13]सीने में वसूं हूं, है वोही धाम[13] मेरा
हलके[14] मंसूर तने[15] शम्स,-व-.इल्मे[16] .उलमा[17]
वाह वा बैहर[18] हूं और, बुदबुदों[19] इक राम मेरा

७ चूमना हो तो चूम ले ८ मेरा मूंह रूपी प्याला तेरे नजदीक है ९ फूल का कान १० यूसुफ का चेहरा ११ .इसा का दम १२ सरमदका सिर १३ दिल १३ घर १४ मंसूर (ब्रह्म ज्ञानी) का कंठ (हलक) १६ शमस तब्रेज का तन (बदन) १७ विद्वानों की विद्या १८ समुद्र १९ बुलबुला

---

८ राग ज़िला ताल दादरा

क्या पेशवाई[1] बाजा अनाहद[2] शब्द है आज।
वैलकम[3] को कैसी रौशनी, समदान्यौं[4] है आज ॥१॥
चक्कर से इस जहान के फिरे असल घर को हम।

१ आगे चल कर लेने वाल २ अनहद ध्वनी, ॐ (प्रणव) ३ मुबारकबादी ४ उत्तम, शुद्ध

फ़ुट वाल सब ज़मीन् है, पाँ पर फ़िदा है आज ॥२॥
चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़ हूं मिहर सां।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ॥३॥
शहज़ादे का जॅलूस है, अब्र तख्ते ज़ात पर।
हर ज़र्रह सदका: जाता है, नग़मा सरा है आज ॥४॥
हर वर्गों मिहरो माह का रक्सो सरोद है।
आराम अमन चैन का तूफ़ां बपा है आज ॥५॥
किस शोखेचश्मे की है यह आमद कि नूरे वर्क़।
दीदों को फाड़ फाड़ के राह देखता है आज ॥६॥
आला करम नशां शाहे अंबर दस्त है।

५ पाद, पाँ ६ केन्द्र ७ सूरज की तरह ८ राज तिलक ९ स्वराज्य रूपी गद्दी १० परमाणुं ११ वारे जाना, क़ुर्बान ज़ाना १२ आवाज़ दे रहा है गीत गा रहा है १३ हर पत्ते, सूरज और चान्द १४ नाच, राग १५ तेज़ नगह वाला दोस्त (आत्मा) १६ आना १७ बिजली की चमक वाला १८ आंखों को १९ कृपालु २० वह बादशाह जिस के हाथ में बादल हो, अर्थात (सूरज)

वारश की राह पानी छिड़कता खुदा है आज ॥७॥
झुक झुक सलाम करता है अब चांद .ईद है।
ईकेवाले[21] राम रांम[22] का खुद हो रहा है आज ॥८॥

२१ राम के हुक्म का मानना २२ कवि का नाम

भावार्थः—

१ आगे को जाकर लेने वाला प्रणव का बाजा क्या उत्तम बज रहा है और रौशनी सुवागत के वास्ते क्या उत्तम जगमगा रही है

२ इस दुन्या के चक्कर से निकल कर हम जब अपने असली धाम (निज स्वरूप) की तरफ मुड़े तो पृथ्वि हमारी खेल (फुट बौल) हो कर चरणों पर वारे जाने लगी

३ संसार तो चक्कर में है, मैं उस चक्कर का केन्द्र सूरज की तरह हूं। लोग धोके से कहते हैं कि आज सूरज चढ़ा है (क्यों कि सूरज तो नित्य स्थित रहता है)

४ अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का आज शुभ समा हो रहा है। इस वास्ते एक २ ज़रह (परमाणु) .कुर्बान जा रहा है,

और गा रहा है (जब स्वरूपमें निष्ठा हो तो सब उस पर .कुर्बान हो जाते हैं)

५ (इस अनुभव पर) हर पता सूरज और चान्द नाच रहा है, आनन्द शान्ति का समुद्र आज बेह रहा है)

६ किस प्यारे के आने की यह खबर है, कि जिस के आने का बिजली सादृश्य प्रकाश (तेज) आंखो को फाड़ फाड़ कर देख रहा है

७ कृपा करने वाला (आनन्द देने वाला) यार (ज्ञान रूपी सूरज) आनन्द के बादल को हाथ में लीये आरहा है और वर्षा की जगह रास्ते में आनन्द का जल छिड़क रहा है अर्थात अनुभव हो रहा है और आनन्द की वर्षा खूब हो रही है

८ ,ईद का जो चान्द निकला है अर्थात अनुभव जो हुवा है (उस ज्ञानी के वास्ते) वह मानो उसको नमस्कार झुक झुक कर कर रहा है। राम का इक़्बाल अर्थात राम के हुक्म का मान स्वयं हो रहा है

९ राग झिला ताल दादरा

बाज़ीचा-ए-इतफ़ाल[1] है दुन्या मेरे आगे
होता है शब-ओ-रोज़[2] तमाशा मेरे आगे
इक खेल है औरंगे सुलेमान[3] मेरे नज़दीक
इक बात है ,इजाज़[4] मसीहा[5] मेरे आगे
जुज़[6] नाम नहीं सूरते आलम[7] मेरे नज़दीक
जुज़ वैहम नहीं हस्ती-ए-अशया[8] मेरे आगे
होता है निहां[9] ख़ाक में सहरा[10] मेरे होते
घिसता है जबीं[11] ख़ाक पै[12] दरया मेरे आगे

१ बच्चों का खेल २ रात और दिन ३ सुलेमान बादशाह का शाही तख्त ४ करामात, मोजज़ा ५ नाम है ईसामसीह का ६ स्वाये ७ जहान की शकल ८ वस्तु, पदार्थ की मौजूदगी, अथवा उस का दृश्य मात्र ९ छिपजाना १० जंगल ११ माथा (मस्तक) १२ पर

१० राग आनन्द भैरवी ताल धुमाली

दुन्या की छत पर चढ़ ललकार (टेक)

बादशाह दुन्या के हैं मोहरे मेरी शतरंज के
दिललगी की चाल हैं सब रंग, सुलाह-ओ-जंग के
रक्से शादी से मेरे जब कांप उठती है ज़मीन्
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता हूं वहीं
खुश खड़ा दुन्या की छत पर हूं तमाशा देखता
गैह बगह देता लगा हूं, वैहशियों की सी सदा
ऐ मुंकाली रेल गाड़ी! उड़ गयी। ऐ सिर जली!
ऐ खरे दज्जाल! नखराः बाज़ीयो में जूं परी

१ खुशी के नाच से २ खिल कर हंसना ३ कभी कभी ४ वेहशी पशूवों की तरह आवाज़ ५ काले मुखवाली ६ जले हुवे सिखाली अर्थात सिर से धुंवां निकालने वाली ७ एक गधा को कहते हैं जो हज़रत ईसा के दुशमन के तले रहता था और जिस का पेठ अज़हद लम्बा था और बाक़ी अंग बहुत छोटे, सो उस गधे से रेल को दर्शाया है ८ मानन्द परी की तरह.

भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में
ले डेंकारें[९] लोटती है रेत में या खेत में
छोड़ धोका वाज़ीयां और साफ कहो सच मुच वता
मंज़ले मक़सूद[१०] तक कोई हुवा तुझ से रसा[११] ?
पेट में तेरे पड़ा जो वह गया ! लो वह गया !
लैक[१२] हाये मंज़ले मक़सूद पीछे रह गया
ऐ जवान् वावू ! यह गर्मी क्यों ? ज़रा थमकर चलो
वैग ले कर हाथ में सरपट न यूं जलदी करो
दौड़ते क्या हो आये नूर के मिलने को तुम ?
वह न वाहर है ज़रा पीछे हटो वातन[१३] को तुम
क्यों हो मुजरम ! ऐहलकारों की खुशामद में पड़े ?
यह कचैहरी वह नहीं तुम को रिहाई दे सके
पैहन कर पोशाक गैहने बुर्का ओढ़े नाज़ से

९ यहां मुराद है सीटी से अथवा चीख़ से १० आखरी मुक़ाम असली घर तक ११ पहुंचा १२ किन्तु लेकिन १३ अन्दर.

चोरी चोरी गुलवदन[14] मिलने चली है यार से
ऐ महब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीवी खूबरू[15] !
चौंक मत घबरा नहीं सुन कर मेरी ललकार[16] को
निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़ कर दौड़ में
दिल हरम[17] है यार का, साकिन[18] हो गिर न दौड़ में
हो खड़ी जा ! बुर्क़ाः जामाः और बदन तक दे उतार
बे हया हो एक दम में, ले अभी मिलता है यार
दौड़ कासिद[19] ! पर लगा कर, उड़ मेरी जां ! पेच खा कर
हर दिलो हर जां में जाकर, बैठ जम कर घर बना कर
"मैं खुदा हूं", "मैं खुदा हूं" राज़[20] जाँ में फूंक दे
हर रगो रेशे में घुस कर मस्ती-[21]ओ-मुल झोंक दे
गैरबीनी[22] ! गैरदानी[23] और गुलामी बंदगी (को)

१४ पुष्प के बदन वाली, अति नाज़ुक, यहां वृत्ति से मुराद हैं १५ अति सुन्दर १६ आवाज़, ध्वनी १७ मन्दर १८ ठैहर स्थित १९ संदेसा लेजाने वाला २० भेद गुह्य २१ मस्ती (निजानन्द) और शराब (ज्ञानामृत) २२ द्वैत दृष्टि २३ द्वैतभावना

मार गोले दे धड़ा धड़ एक ही एक कूक दे
रौशनी पर कर स्वारी-आंख से कर नूर बौंरी[24]
हर दिलो दीदा:[25] में जा झंडा[26] अलफ का ठोंक दे

२४ आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा आंख से २५ हर दिल और आंख २६ यहां मुराद अद्वैत के झंडा से है और रसाला अलफ जो स्वामी जी ने निकाला था उस से भी है क्योंकि वह रसाला भी अद्वैत प्रतिपादन करता है इस वास्ते उस की जगह अलफ लिख दीया है.

---

११ राग ज़िला ताल दादरा

गुल[1] को शमीम[2], आब[3] गोहर[4] और ज़र[5] को मैं
देता बहादरी हूं, बला शेरे नर[6] को मैं
शाहों को रौब[7] और हसीनों[8] को हुसन[9]-ओ-नाज़[10]
दता हूं जबकि देखूं उठा कर नज़र को मैं

१ फूल २ खशबू, सुगन्धि ३ चमक दमक, रौनक ४ मोती ५ सोना, स्वर्ण ६ पुरुष पुलिंग शेर, ७ डर, दबदबा ८ सुन्दर ९ सौन्दर्य, खुबसूरती १० नज़ाकत या नखरा.

सूरज को सोना चांद को चान्दी तो दे चुके
फिर भी त्वायफ करते हैं देखूं जिद्धर को मैं
अंब्रूए केहकशां भी अनोखी कमन्द है
वे कैद हो असीर जो देखूं इद्धर को मैं
तारे झमक झमक के बुलाते हैं राम को
आंखों में उन की रहता हूं जाऊं किद्धर को मैं

११ मुजरा, नाच १२ आंखों की भवें १३ आकाश में एक लम्बी सफेदी जो रात के समय नज़र आती है जिस को (Milky Path) दुग्धीया रास्ता कहते है. १४ अजीब १५ कैद.

---

१२ राग भैरवी ताल चलन्त

यह डर से मिहर आ चमका अहाहाहा, अहाहाहा
उधर मह वीम से लपका, अहाहाहा, अहाहाहा
हवा अटखेलीयां करती है मेरे इक इशारे से

१ सूरज २ चांद ३ चोहल पोहल करना.

है कोड़ाः मौत पर मेरा, अहाहाहा अहाहाहा
अकाई ज़ात में मेरी असंखों रंग हैं पैदा
मज़े करता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
कहूं क्या हाल इस दिल का कि शादी मौज मारे है
है इक उमडा हुवा दरया, अहाहाहा अहाहाहा
यह जिस्मे राम, ऐ बंदगो! तसव्वर मैहज़ है तेरा
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा अहाहाहा॥

४ चाबुक ५ एक अद्वितीय ६ अपना असली स्वरूप ८ खुशी, आनन्द ८ लैहरें मारना ९ राम का शरीर १० बुरा बोलने वाले या ताना मारने वाले! ११ वैहम (ख्याल) १२ सिर्फ़ १३ अश्चर्य और हर्ष के समय ऐसा बोला जाता है.

---

१३ ग़ज़ल ताल पशतो

पीता हूं नूर हर दम, जामे सरूर पै हम } टेक
है आस्मान प्याला, वह शरावे नूर वाला }

१ प्रकाश २ आनन्द का प्याला ३ प्रकाश रूपी शराब वाला ज्ञानामृत

है जी में अपने आता दूं जो है जिस को भाता
हाथी ग़ुलाम घोड़े जेवर ज़मीन् जोड़े
ले जो है जिस को भाता मांगे बग़ैर दाता॥ पीता हूं० १
हर क़ौम की दुआयें हर मत की ईल्तजायें
आती हैं पास मेरे क्या देर क्या स्वेरे
जैसे अड़ाती गायें जंगल से घर को आयें॥ पीता हूं० २
सब ख्वाहशें नमाज़ें गुण कर्म और मुरादें
हाथों में हूं फिराता दुन्या हूं यूं बनाता
मेमार जैसे ईंटे, हाथों में है घुमाता ॥ पीता हूं० ३
दुन्या के सब बखेड़े झगड़े फसाद झेड़े
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को बदल सकते
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मसाल हैं यह ॥ पीता हूं० ४
नेचर के लॉज़ सारे अहकाम हैं हमारे

४ दिल ५ प्रार्थनायें ६ दरखास्तें ७ मकान बनाने वाला ८ आंखों में सुर्मे की तरह ९ प्रकृति (कुदरत) १० कानून, नीयम् ११ हुकम, खिदमतगार (इन्तज़ाम करने वाला)

क्या मिहर[12] क्या सतारे हैं मानते इशारे
हैं दस्तो[13] पा हर इक के मर्ज़ी पे मेरी चलते ॥ पीता हूं० ५.
कशशे सिक्ल[14] की कुद्रत मेरी है मिहरो[15] उलफत
है निगह तेज़ मेरी, इक नूर की अन्धेरी
बिजली शफ़क़[16] अङ्गारे, [17]सीने के हैं शरारे ॥ पीता हूं० ६.
मैं खेलता हूं होली दुन्या से गेन्द गोली
ख्वाह इस तरफ को फैंकूं ख्वाह उस तरफ चला दूं
पीता हूं जाम[18] हर दम, नाचूं मुदाम[19] धम धम
दिन रात है तरन्नम, हूं शाहे राम बेगम ॥ पीता हूं० ७

१२ सूरज १३ हाथ अरु पाओं १४ (खैंचने की) ताक़त का नाम Law of gravitation) १५ मिहरबानी और प्यार १६ दोनों समय मिलने के वक़्त जो आकाश में लाली होती है १७ दिल १८ प्रेम प्याला १९ नित्य, हमेशा २० आनन्द से आंसूवों का धीमे धीमे टपकना (या) बरसना २१ बेग़म राम बादशाह हू.

१४ ग़ज़न ताल क़व्वाली

(१) हबाबे[1] जिस्म[2] लाखों मर मिटे, पैदा हुवे मुझ में
सदा हूं बेहर[3] बेहद[4] लैहर है धोखा फ़रावां[5] का

(२) मेरा सीना[6] है मशरक़ आफ़तावे[7] ज़ाते तावां का
तलू-ए-सुबह-ए-शादी[8], वाशुदन[9] है मेरे मज़गां[10] का

(३) .ज़ुबां अपनी बेहारे[11] .ईद का मुज़दह[12] सुनाती है
दुरों[13] के जगमगाने से हुवा आलम[14] चरागां का

(४) सरापा नूर[15] पेशानी पै मेरी मेह[16] दरख़शां[17] है

१ बुलबुला २. शरीर ३ समुद्र ४ एकता का ५ कसरत, .ज्यादा, नानत्व का धोखा है ६ दिल ७ प्रकाशस्वरूप आत्मा (सूरज) का घर (पूरब तरफ़) है ८ आनन्द की सुबह (प्रातः काल) का निकलना ९ खुलना १० पलकें आंखो की ११ .ईदकी वहार १२ खुशखवरी १३ मोती (इस जगह शब्दों से मुराद है) १४ (ज्ञान रूपी) दीपकों का लोक १५ चमकीली माथा, वरफों से मुराद है १६ चांद (शिव) १७ चमकता

कि झूमर[18] है जेवीं सीमी[19] पै गिर्जाये[20] जिमिस्तां का

(५) .खुशी से जान जामे[21] में नहीं फूली समाती अब

गुलों[22] के बार[23] से टूटा, यह लो दामान[24] बियावां का

(६) चमन में दौर[25] है जारी, तरब[26] का चैहच हाने का

चहकने में हुवा तबदील शेवन[27] मुर्गे नालां[28] का

(७) निगाहे मस्त[29] ने जब राम की आमद[30] की सुन पाई

है मजमा[31] सैद[32] होने को यहां वेहशी गज़ालां[33] का

१८ झूमर माथे पर लटकने वाला ज़ेवर (गहना) १९ चांदी की पेशानी (बर्फ़) पर २० पार्वती (उमा) २१ अपने अन्दर के खाने रूपी पहलेमें २२ फूल २३ बोझ २४ पल्ला जंगल का (मराद यह है, कि राम अभी नीचे आया) २५ समय, काल २६ खुशी २७ शान, हालत २८ रोते हुवे पक्षीयोंका २९ मस्त पुरुषकी नज़र ३० आने की ३१ ओह, हजूम ३२ शकार होने को ३३ जंगली मृगों का

अर्थ पंकती वार

१. बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और मुझे में पैदा

हो गये, मगर सर्वदा मैं अद्वैत-रूपी समुद्र रहता हूं जिसमे ना-नत्वरूपी लैहरें धोखा सिर्फ हैं

२. मेरा जो दिल है वह पूर्व है जहां से (प्रकाशस्वरूप) सूरज प्रगट होता है और आनन्द की प्रातःकाल मेरी पलकों के खुलने से निकल आती है ॥

३. मेरी जो .ज़ुवान् है वह आनन्द की बहार की खुशखबरी सुनाती है (शब्दरूपी) मोतयों के (मुंह से निकलकर) जगम-गाने से दीपमाला का समय बन्ध गया ॥

४. मेरी चमकीली पेशानी के (बरफों के) उपर चांद ऐसे चमक रहा है मानो कि पार्वती के रौशन (मुनव्वर) माथे पर झूमर (ज़ेवर) लटक रहा है ॥

५. आनन्द इतना बढ़ गया कि जान अब तनके अन्दर नहीं समाती (अर्थात इतना आनन्द बढ़ गया कि राम को पहाड़ों में रहना मुशकल हो गया) फूलों के बोझ से वह जंगल का पल्ला टुट गया (अर्थात् आनन्द के बढ़ने से वह राम पहाड़ों से नीचे मैदान में उतर आया).

६. बाग़ में खुशी के चैहचहाने का समय जारी है और इस

आनन्द के बढ़ने से रोते हुवे मुर्गों (पक्षियों) का शोर चैहचहाने में बदल गया.

७ ब्रह्म ज्ञानी की नज़र ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की इन्तज़ार लोग ऐसे करने लग पड़े मानो कि जंगली मृगों का हजूम (ओह) देखने का आशक़ हो रहा है (अर्थात् जैसे मृग जल की उन्तज़ार में टिकटिकी बान्धे रहते हैं ऐसे सर्व लोग रामकी इन्तज़ार में लगे हैं).

---

१५ ग़ज़ल

मुझ बैहरे[१] खुशी की लैहरों पर दुन्या की किशती रहती है
अज़ सैले[२] सरूर धड़कती है छाती और किशती बैहती है
गुल[३] खिलते हैं। गाते हैं रो रो बुलबुल। क्या हंसते हैं
नाले[४] नद्यां
रंगे शफक़[५] घुलता है। बादे सबा[६] चलती है। गिरता है

१ खुशी का समुद्र २ आनन्द के तेज़ .तूफान (बहाओ) से ३ फूल ४ धारा चश्में ५ प्रातःकाल और सायंकाल जो आकाश में लाली बादलों में होती है ६ पर्वा वायू

छम छम वाँरां, मुझ में ! मुझ में !! मुझ !!! ॥ (टेक)
करते हैं अंजम जगमग । जलता है सूरज धक धक ।
सजते हैं बागो वियावां
बसते हैं नंदन पैरस । पुजते हैं कांशी मक्का । बनते हैं
जिन्नतो रुंजवां, मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!!
उड़ती हैं रेलें फर फर ! बैहती हैं [11]बोटें झर झर ! आती
है आन्धी सर सर
लड़ती हैं फौजें मर मर ! फिरते हैं जोगी दर दर । होती
है पूजा हर हर, मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!!
[12]चर्ख का रंग रसीला । नीला नीला । हर तरफ दमकता है
कैलास झलकता है । [13]बैहर डलकता है । चांद चमकता
है, मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!!
आज़ादी है आज़ादी है आज़ादी मेरे हां । [14]गुंजायशो

७ वर्षा ८ तारे ९ बाग़ और जंगल १० स्वर्ग और नर्क ११ बेड़ी कशती १२ आकाश १३ समुद्र १४ स्थान की गुंजाय्श (फुरती)

जा सब के लीये वेहदो पाँयां[15]

सब वेद और दर्शन, सब मज़हब। .क़ुरआन-अंजील और त्रैपटका[16]

बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद। था रहना सैहना इन सब का, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!

थे कपल कनाद और अफलातूं। असपैंसर कैंट[17] और हैमिलटन

श्री राम युद्धिष्टर असकन्दर। विक्रम क़ैसर अलज़बथ अकबर, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!

मैदाने अबद[18] और रोज़े[19] अज़ल। कुल मांज़ी[20] हाल और मुस्तक़बिल[21]

चीज़ों का बेहद रद्दो बदल। और तख़्ता-ए-दैहर[22] का

१५ बेशुमार १६ बुद्ध मत की पुस्तक १७ यूरप के फलस्फरों के यह नाम है १८ अनन्त मैदान अर्थात् लाइन्तहाई १९ प्रलय कालका दिन २० वर्तमान भविषद् २१ बदलते रहना २२ समय का पलड़ा

है हल चल, मुझ में ! मुझ में ! ! मुझ में ! ! ! मुझ में ।
हूं रिश्ता[23]-ए-वहदत दर कसरत । हैं इल्लतो[24] सिहत[25] और राहत[26]
हर विद्या, इल्म हुनर हिकमत । हर खूबी, दौलत और बरकत
हर निमत, इज्ज़त और लज़्ज़त । हर कशिश का मर्कज़[27], हर ताकत
हर मतलब-कारण कारज सब । क्यों किस जाँ, कैसे-क्योंकर कब, मुझ में ! मुझ में ! ! मुझ में ! ! ! मुझ में !
हूं आगे पीछे ऊपर नीचे ज़ाहर बातन में ही मैं ।
मांशूक[30] और आशक[31] शाइर[32] मज़मून बुलबुल गुलशन[33] में ही मैं ॥

२३ एकता का धागा २४ कारण २५ तंदुरस्ती २६ आराम २७ केन्द्र २८ स्थान २९ अन्दर ३० प्यारा (आत्मा) ३१ भक्त ३२ कवि ३३ बाग़.

१६ ग़ज़ल ताल पशतो

ठंडक भरी है दिलमें, आनन्द बेह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम! झिम!! झिम!!! (टेक)
फैली सुबहे शादी, क्या चैन की घड़ी है
सुख के छुटे फव्वारे, फ़रहत चटक रही है
क्या नूर की झड़ी है, झिम! झिम!! झिम!!!
शबनम के दल ने चाहा, पामाल कर दे गुल को
सब फ़िकर मिल कर आये, कि नढ़ाल करदें दिलको
आया सबा का झोंका, वह सबाये रौशनी का
झड़ती है शबनमे ग़म, झिम! झिम!! झिम!!!
डट कर खड़ा हूं खौफ से खाली जहान में
तसकीने दिल भरी है मेरे दिल में जान में

१ आनन्द की प्रातः काल २ खुशी, आनन्द ३ ओस ४ ओह ५ नीचे दबाना, पाओंमें रौंदना ६ फूल ७ पर्वा हवा अर्थात् वह हवा जो पूरब से चल रही हो ८ प्रकाश रूपी वायु, यहां मुराद सूरज से है ९ दिल में चैन, आराम

सूंघें ज़मां मकां मेरे पाओं मिसले सग
मैं कैसे आसकूं हूं कैदे त्रियान में
ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बेह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम! झिम!! झिम!!!

० काल-देश ११ कुत्ते की तरह.

---

१७ राग भैरवी ताल चलन्त

कहूं क्या रंग उस गुल[1] का, अहाहाहा अहाहाहा
हूवा रंगीं[2] चमन[3] सारा, अहाहाहा अहाहाहा
नमक छिड़के है वह किस २, मज़े से दिलके ज़खमों पर
मजे लेता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
खुदा जाने हलावत[4] क्या थी, आबे तेग़[5] कातल में
लबे[6] हर ज़खम है गोया, अहाहाहा अहाहाहा

१ फूल (सुन्दर दोस्त, आत्मस्वरूप) २ रंगदार (नाना प्रकार का) ३ बाग ४ मिठास (मीठा ज़ायका) सुवाद ५ क़ातल की तलवार की धार ६ हर ज़खम के समीप

शरारो[७] वर्क़[७] में क्या फ़र्क़, मैं समझूं कि दोनों में
है इक शोला[८] भवोका सा, अहाहाहा अहाहाहा
वेला[९] गर्दान हूं सांकी[१०] का, कि जामे इशक़[११] से मुझको
दीया घूंट उस ने इक ऐसा, अहाहाहा अहाहाहा
मेरी सूरत[१२] परस्ती, हक़[१३] परस्ती है, कहूं मैं क्या
कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
ज़फ़र[१४] आलम[१५] कहूं? कहूं मैं क्या, तवीयत की रवानी[१६] का
कि है उमडा हूवा दरया, अहाहाहा अहाहाहा

७ अंगारा और बिजली ८ भड़की हुई लाट ९ एहसान मन्द १० शराव (प्रेम रस) पिलाने वाला, यहां आत्मवित् से मुराद है ११ इशक़ (प्रेम) का पियाला १२ मूरती पूजा (बुत परस्ती) १३ ईश्वर पूजा १४ कवी का लक़वहे १५ हाल (अवस्था) १६ रफ़तार (चाल)

---

१८ ग़ज़ल ताल क़वाली

(१) जब उमडा दरया उलफ़त का, हर चार तरफ़ आवादी है

हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारक
वादी है
खुश खंदा है रंगी गुल का, खुश शादी शाद
मुरादी है
वन सूरज आप दरखशां है, खुद जंगल है, खुद
वादी है
नित राहत है, नित फरहत है, नित रंग नये आ-
ज़ादी है १

(२) हर रग रेशे में हर मूँ में अमृत भर भर भरपूर हुवा
सब कुलफत दूरी दूर हूई, मन शादी मर्ग से चूर हुवा
हर बर्ग वधाइयां देता है, हर ज़र्रह ज़र्रह तूर हूवा

१ हंसा खिला हुवा २ प्रकाशमान ३ आबाद स्थान ४ सिर का बाल ५ बे आरामी, दुःख ६ आनन्द के अनन्त बढ़ने से जो मृत्यु होती है ७ पत्ता वृक्ष का ८ स्वस्ति ९ प्रमाणु १० अग्नि का पर्वत

जो है सो है अपना मज़हर[11], ख्वाह आबी[12] नारी[13]
बादी है

क्या ठंडक है, क्या राहत[15] है, क्या शादी[16] है आ-
ज़ादी है २

(३) रिम झिम, रिम झिम आंसू बरसें, यह अबर[17] बहारें
देता है

क्या खूब मजे कीं बारश में वह लुतफ वसल का
लेता है

कशती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेतां है

यह ग़र्क़ाबी[19] है [20]जी उठना, मत झिजको, उफ बर-
बादी है

क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आ-
ज़ादी है ३

·११ जायेज़हूर, ज़ाहर होनेका स्थान १२. पानी से पैदा हुवा २ १३ अग्नि से उतपन्न हुवा २ १४ हवा से उतपन्न हुवा २ १५-आराम १६ खुशी १७ बादल १८ चलाना १९ डूब जाना २० ज़िन्दा होना

(४) मातम[21] रंजूरी[22] बीमारी ग़लती कमज़ोरी नादारी[23]
ठोकर ऊंचा नीचा, मिहनत जाती (है) उन पर जाँ वारी
इन सब की मददों के बायस, चशमाः मस्ती का है जारी
गुम शीरं[24], कि शीरीं तूफां में, कोह[25] और तेशाः फरहादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ४

(५) इस मरने में क्या लज्ज़त है, जिस मुंह को चाट[26] लगे इस की
थूके है शाहंशाही पर, सब नेऽमत दौलत हो फीकी

२१ रोना पीटना २२ ग़म २३ ग़रीबी, जिस समय पास कुछ न हो २४ मीठी नदी जो फरहाद अपनी माशूकाः (शीरीं) के इश्क़ में पहाड़ पर से तोड़ कर मैदानों में लाया था २५ पर्वत २६ चटक, स्वाद, लज्ज़त.

मै[27] चाहे? दिल सिर दे फूंको, और आग जलावो
भट्टी की
क्या ससता वाँदा[28] विकता है, "ले लो" का शोर
मुनादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आ-
ज़ादी है ८

(६) इल्लतें[29] मा़लूल[30] में मत डूबो, सब कारण कार्य्य तुम
ही हो
तुम ही दफतर से खारज हो, और लेते चारज
तुम ही हो
तुम ही मसरूफ बने बैठे, और होते हौरज[31] तुम ही हो
तू दाँवर[32] है, तू वुकला[33] है, तू पापी तू फर्यादी है
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नयी आ-
ज़ादी है ६

२७ शराब २८ आनन्द रूपी शराब २९ कारण ३० कार्य्य ३१ किसी काम में हरज करने वाले ३२ मुंसफ, जज ३३ वकील

(७) दिन शैब[34] का झगड़ा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है
जब खुलती दीदाये[35] रौशन है, हंगामये ख्वाब[36] कहां फिर है
आनन्द सरूर[37] समुद्र है जिस का आग़ाज़[38], न आ- खर है
सब राम पसारा दुन्या का, जादूगर की उस्तादी है
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नये आ- जादी है ७

३४ रात ३५ ज्ञान चक्षू ३६ स्वप्न की दुन्या, स्वप्न का झगड़ा फसाद ३७ आनन्द, खुशी ३८ आदि, शुरू

पंक्ति वार अर्थ.

१ जब प्रेम का समुद्र वैहने लग पड़ा तो हर तरफ प्रेम की बस्ती नज़र आने लग पड़ी अब सुन्दर पुष्प की तरह हसना और खिलना रहता है, नित दिन रात खुशी औ आनन्द है, आप ही,

सूरज बन कर चमक रहा है और आप ही जंगल बस्ती बन रहा है, नित्य आनन्द शान्ति और नित्य सर्व प्रकार की खुशी आज़ादी हो रही है ॥ १

२ हर रग और नाड़ी में और रोम रोम में अमृत भरा हुवा है, सब दुःख और घृण (नफरत) दूर हो गयी और मन (अहंकार के) मरने (मौत) की खुशी से चूर हो गया है, हर पत्ता बधाइयां (स्वस्ति) दे रहा है, और प्रमाणु मात्र भी ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हुवा। अब जो है सो सब अपने को ही बताने या ज़ाहर करने का स्थान है ॥ ख्वाह वह पानी की शकल है ख्वाह अग्नि की और ख्वाह हवा की सूरत है (यह तमाम मुझ अपने को ही ज़ाहर करने वाले हैं) ॥ २

३ आनन्द की वर्षा के आंसू रिम झिम बरस रहे हैं, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है, इस ज़ोर की वर्षा में वह (चित्त) क्या खूब अनुभव (वसल) का लुत्फ़ ले रहा है, [शरीर रूपी] किशती तो आनन्दकी लैहरों में डूबने लग रही है मगर वह सच्चा [आनन्द में] बदमस्त उसे कब चलाता है? (शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि [शरीरका] यह डूबना असल में जी उठना है, इस वास्ते ऐ प्यारों! इस मौत

से मत झिझको [झिझकनेमें अपनी बरबादी है] इस में तो क्या ठंडक है क्या आराम है और क्या ही आनन्द और क्या ही आ-ज़ादी है [कुछ वर्णन नहीं हो सक्ता] ॥३॥

४ मातम ग़म, बीमारी, ग़लती कमज़ोरी तंगी, नीची उंची ठोकर अरु पुरुषारथ, इन सब पर जान .कुर्बान् हो रही है और इन सब की मदद से इस मस्ती का समुद्र बैह रहा है शीरीनी के .इशक़ में फ़र्हाद का तेशा और पहाड़ अरु शीरीं गुम हो रहे हैं क्या शान्ति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्याही आज़ादी हो रहे हैं ४

५. इस मरने में क्या ही .उमदा लज़्ज़त है, जिस मुंहको इस लज़्ज़त की चाट (स्वाद) लग गयी वह शाहंशाही पर थूकता है और सर्व धन इक़बात फीका हो जाता है ॥ अगर यह (आनन्द की) शराब चाहो, तो दिल और सिर को फूंक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्टी जलावो । वाह! क्या सस्ती शराब (आनन्द की अपने सिर के .इवज़) बिक रही है, और (कबीर की तरह) " ले लो " " ले लो " का शोर हो रहा है ॥ इस शराब से क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आज़ादी है ५

६. हेतु (कारण) और फल (कार्य्य) में मत डूबो, क्योंकि

सब कारण कार्य्य तुम ही हो, और जो दफतर से खारज होता है अथवा जो नौकर होता है वह सब तुम आप हो ॥ अगर कोइ किसी काम में मसरूफ है, तो तुम हो, और अगर कोइ हर्ज करने वाला है तौ तुम हो ॥ तू ही मुनसफ है, तू ही वकील है और तू ही पापी औ फरयादी है ॥ नित्य चैन है नित्य शान्ती है और नित्य राग रंग और आज़ादी है ६

७. सूरज गो आप सफेद है, मगर दिन रात का झगड़ा उस में नहीं, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वि के घुमने पर मौकूफ है ऐसे जब आंख खुलती है तो स्वप्न फिर बाक़ी नहीं रहता, मगर खुद आप आनन्द और हर्षका वेहद (अनन्त) समुद्र है, यह जो दुन्या है सब राम का पसारा है और उस जादूगर की यह उस्तादी है ॥ स्वयं तो नित्य चैन है, शान्ति है और नित्य राग रंग और नयी आज़ादी है ७

यमनोत्री

गजल तिताल

इस बलन्दी पर माया की दाल नहीं गलती ॥ ना दुन्या की दाल ही गलती है ॥ निहायत गर्म २ चशमा सार, .कुद्रती ज्वाला ज़ार, आबशारों की बहार, चमकदार चान्दी को शरमाने

वाले सफ़ेद दोपट्टे (झाग, फेन) और उन के नीचे आकाश की रंगत को लजाने वाला (शरमाने वाला) जमना रानी का गात बात बात में काशमीर को मात करते हैं ॥ आबशार तो तरंगे बेखुदी में नृत्य (नाच) कर रहे हैं ॥ जमना रानी साज़ बजा रही है ॥ राम शहंशाह गा रहा है :—

१९. ग़ज़ल ताल तीन.

हिप हिप हुर्रे[1] । हिप हिप हुर्रे ॥ टेक

(१) अब देवन के घर शादी है, लो! राम का दर्शन पाया है

पाँ कोवां[2] नाचते आते हैं, हिप हिप[3] हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(२) खुश खुर्रम[4] मिल मिल गाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे

है मंगल साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे ॥

१ खुशी २ पाओं से नाचते आते हैं ३ अंग्रेजी भाषा में अति खुशी का बोधक यह शब्द है ४ आनन्द, मस्त हो कर

(३) सब ख्वाहश मतलब हासल हैं, सब खूबों से मैं वासलं हूं
क्यों हम से भेद छुपाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥

(४) हर इक का अन्तर आत्म हूं, मैं सब का आक़ा साहिब हूं
मुझ पाये दुःखड़े जाते है, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥

(५) सब आंखों में मैं देखूं हूं, सब कानों में मैं सुनता हूं
दिल बरकत मुझ से पाते हैं, हिप पिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥

(६) गह इश्वो सीमीं बरं का हूं, गह नारो शेर बबर का हूं
हम क्या क्या स्वांग बनाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥

५ सुन्दर लोग ६ मिला हुवा ७ मालक ८ कभी ९ नाज़, नखरा १० चान्दी जैसी सूरत वाली प्यारी ११ गर्ज १२ बबर शेर (सिंह)

(७) मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था
हां वेद अब क़समें खाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
(८) मैं अन्तर्यामी साकिन[13] हूं, हर पुतली नाच नचाता हूं
हम सूत्रतार हिलाते हैं,[14] हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
(९) सब ऋषियों के आयीनों[15] दिल में, मेरा नूर[16] दरख़शां[17] था
मुझ ही से शाइर[18] आते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
(१०) मैं ख़ालिक़[19] मालक दाता हूं, चशमक[20] से दहर[21] बनाता हूं

१३ स्थिर १४ सूत्रधारी की तरह पुतली की तार हला ते हैं १५ अन्तःकरण रूपी शीशा १६ प्रकाश १७ चमकताथा १८ कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती है) १९ सृष्टि के रचने वाला २० आंखकी झपक में २१ युग, समय

क्या नक़्शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(११) इक कुंन[22] से दुन्या पैदा कर, इस मन्दर में खुद रहता हूं
हम तनहा शैहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१२) वह मिसरी हूं जिस के वायस[23] दुन्या की ईशरत[24] शीरीं[25] है
गुल[26] मुझ से रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१३) मसजूद[27] हूं किब्ला[28] क़ाबा हूं, मॉबूद[29] अंजा[30] नौकूस[31] का हूं

२२ हुक्म २३ सबब, कारण २४ विषय आनन्द, विषय के पदारथ २५ मीठी २६ फूल २७ उपास्य, पूजा कीया गया २८ जिसकी तर्फ मुंह करके ईश्वर पूजा [ध्यान] करें २९ पूजनीय ३० बांग ३१ शंख

सब मुझ को कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

(१४) कुल आलम मेरा साया[32] है, हर आन बदलता
आया है

ज़ल[33] कामत[34] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

(१५) यह जगत हमारी किरणें हैं, फैलीं हर सूँ[34] मुझ
मर्कज़[35] से

शां बूँकलमूं[36] दखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

(१६) मैं हस्ती[37] सब अशया[38] की हूं, मैं जान मलायक[39]
कुल की हूं

मुझ बिन बेबूंद[40] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

३२ साया, प्रतिबिम्ब ३३ बिम्ब ३४ तरफ ३५ केन्द्र ३६ नाना प्रकार के ३७ अस्ति, जान सब की ३८ वस्तु ३९ फरिश्तों की ४० न होना, असत

(१७) वेजानों में हम सोते हैं हैवान में चलते फिरते हैं
इन्सान में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप
हिप हुर्रे ॥

(१८) संसार तजल्ली[42] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही मैं हूं
हम क्या [43]शोले भड़काते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

(१९) जादूगर हूं, जादू हूं खुद, और आप तमाशा[44]वीं मैं हूं
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(२०) है मस्त पड़ा मैहमां में अपनी, कुच्छ भी ग़ैर[45]
अज़ राम नहीं
सब कल्पत धूम मचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप
हिप हुर्रे ॥

४१ पशू ४२ तेज, चमक ४३ अग्नि की लाटें ४४ तमाशा देखने वाला ४५ राम के सिवाय.

नोट—यह कविता राम महाराज से उस समय लिखी गयी जिन दिनों में वह बिल्कुल अकेले टिहरी के नज़दीक गोदी सिरायीं की एक गुहा (गुफा) वमरोगी में कुच्छ दिन बिल्कुल निराहार रहे थे और मस्ती से बेहोश हुए बिल्कुल दुन्या से बेखबर १, दो रात्री गंगा तट पर ही पड़े रहे और नारायण ने तब उन को प्या कर जगाया.

२ राग गज़ल खुमाज ताल दादरा

(१) चलना सबा[1] का ठुम ठुमक, लाता प्यामे[2] यारहै
टुक आंख कब लगने मिली, तीरे निगह[3] तय्यार है

(२) होशो खिरद[4] से इत्तफाक़न आंख गर दो चार है
बस यार की फिर छेड़ खानी का गर्म बाज़ार है

(३) मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है
सखती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इनकार है?

(४) लिखने की नैं[5] पढ़ने की फुरसत, कामकी नै
काजकी

१ प्रातःकाल की वायू २ ईश्वर (प्यारे) का पत्र (पैगाम)
३ नज़र का तीर ४ होश और अकल ५ नहीं

हम को नकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार है

(५) पेहरः महब्बत का जो आये, हमबग़ल होता है वह
गुस्सा तबीयत का नकालें फ़क्र दिलदार है

(६) सोने पे हाज़र ख्वाब में, जागे पे खाको आब मे
हंसने में हंस मिलता है, मिल रोता है ज़ार ज़ार है

(७) गह बर्क़ वश ख़ंदां बना, गह अबरेतर गिरयां बना
हर कूरतो हर रंग में पैदा हुवे .अय्यार है

(८) दौलत ग़नीमत जान दर्दे .इश्क़ की मत खो उसे
मालो मता घर बार ज़र, सदके मुबारक नार है

(९) मंजूर नालायक़ को होता है, .इलाजे दर्दे .इश्क़
जब .इश्क़ ही माशूक़ हो, क्या सिहत में बीमार है

६ पृथ्वि और जल ७ कभी बिजली की मानन्द ८ हंसता हुवा ९ बादल की तरह तरबतर १० रोते हुवे ११ तसवीर जिस से यार का अन्दाज़ाः लगाया जावे, अथवा अपने प्यारे का तराज़ू १२ माल अरु असबाब १३ धन १४ मुबारक आग .इश्क़ की है

(१०) क्या इन्तज़ार-ओ-क्या मुसीबत, क्या बला क्या खारे दश्त[15]
शोला मुबारक जब भड़क उट्ठा, तो सब गुलनार[16] है

(११) दौलत नहीं ताक़त नहीं, तालीम ने तकरीम[17] ने
शाहे ग़नी[18] को तो फ़क़त, इर्फ़ाने ईश[19] दर्कार है

(१२) उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख्वाहिशें
दीदार का लीजिये मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है

(१३) मंसूर से पूछी किसी ने, कूचाये जाँनाँ[20] की राह
खुब साफ़ दिल में राह बतलाती ज़ुबाने दार[21] है

(१४) इस जिस्म से जानू कूद कर, गंगाये वहदत[22] में पड़ी
कर लें महोछा जान्वर, लो वह पड़ा मुरदार है

(१५) तशरीफ़ लाता है जुनूं, चशमों सिरो दिल फ़र्शे राह

१५ जंगल के कांटे १६ अनार का फूल, यहां अग्नि के पुष्प से भी मुराद है १७ इज़्ज़त बजुर्गी १८ अमीर सखीदिल बादशाह १९ आत्मा का ज्ञान २० ईश्वर के घर का रास्ता २१ सूली की नोक (ज़ुबान) २२ एकता की गंगा (अर्थात समुद्र)

पैहलू में मत रखना ख़िरद, को रांड यह वदकार है

(१६) पल्ला छुटा इस जिस्म से, सिर से टली अपने वला

वैल्कम ! ऐ तेग़े ख़ूंचकां[23], क्या मर्ग[24] लज़्ज़तदार है

(१७) यह जिस्मो जां नौकर को दे, ठेका सदा का भर दीया

तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इस से कार है

(१८) खुश हो के करता काम है नौकर मेरा चाकर मेरा

हो राम बैठा बादशाह हुश्यार ख़िदमत गार है

(१९) सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों[25] से नींद

ग़फ़लत नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार[26] है

(२०) नौकर मेरा यह कौन है, आँक़ा[27] हूं इस का कौन राम ?

खादिम[28] हूं मैं या बादशाह ? यह क्या अजब असरार[29] है

२३ खून चरवाने वाली अर्थात खून करने वाली तल्वार
२४ मौत २५ आंखें २६ जागा हुवा २७ मालक २८ नौकर
२९ भेद, गुप्त बात

(२१) वाहदे[30] मुजर्रद[31] लाशरीको[32] गैर शानी बे बदल
आक़ा कहां खादम कहां? यह क्या लगव गुफतार है
(२२) तनहास्तम[33] तनहास्तम दर[34] वैहरो वर यकतास्तम[35]
नुतक़ो[36] ज़ुबां का राम तक आ पहुंचना दुश्वार[37] है
(२३) ऐ वादशाहाने जहां! ऐ अंजमे हफत आसमान[38]!
तुम सब पै हूं मैं हुक्मरान, सब से बड़ी सरकार है
(२४) जादू निगाहे यार हूं, नशा लैवे मै गूं[39] हूं मैं
आबे ह्याते रुख हूं मैं, अवरू मेरी तल्वार है
(२५) यह कांकुले[40] ज़ुलमाते माया, पेच पेचां है, वले[41]
सीधे को जल्वाः-ए-राम[42] है, उलटे को डसता मार[43] है

३० बिलकुल अकेला ३१ साथी रहित ३२ मसाल (अपने बरावर) रहित ३३ मैं अकेला हूं ३४ पृथ्वि समुद्र पर ३५ अकेला हूं ३६ वात, गुफतगू, बोली (समझ) ३७ मुशकल ३८ ऐ सातो आकाशों के सतारो! ३९ आनन्द रूपी शराव की क़िसम वाले नशा का पीने वाला ४० (माया रूपी) काली घंघोर ज़ुलफें ४१ लेकिन ४२ राम का दर्शन ४३ सांप (सर्प)

१ प्रातःकाल की वायू का ठुमक २ चलना अपने यार (स्व-रूप) का संदेसा ला रहा है। ज़रा सी आंख भी लगने नहीं मिलती, क्योंकि जब ज़रा लग जाती है (सोने लगता हूं) तो झट उस यार (स्वस्वरूप) की नगह (प्रकाश) का तीर लगता है (ताकि मैं सोने न पाऊं अर्थात उसे भूल न जाऊं)

२ अगर इत्तफ़ाक़ से अक़ल और होश में आने लगता हूं तो उसी समय यार छेड़खानी करने लग पड़ता है, ताकि मैं फिर बेहोश और आत्मानन्द से पागल हो जाऊं, अर्थात् मैं अब दुन्या का न रहूं, सिर्फ यार (स्वस्वरूप) का ही हो जाऊं॥ (इस छेड़खानी से)

३ ऐसा मालूम होता है कि यार का हम से मतलब का प्यार है (मतलब हमारा दिल लेने से है), भला सख़्ती से क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है (जब पैहिले से ही यार के हवाले दिल करने को त्यार बैठे हैं तो अब सख़्ती से क्यों छीनना चाहता है?)

४ दिल को यार के अर्पण करने से न लिखने की फ़ुरसत रही, और न किसी काज की॥ आप तो वह बेकार (अकर्ता) ही था अब हमको भी वैसा बेकार कर दीया है॥

५ जब प्रेम का समय आता है तो वह झट हमबग़ल हो लेता है, ऐसी हालत में हम किसपर गुस्सा निकालें, क्योंकि रूबरू (साह्मने) पकड़ने वाला तो अपना यार है ॥

६ वह सोने में हाज़र है जाग्रत में भी साथ है, पृथ्वी जल पर वह मौजूद है, हंसते समय वह साथ मिलकर हंसता है और रोते समय वह साथ रोता है (अभेद ऐसा है)

७ कभी बिजली की तरह चमकता है और हंसता है, और कभी बादल बरस कर रोता है, मगर हमें तो हर सूरत और रंग में वही ज़ाहर होता हुवा नज़र आता है ॥

८ ऐ प्यारे पुरुष ! .इश्क़ (प्रेम) के धनको ग़नीमत जान, इसको मत खो, बलकि इस प्रेम की आग पर सारे घर बार, धन दौलत को वार दे ॥

९ इस प्रेम के दर्द का .इलाज करना तो अज्ञानी पुरुष को मंजूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक़ (अपना दोस्त) हो तो क्या ऐसी .उमदा (अरोग्यता) में भी बीमार है ॥

१० इन्तज़ार मुसीबत, बला और जंगल का कांटा यह सब उसी वक़्त जलकर फूल (आग का पुष्प) हो गये. जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई ॥

११. दौलत, बल, विद्या और .इज्ज़त तो नहीं चाह्य, उस बेपरवाह बादशाह को तो सिर्फ आत्मज्ञान (ब्रह्म विद्या) ही काफी है ॥

१२. केई बरसोंकी आशा (स्वरूप के अनुभवमें जो पर्दे अर्थात (दीवार) का काम कर रही हैं) इन सब छोटी बड़ीयोंको (आत्म-ज्ञान से) जला दो और जब इस तरह से ख्वाहशों की दीवार उड़ जावे तो फिर यार (स्वस्वरूप) के दर्शन का मज़ा लो.

१३. मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेता का नाम है, जब वह सूली पर चढ़ाया गया तो उस समय एक पुरुपने उस से (यार की गली) स्वस्वरूप के अनुभव करने का रास्ता पूच्छा ॥ मंसूर तो चुप रहा क्योंकि वह सूली पर उस समय था, मगर सूली की नोक अथवा सिरे ने (जिस को ज़बाने दार कहते है) मंसूर के दिल में साफ़ खुबकर बतला दिया, कि यह रास्ता है अर्थात यार के अनुभव का (सिर्फ दिलके अन्दर खुबना ही) रास्ता है.

१४. इस शरीर से शारीरक जान कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड़ गयी है अब इस बेजान शरीर (मुर्दे) को (कर्म्म रूपी) पक्षी आयें और महोत्सव कर लें (क्योंकि साधू के मरने के पश्चात पंढारा होता है तो मस्त पुरुप अपने शरीर को ही सर्व के

अर्पण करना पंढारा समझता है इस वास्ते राम जब मस्त हुवे तो शरीर को बेजान देखकर पंढारे के वास्ते पक्षीयों को बुलाते है.

१५. जब निजानन्द से पागलपन आने लगे तो उस समय पास दुन्या की अक़ल न रखना, बलकि अपने दिल और आंखो के द्वारा उसको आने देना चाहे.

१६. जब राम अज़हद मस्त हुवे तो बोल उठे "इस शरीर से जब झगड़ा दूर हूवा, और (इस का सम्बन्ध छोड़ने से) इस की ज़म्मे वारी की सिर से बला टल गयी, अब तो राम खून पीने वाली तल्वार (मुसीबत) को भी वैल्कम अर्थात स्वागत करते हैं क्योंकि उनको यह मौत बडी लज्ज़त दायक है.

१७. यह देह प्राण तो अपने नौकर (ईश्वर) के हवाले करके उस से नित्य का ठेका लेलीया है, अब यार (स्वस्वरूप)! तू जान तेरा काम, हम को इस (शरीर) से क्या मतलब है

१८. नौकर बड़ा खुश हो के काम करता है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि खिदमतगार बड़ा हुश्यार है॥

१९. नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन यह ज़रा भी सोता नहीं, मानो उसकी आंखों में नीन्द ही नहीं, और दम भर भी इस को सुस्ती नहीं, हर घड़ी सदा जागता है.

२०. ऐ राम! मेरा नौकर कौन है? और मालक कौन है? मैं क्या मालक हूं या नौकर हूं? यह क्या आश्चर्य भेद है (कुच्छ नहीं कहा जासकता है)

२१. मैं तो अकेला अद्वैत नित्य वेमिसाल हूं, मालक कहां और नौकर कहां? यह क्या ग़लत बोल चाल है.

२२. मैंही अकेला हूं, मैंही एक हूं, पृथ्वि जल पर मैंही अकेला हूं, .अक़ल (बुद्धि) और वानी की मुझ तक गम्यता (पहुंचना) मुशकल है.

२३. ऐ दुन्या के बादशाह! और ऐ सातों असमानों के सतारो! मैं तुम सब पै हुक्मरान् (हाकम) हूं, मेरी हकुमत तुम सब से वड़ी है.

२४. मैं अपने यार (स्वरूप) की जादूभरी निगाह (दृष्टि) हूं, और मस्तीकी शराब का नशा मैं हूं, और अमृत मैहूं, भवें (माया) मेरी तलवार है.

२५. यह मेरी माया की काली .ज़ुल्फ़ें (अविद्या के पदार्थ) पेचदार तो हैं मगर जो मुझ को (मेरे असली स्वरूप से) सीधा आनकर देखता हैं उस को तो (असली) राम के दर्शन होते हैं, और जो उलट (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी

सियाह .ज़ुल्फ़ों को) देखता है उसको ("राम" शब्द का उलट "मार") अविद्याका सांप काट डालता है

राग भैरवी ताल केहरवा.

(१) बिछड़ती दुलहन[1] वतन[2] से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है
कि फिर न आने की है कोई ढब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १ ॥

(२) यह दीनो दुन्या[4] तुम्हें मुबारक, हमारा दुलहा[5] हमें सलामत
[6]पे याद रखना, यह आखरी छब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २ ॥

(३) है मौत दुन्या में बस ग़नीमत, खरीदो राहत को मौत के भाओ

१ वियाही हुई लड़की २ घर ३ तरीका, रस्ता ४ धर्म और दौलत ५ वियाहा हुवा लड़का ६ मगर ७ उत्तम ८ आराम

न करना चूँ तक, यही है मज़हब, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ ३ ॥

(४) जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख्वाबे ग़फलत
है सख्त, ऐ जाँ !

कलोरोफॉरम हैं सब मेताल्ब, खड़े हैं रोम और
गला रुके है ॥ ४ ॥

(५) ठगों को कपड़े उतार देदो, लुटा दो अस्बाबो
मालो ज़र सब

खुशी से गर्दन पे तेग़ धर तब, खड़े हैं रोम और
गला रुके है ॥ ५ ॥

(६) जो आर्ज़ू को हैं दिल में रखते, हैं वोसा दीवाना
सँग को देते

यह फूटी क़िसमत को देख जब कब खड़े हैं
रोम और गला रुके है ॥ ६ ॥

९ धर्म १० दवाई जिसके सूंघने से पुरुष बेहोश हो जाता है
११ मुरादें मतलब १२ तलवार १३ चूमना १४ कुत्ता

(७) कहा जो उसने उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के प्यारे अरुजन !
यह सुन के नादां के खुशक हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ७ ॥

(८) लहू का दरया जो चीरते हैं, हैं तखत पाते वोही हकीकी
त.ऽल्लुकों[16] को जला भी दो सब; खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ८ ॥

(९) है रात काली घटा भियानक, गज़ब दरिन्दे[18] हैं, बाये जंगल
अकेला रोता है तिफ़्ल या रब, ! खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ९ ॥

(१०) गुलों के बिस्तर पे ख्वाब ऐसा, कि दिल में [20]दीदों में [21]खार भर दे

१५ यहां कृष्ण से मुराद है १६ संबन्धियोंको १७ पशु १८ बच्चा १९ फूलों के २० आंखो में २१ कांटे

है सीनां[22] क्यों हाथ से गया दब, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १० ॥

(११) न बाक़ी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से
जम के बैठे
है पिछला लिखा पढ़ा भी ग़ायब[23], खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ ११ ॥

(१२) है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की
ताबो ताक़त[24]
न असर करता है नैशे अक़रब[25], खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १२ ॥

(१३) पीये नगाहों के जाम[26] रज कर, न सिर की सुद्ध
बुद्ध रही न तन की
न दिन ही सूझे है, नै तो अब शब[27], खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १३ ॥

२२ छाती २३ भूला हुवा २४ हिम्मत और बल २५ बिच्छु का डंक २६ प्याले २७ रात

(१४) हवासे खमँसा: के बन्द थे दरँ, किधर से कावज हुवा है आकर
बला का नक़्शा, सितँम, त.ऽज्जव, खडे हैं रोम और गला रुके है ॥ १४ ॥

(१५) यह कैसी आंधी है जोशे मस्ती की, कैसा तूफ़ां सरूर का है!
रही ज़मीं मँह न मेहरो कौकब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १५ ॥

(१६) थीं मन के मन्दर में रक़्सँ करतीं, तरह तरह की सी ख्वाहशें मिल
चराग़े खाँना से जल गया सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १६ ॥

(१७) है चौड़ चौपट यह खेल दुन्या, लपेट गंगा में इस को फैंका

२८ पांचों कर्म इन्द्रियोंके २९ दरवाज़े ३० बड़े गज़बका अश्चर्य ३१ चांद ३२ सूरज और तारे ३३ नाच करना ३४ स्वयं घर का दीपक

मरा है फील[35] उड़ा है अशहँब[36], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १७ ॥

(१८) पड़ा है छाती पे धर के छाती, कहां की दुई[37] कहां की वहदत[38]
है किस को ताक़त बियान की अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १८ ॥

(१९) यह जिस्मे फर्ज़ी की मौत का अब, मज़ा समेटे से नहीं समिटता
उठाना दुभेर[39] है वैहमे क़ालेब[40], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १९ ॥

(२०) कलेजे ठंडक है, जी में राहत[41], भरा है शादी[42] से सीनाये राम[43]
हैं नैन[44] अमृत से पुर लबा लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २० ॥

३५ हाथी ३६ घोड़ा ३७ द्वैत ३८ एकता ३९ मुशकल
४० वैहम का शरीर ४१ चैन ४२ खुशी ४३ राम का दिल
४४ चक्षु

१. जब लड़की पति के साथ बियाही जाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है, तो लड़की और माता पिता के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अश्चर्य हुए गला रुके जाता है। लड़की के घर वापस फिर आने की कोई उम्र (संभावना) मालूम नहीं होती, इसवास्ते सर्वदा की जुदाई होते देख कर माता पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है ॥ १ ॥

२. (लड़की फिर मन में यह कहने लगती है) कि हे माता पिताजी ! यह घर और आप की दुन्या आपको मुबारक हो और हमारा पति हमको कल्याणदायक हो, मगर यह (जुदा होते समय की) आखरी उम्र (अवस्था) ज़रुर याद रखनी, " कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है " ॥ ऐसे ही जब पुरुष की वृत्ति रूपी लड़की (अपने) पति (स्वस्वरूप) के साथ बियाही जाती है अर्थात आत्मा से तदाकार होती है तो उस के मात पिता (अहंकार और बुद्धि) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे बेबसी के रुकता जाता है और उस वृत्ति को अब वापस आते न देखकर सर्व इंद्रियो में रोमांच हो जाता है, उस समय वृत्ति भी अपने संबन्धीयों से यह कहती मालूम

देती है, कि ऐ अहंकार रूपी पिता! और बुद्धि रूपी माता! यह दुन्या अब तुम्हें मुबारक हो और हमको हमारा दुल्हा (स्वस्वरूप) आनन्दायक सलामत हो ॥ २ ॥

३. (अहंकार की) यह मौत दुन्या में अति उत्तम है, और इस मौत को दुन्या के सब आरामों के भाओ खरीदलो, इस में चूं चरान् न करना ही धर्म है ॥ गो इस (मौत) को खरीदते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है ॥ ३ ॥

४. ऐ प्यारे! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो वह तो घोर स्वप्न है, क्योंकि यह सब विषय के पदार्थ तो कलोरोफारम दवाई की तरह हैं जिस को देखने अथवा सूंघने से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है ॥ ४ ॥

५. ठगों को कपड़े उतार कर देदो और माल अस्बाब सब लुटा दो, और (अहंकारकी) गर्दन पर खुशी से तल्वार रखदो, ख्वाह तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे (मगर जब तक आनन्द से अपने आप अहंकार को नहीं मारोगे तब तक किसी प्रकार का भला आप का नहीं होगा. ॥ ५ ॥

६. जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चुम्मा (बोसा) देते हैं, ऐसी फूटी प्रारब्ध को देख कर

रोमांच हो जाते हैं और गला रुक जाता है. ॥ ६ ॥

७. जब उस (कृष्ण) ने अरुजन को कहा, कि सर्व संबन्धी-यों को टुकडे २ कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी (अर्जुन) के खुशक होंट हो जाते हैं, और रोमांच होते हैं, अरु गला रुकता है ॥ ७ ॥

८. (फिर कृष्ण कहता है कि ऐ प्यारे!) जो पुरुष लहू का दरया (अर्थात संबन्धीयों को) चीरते हैं (मारते हैं) वोही (स्वराज्य) असली तखत पाते हैं इस वास्ते ऐ प्यारे! सर्व दुन्यावी संबन्धीयों को जला भी दो, पर यह सुन के रोमांच होते हैं, और अरुजन का गला रुकता जाता है ॥ ८ ॥

९, १०. (ऐसा स्वप्न आ रहा है) रात काली है, घनघोर घटा आ रही है, खूँखार पशू (शेर इत्यादि) बडे भारी जंगल में हैं, उस वन में लडका अकेला रोता है और रोमांच हो रहे हैं, गला रुक रहा है, मगर फूलों के विस्तर पर ऐसा भ्यानक ख्वाब आ रहा है कि दिलमें और आंखो में काँटे भर दे, लेकिन ऐ प्यारे! हाथ से छाती क्यों दब गयी? जिस कारण ऐसा भयबीत स्वप्न आ रहा है और रोमांच होते जाते हैं अरु गला रुके जाता है ॥ ९, १० ॥

११. इस इरादे से (गंगा किनारे) जम कर बैठे थे कि अब

बाक़ी कोइ .इल्म नहीं छोड़ेंगे, मगर पिछला लिखा पढ़ा भी गुम हो गया है और रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक रहा है ॥ ११ ॥

१२. पट्ठों में ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने कि भी ताक़त नहीं रही, और न ही अब किसी का डंक असर कुच्छ करता है बलकि ऐसी हालत हो रही है "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक रहा है" ॥१२॥

१३. यार की निगाह रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रज्ञकर पिये हैं, कि अपने सिर और तन की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही और अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नज़र आवे है, बलकि रोमांञ्च खड़े हो रहे हैं, और गला रुका रहता है ॥१३॥

१४. पांचो कर्म इन्द्रियों के दरवाज़े तो बन्ध थे, मगर मालूम नहीं कि किस तरफ से यह (मस्ती का जोश) अन्दर आकर क़ाबज़ हो गया है जो बला का नशा है और सितम ढा रहा है, जिस से रोमांञ्च खड़े हो रहे हैं, और गला रुके जा रहा है ॥१४॥

१५. यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा आ रही है और निजानन्द का जोश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चांद, सूरज तारे की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही अर्थात द्वैत बिलकुल भासमान न

रही, बलकि रोंगटे खड़े हैं, और गला रुका हुआ है ॥ १५ ॥

१६. मन रूपी मन्दर में जो नाना प्रकार की ख्वाहशें (इच्छा) नाच रही थीं वह घर के दीपकसे (आत्मानुभवसे) सब जल गयीं, अर्थात अपने अन्दर ज्ञान अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सब तरह के सङ्कल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया ॥ १६ ॥

१७. यह दुन्या शत्रञ्ज के खेल की तरह है, इस तमाम को लपेट कर अब गंगामें फेंक दीया, वह फीला मरा अरु वह घोड़ा मरा यह देख कर रोम खड़े हैं अरु गला रुके है ॥ १७ ॥

१८. छाती पर धर कर छाती यार के पड़ा है अब कहां की द्वैत अरु कहां की एकता ! किस को बताने की अब ताकत है, सिर्फ खड़े हैं रोम अरु गला रुके है ॥ १८ ॥

१९. (यह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है ?) यह भासमान (वहमी) शरीर की मौत का मज़ा है जो समेटे से भी नहीं समिटता है, अब तो (इस आनन्द के भड़कने से) यह पंचभौतक शरीर उठाना भी मुशकल हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे खड़े हैं रोम अरु गला रुके है ॥ १९ ॥

२०. कलेजे (हृदय) में शान्ति है अरु दिल में अब चैन है,

खुशी से राम का अन्दर भरा हुवा है, और नैन (आनन्द के) अमृतसे लबा लब भरे हुए हैं अर्थात आनन्द के मारे आंसू टपक रहे हैं, और रोम खड़े हैं अरु गला रुक रहा है ॥ २० ॥

राम का एक प्यारे के नाम खत.

२२ राग भैरवी ताल पशतो.

सरोदो[1] रक्सो शादी[2] दम बदम है, तफक्कुर[3] दूर है और ग़म को रम[4] है

ग़ज़ब खूबी है, बेरूँ अज़ रक़म[5] है, यक़ीक़न जान, तेरी ही क़सम है

मुबारक हो तबीयत का यह खिलना, यह रस भीनी अवस्था जामे जम[6] है

मुबारक दे रहा है चांद झुक कर, सलामों[7] से कमर में उस की खम[8] है

१ गाना बजाना और नाच २ खुशी, आनन्द ३ फिक्र ४ भागना (भागा हुवा) ५ लिखे से बाहर ६ जमशेद बादशाह का प्याला, अर्थात आत्मानन्द रूपी मस्ती का प्याला ७ नमस्कारों से ८ कुबड़ा पन, झुकाओ

पीये जाओ दमा दम जाम[9] भर कर, तुम्हारा आज लाखों पर क़लम है

गुलों[10] से पुर हुवा है दामने शौक़[11], फ़लक[12] ख़ेमा[13] है, कैवाँ[14] पर अलम[15] है

तेरे [16] दीदों पै भूले से हो शबनम, कभी देखा सुना "सूरज पै नम है"?

रखें आगे को क्या क्या हम न उम्मेद, कि मारा [17] गुर्गे ग़म, पैहिला क़दम है

दिखाया प्रकृति ने नाच पूरा, [18] सिले में उड़ गयी, ऐ है सितम[19] है

ग़लत[20] गुफ़तम, शकायत की नहीं जा[21], मिली आ पुरुष में, अद्लो करम[22] है

९ आत्मानन्द के प्याले १० पुष्पों से ११ शौक़ का पल्ला अर्थात गूढ़ जज्ञासा १२ आकाश १३ तम्बू, मंडप १४ शनिश्चर तारे का नाम १५ झंण्डा १६ आंखों में १७ ग़म चिन्ता का भेड़िया १८ बदले में .इवज में १९ .ज़ुल्म है, अजब है २० मैं ने ग़लत बोला २१ जगह २२ अन्साफ़ और बख़शश अर्थात

नः कहता था तुम्हें क्या राम[23] पैहिले? सवाहे [24]ईद आई!
रात कम है

(प्रकृति अपने पुरुष में आ मिली है और यही उसके वास्ते करना उचित और ठीक है) २३ कवि का नाम २४ आनन्द की प्रातःकाल

---

२३ ग़ज़ल क़वाली

(गर यूं हुवा तो क्या हुवा और वूं हुवा तो क्या हुवा) टेक
था एक दिन वह धूम का, निकले था जब अस्वार हो
हर दम पुकारे था [1]नकीब, आगे बढ़ो पीछे हटो
या एक दिन देखा उसे, तन्हा[2] पड़ा फिरता है वह
बस क्या ख़ुशी क्या न ख़ुशी, यक्सां है सब ऐ दोस्तो!
गर यूं० १

या नेमतें[3] खाता रहा, दौलत के दस्तर खान पर
मेवे मिठाई या मज़े हल्वा-ओ-तुर्शी[4] और शकर

१ कोचवान, चोवदार २ अकेला ३ अच्छे अच्छे पदार्थ ४ खट्टा माठी

या वान्ध झोली भीख की टुकड़ोंके ऊपर धर नज़र
हो कर गदा फिरने लगा कूचा वकूचा दर वदर ॥ गर यूं २

या .इशरतों के ठाठ थे, या .ऐश के असवाव थे
साकी सुराही गुलवदन, जामो शरावे नाव थे
या वेकसी के दर्द से वेहाल थे वेताव थे
आखिर जो देखा दोस्तो ! सव कुच्छ खियालो खाव थे॥
गर यूं० ३

जो .इशरतें आकर मिलीं तो वह भी कर जाना मीयां
जो दर्दो दुःख आकर पड़े, तो वह भी भरजाना मीयां
ख्वाह दुःखमें ख्वाह सुखमें गर्ज़ यां से गुज़र जाना मीयां
है चार दिन की ज़िन्दगी, आखरको मरजाना मीयां ॥
गर यूं० ४

५ फकीर ६ गली दर गली ७ विषयानन्द अर्थात .ऐश के असवाव ८ शराव पिलाने वाला ९ शराव रखने का वर्तन १० सुन्दर स्त्रीयें ११ प्याला १२ अंगूरी शराव १३ विषय भोग १४ सैहजाना १५ यहां

२४ ग़ज़ल भैरवी ताल पशतो.

कैसें रंग लागे खूब भाग जागे, हरी गयी सब भूक और नंग मेरी

चूड़े सांच स्वरूप के चढ़े हम को, टूट पड़ी जब काच की वंग मेरी

तारों संग आकाश में चमकती है, बिन डोर अब उड़ी पतंग मेरी

झड़ी नूर की बरसने लगी ज़ोरो, चंद सूर में एक तरंग मेरी

१ उड़ गयी, दूर हो गयी २ शरम ३ सत्यस्वरूप ४ पहनने का कड़ा, इस जगह मुराद अहंकार से है ५ साथ ६ यहां वृत्ति से मुराद है ७ प्रकाश की वर्षा ८ ज़ोर से

---

२५ ग़ज़ल कव्वाली (दादरा)

पा लीया जो था कि पाना, काम क्या बाक़ी रहा

जानना था सोई जाना, काम क्या बाक़ी रहा (टेक)

आ गया आना जहां, पहुंचा वहां जाना जहां

अब नहीं आना न जाना, काम क्या बाक़ी रहा
बन गया बनना बनाने बिन[1], बना जो बन बना
अब नहीं बानी[2]-ओ-बानाँ[3], काम क्या बाक़ी रहा
जानते आये हैं जिसे जान, झगड़ा तै[4] हुवा
उठ गया बकना बकाना, काम क्या बाक़ी रहा
लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर
अब रहा आराम पाना, काम क्या बाक़ी रहा
स्वप्न के मानन्द यह सब अनहुवा[5] ही हो रहा
फिर कहां करना कराना, काम क्या बाक़ी रहा
डाल दो हथ्यार, मेरी राय[6] पुख्ता अब हुई
लग गया पूरा नशाना, काम क्या बाक़ी रहा
होने दो जो हो रहा है, कुच्छ किसी से मत कहो
सन्त हो किसि को सताना, काम क्या बाक़ी रहा

१ बिग़ैर २ बनाने वाला ३ बनाने की वस्तू, ताना ४ खतम, फैसल ५ बिग़ैर हुवे ही हो रहा है ६ दलील, निश्चय पक्की

आत्मा के ज्ञान से हुआ कृतार्थ जन्म है
अब नहीं कुच्छ और पाना, काम क्या बाक़ी रहा
देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सर्व कुच्छ
फिर जगत को क्यों रझाना, काम क्या बाक़ी रहा
घोर निद्रा से जगाया सत गुरू ने वाह वा
अब नहीं जगना जगाना, काम क्या बाक़ी रहा
मान कर मन में मीयां मौलों का मेला है यह सब
फिर बनूं अब क्या मौलाना, काम क्या बाक़ी रहा
जान कर तौहीद[12] का मनशा[13], शुभाः सब मिट गया
यूं ही गालों का बजाना, काम क्या बाक़ी रहा
एक में कसरत[14]-व कसरत में भी एक ही एक है
अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाक़ी रहा
अक़ल से भी दूर है, कहने-व-सुनने से परे

७ उत्तम, संतुष्ट ८ खुशामद करना, चापलोसी करना ९ गहरी, घूक नीन्द १० ईश्वर ११ मौलवी, पंडित १२ अद्वैत, वहदत १३ मतलब, मन्तव्य १४ बहुत, अनेक

हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाकी रहा
रम्ज़[15] है तौहीद, यहां हुकमा[16] की हिकमत[17] तंग है
हो गया दिल भी दिवाना[18], काम क्या बाक़ी रहा
रह गये उलमा-व-फ़ुज़ला[19] इल्म की तहक़ीक़[20] में
भ्रम है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाक़ी रहा
द्वैत और अद्वैत के झगड़े में लड़ना है फ़ज़ूल
अब न दान्तों को घसाना, काम क्या बाक़ी रहा
जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख्वाब-ओ-ख्याल[21]
अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाक़ी रहा
कुच्छ नहीं मतलब किसी से, सो रहा टांगें पिसार
अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाक़ी रहा
हो गयी दे दे के डङ्का, सारी शङ्का भी फ़ना[22]
अब मिला निर्भय[23] ठिकाना, काम क्या बाक़ी रहा

१५ इशारा　१६ .अक़लमंद　१७ .अक़ल　१८ पागल　१९ आलिम और फाज़ल　२० दर्याफ्त, ढूंढ　२१ स्वमवत्त　२२ तबाह　२३ भय रहित-और (खताब कवि का भी है)

२६ ग़ज़ल ताल दादरा

नी मैं पाया महरम यार | टेक
जिस दे हुस्न दी अजब बहार |

जिस दा जोगी ध्यान लगावन
पीर पैग़म्बर निशे दिन ध्यावन
पंडित आलिम अन्त न पावन
तिस दा कुल अज़हार ॥ नी मैं० १

"मैं" "तूं" दा जद भेद मिटाया
कुफ़र इस्लाम दा नाम भुलाया
ऐनं ग़ैन दा फ़र्क गंवाया
खुल्या सब असरार ॥ नी मैं० २

वहदत कसरत विच समाई
कसरत वहदत हो के भाई

१ अपना प्यारा, स्वस्वरूप २ सौंदरयता ३ हर रोज़ ४ आत्मज्ञानी ५ दृश्य, नाम रूप ६ नास्तक पन ७ अद्वैत और द्वैत से यहां मुराद है ८ भेद, रमूज़ ९ एकता

ज़ुज़[10] विच कुल[11] दी सूझी पाई
विसरे[13] गया संसार ॥ नी मैं० ३
कहन सुनन ते न्यारा[13] जोई
लामकान[14] कहे सब कोई
"है" "नाहीं" दा झगड़ा होई
तिस दा गर्म बाज़ार ॥ नी मैं० ४
साक़ी[15] ने भर जाम[16] पिलाया
वे खुद हो के जशन[17] मनाया
ग़ैरीयत[18] दा नाम गंवाया
हुई जय जय[19] कार ॥ नी मैं० ५

१० नाना, बहुत ११ व्यष्टि १२ समष्टि १३ भूल गया
१४ भिन्न, अलग, परे १४ स्थान रहित, अर्थात देश से परे
१५ निज़ानन्द रूपी शराब पिलाने वाला, यहां गुरु से मुराद है
१६ प्रेम प्याला अथवा आत्मानन्द का प्याला १७ खुशी मनाना
१८ भेदता, भेद दृष्टि १९ आनन्द का हुलास.

२७ गज़ल क़वाली

(१) बठा कर आप पैहलू[1] में हमें आंखें दिखाता है
सुना बैठेंगे हम सच्ची फक़ीरों को सताता है:

(२) अरे दुन्या के बाशन्दो! डरो मत वीम[2] को छोड़ो
यह शीरीं[3] रू तो मिसरी है, भवें नाहक़[4] चढ़ाता है

(३) यह सलवट[5] डालना चेहरे पे गंगा जी से सीखा है
है अन्दर से महा शीतल, यह ऊपर से डराता है

(४) बनावट की जबीं पुर[6] चीन है उलफत[7] से मुलब्ब[8] दिल
बनावट चालबाज़ी से यह क्यों भेरें में लाता है

(५) अगर है ज़र्रः[9] ज़र्रह में बलकि लाखवें जुज़ में
तो जुज्व[10]-ओ-कुल भी सब वह है, दिगर[11] झट उड़
ही जाता है

१ अपने पास २ डर, खौफ ३ मीठे मुंह वाला, मीठे बोल वाला ४ बेफायदा: ५ माथे पर बल, त्यूरी ६ बलवाली पेशानी से भरा हुवा माथा ७ प्रेम ८ लबालब भरा हुवा ९ प्रमाणु, मात्र १० व्यष्टि और समष्टि ११ दूसरा

(६) नगाहे गौर रख क़ायम ज़रा बुर्क़ा[11] को ताके जा
यह बुरक़ा साफ़ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है

(७) तलातुम[12] खेज़ लेहरे हुस्नो[13] खूबी है अहाहाहा
हवास-ओ-होशकी किशती को दम भर में बहाता है

(८) हसीनों[14] ! हुसन-ओ-खूबी है मिरी .ज़ुल्फ़े सियाह[15]
का ज़िल[16]
अबस[17] साया परस्तों का पड़ा दिल तलमलाता है

(९) अरे शोहरत ! अरे रुसवाई[18] ! अरे तोहमत ! अरे अज़मत[19] !
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला छुड़ाता[20] है

११ पर्दा १२ लेहरें मारने वाला १३ सौन्दर्यता का समुद्र १४ सुन्दर पुरुष १५ काली ज़ुल्फ़ १६ साया, प्रतिबिम्ब १७ बे फायदः है १८ बदनामी १९ बज़ुर्गी, बड़ाई २० उन से अलग होना

पंक्तिवारार्थः—

१. राम का शरीर जब ज़रा नासाज़ था तो उस वक़्त अपने (यार) स्वरूप से यूं मुखातब हुवाः—ऐ प्यारे (दुलारे)

अपने समीप बठलाकर हमें आंखें दखलाता है, हम सच्ची कह बैठेंगें, क्या फकीरों को सताता है?

२. ऐ दुन्या के लोगो! मत डरो, खौफ (भय) को छोड़ दो, क्योंकि यह मीठी सूरत वाला मिसरी रूप असल में है मगर भवें वे फायदः चढ़ालीया करता है (अर्थात उपर २ से कोप में आजाता है और वह भी वेफायदा)

३. चेहरे पर वल डालना (त्योरी चढ़ाना) गंगाजी से सीखा है (क्योंकि वैहते समय गंगाके जल पर भंवर पड़ते हैं मगर अन्दर से जल बिलकुल ठंडा होता है ऐसेही यह यार प्यारा) अन्दर से महा शीतल है और ऊपर से डराता है (गंगा की तरह

४. यार की बलों से भरी पेशानी सिर्फ बनावटी है, क्योंकि दिल उस का प्रेम से लबालब भरा हुवा है, मगर मालूम नहीं कि यह बनावटी चालबाज़ी से लोगों को भरें में क्यों ले आता है

५. अगर वह प्रमाणु मात्र में है और उस के लाखवें हिस्से में है, तो व्यष्टि और समष्टि भी वोही सब है, उस के स्वाये अन्य कुछ रह ही नहीं सकता

६. ग़ैर की नज़र बराबर रख कर (इस माया के) पर्दे को

देखते जा, यह पर्दा साफ उड़ जाता है जब प्यारा (यार) नजर आने लगता है

७. अहाहाहा खूबसूरती (सौन्दर्यता) का समुद्र क्या लहरें मार रहा है जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है

८. ऐ खूबसूरतों! (सुन्दर पुरुषो!) (यह याद रखो) तुम्हारी खूबसूरती जो है वह मेरी काली .ज़ुल्फ (माया) ही का सिर्फ साया है परछायीं (साया) को पूजने वालों का (साया पर .आशक़ होने वालों का) दिल बेफायदा: तलमलाता (टम-टमाता) है

९. ओ शोहरत! ओ खुवारी (ज़िल्लत)! ओ तोहमत (.ऐब की चुग़ली)! ओ बड़ाई! तुम सब अब लड़ २ के मर जावो, राम तो तुम सब से साफ पल्ला छुड़ाता है (तुम से कना-राकश–अलग–होता है)

---

(२८) ग़ज़ल कैहरवा

(१) वाह वाह कामां[1] रे नौकर मेरा, सुगर सियाना[2] रे

1 काम करने वाला 2 बड़ा .अक़्लमन्द

नौकर मेरा (टेक)

(२) खिद्‌मत करदयां कदे न डरदा, रोज़े अज़ल[3] तों सेवा करदा

लूं लूं[4] दे विच रैहंदा बंरदा[5], हर शै समाना[6] रे नोकर मेरा ॥ वाह वाह० १

(३) जद मौलां[7] मौला पर्न छडदा, नौकर नखरे टखरे फड़दा

फिर भी टैहल ओह पूरी करदा, हर नाच नचानारे नौकर मेरा ॥ वाह वाह० २

(४) बादशाही छड अर्दल[11] मल्ली, पर यह शाह कोलों कद चल्ली

नौकर नूं उठ चौरी झल्ली[12], हाय वींवां[13] राना रानारे नौकर

३ अनादि काल से ४ रोम रोम में ५ नौकर ६ हर वस्तू में समाने वाला, सर्व्यापक ७ ईश्वर ८ खुदाई, ऐश्वर्य ९ सेवा १० हर नाच नाचने वाला और नचाने वाला ११ चपड़ास १२ चंवर करा १३ भोला भाला, नेक

मेरा ॥ वाह वाह० ३

(५) वे समझी दा झगड़ा पाया, नौकर तों इतबॉर[14] उठाया। विच दलीलां वक़्त गंवाया, विन्नेहे[15] ग़ज़ब निशाना रे नौकर मेरा ॥ वाह वाह ४

(६) लाया अपने घर विच डेरा, राम अकेला सूरज जेड़ा नूर जलॉल[16] है नौकर मेरा, दिगॅर[17] न जाना रे नौकर मेरा

सुघड़ सियाना रे नौकर मेरा, वाह वाह कामां रे नौकर मेरा ॥ ५ ॥

१४ निश्चय, यक़ीन १५ छेदे, वेधे १६ तेज़ प्रकाश १७ अन्य, दूसरा

यह कविता पंजाबी भाषा में है इस में राम महाराज ईश्वर को नौकर का खताब देकर पुरुष को उपदेश कर रहे हैं

१. वाहवाह काम करने वाले नौकर मेरे, शाबाश ! वाह रे दाना नौकर मेरे शाबाश !

२. क्योंकि मेरा नौकर (ईश्वर) सेवा करने से कभी भी नहीं डरता है और अनादि काल से सेवा करता चला आता है और (वह ऐसा नौकर है कि) मेरे रोम रोम में वसता है और सर्व वस्तु में रम रहा है

३. जब यह पुरुष अपने ऐश्वर्य असली स्वरूप (मैं ही आत्मा, ब्रह्म हूं), आत्मक दृष्टि छोड़ता है तो ईश्वर रूपी नौकर भी उस समय नखरे टखरे करने लग पड़ता है, मगर तौ भी सेवा वह (नौकर) पूरी करता है. वाह वाह ! हर तरह के नाच नचाने वाला (काम करने वाला) मेरा नौकर है

४. जब यह अद्वैत आत्मक दृष्टि छोड कर द्वैत दृष्टि (मैं पापी, मैं पापी जीव वाली दृष्टि) पकड़ी, अर्थात ईश्वरपना छोड कर उसकी चपरास इखत्यार करी और बजाये उस से सेवा कराने के उस की खुद सेवा करनी शुरू की (उसे चंवर करना शुरू कीया) तो यह शाह (सर्व के मालक पुरुष) से कब तक बरदाशत होसकती थी (आखर नौकर (ईश्वर) उस को चोटे दे दे कर उस से यह खराब दृष्टि छुड़ा देता है) इस वास्ते मेरा यह नौकर (ईश्वर) बड़ा लायक़मन्द है

५. जो पुरुष अपने नौकर (ईश्वर) पर अपना .इतबार (निश्चय)

नहीं रखता वह बेवकूफी से उलट अपने घर में झगड़ा डाल देता है और मुफत में तरह तरह की दलीलों में समय खो देता है, अरे प्यारे! मेरा नौकर तो हर काम में ग़ज़ब का निशाना लगाता है.

६. राम बादशाह ने जो अकेला सूरज है जब अपने असली (स्वस्वरूप) घर में स्थिती की तो अपना स्वयं प्रकाश ही नौकर पाया, अन्य कोई नौकर नज़र न आया.

वह मेरा नौकर क्या दाना है वाह वाह काम करने वाले ये नौकर मेरे!

---

(२१) रागनी जै जै वन्ती ताल चाचर

उड़ा रहा हूं मैं रंग भर भर, तरह २ की यह सारी दुन्या
चेः[1] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो ली[2] यह सारी दुन्या

मैं सांस लेता हूं रंग खुलते हैं, चाहूं दम में अभी उड़ा दूं
अजब तमाशा है रंग रलियां, है खेल जादू यह सारी दुन्या
पड़ा हूं मस्ती में ग़र्क़ो बेखुद, न ग़ैर[3] आया चला न ठेहरा

१ क्या २ हो गयी, खतम हो गयी ३ दूसरा, अन्य

नशे में खर्राटा सा लीया था, जो शोर वर्पा है सारी दुन्या
भरी है खूबी हर एक खराबी में, ज़र्रह ज़र्रह है मिहॅर आसा
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं, यह ख्वाब चोखा है सारी दुन्या
लफाफा देखा जो लम्बा चौरा, हुवा तहय्यॅर, कि क्या ही होगा
जो फाड़ देखा, ओहो! कहूं क्या? हूई ही कब थी यह सारी दुन्या
यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरु न इस का, खतम न हो यह
जो सच पूछो! है राँम ही राम॥ यह मैईज़ धोखा है सारी दुन्या

४ सूरज जैसा ५ अजीब, अश्चर्य ६ हैरानी ७ राम कवि के नाम से मुराद है ८ सिर्फ

---

(३०) होरी राग कालड़्गड़ा ताल दीपचंदी

रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई। अचरज लखियो न जाई
असत सत कर दिखलाई ॥ रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने
मचाई (टेक)

एक समय श्रीकृष्ण के मन में, होरी खेलिन की आई
एक से होरी मचे नही कबहुं, यातें करूं बहुताई
यही प्रभु ने ठैहराई॥ रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥१॥
पांच भूत की धातु मिला कर, अंड पचकारी बनाई
चौदः भुवन रंग भीतर भरकर, नाना रूप धराई
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई २
पांच विषय की गुलाल बनाकर, बीच ब्रह्मांड उडाई
जिस जिस नैन गुलाल पडी, उसकी सुध बुध बिसराई
नहीं सूझंत अपनाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥३॥
वेद अंत अंजन की सिलाखा, जिस ने नैन में पाई

१ अपना आप, अपना स्वरूप २ सीख, सलाई

तिस का ही ठीक तमै नाश्यो, सूझ पड़ी अपनाई
होरी कछु बनी न बनाई, रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने
मचाई

३ अन्धकार